Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

श्रीः ।

श्रीमहामत्तकसामन्ताधिपति-रामदत्त-विरचिता

दशकर्मपद्धतिः ।

श्रीकान्यकुब्जवंशावतंसमुरादाबादनिवासि-स्वर्गीय-सुखानन्दसूरिसूनुपण्डित-कन्हैयालालमिश्रकृत-

भाषाटीकासहिता ।

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,

मालिक-" लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर " स्टीम्-प्रेस,

कल्याण-बंबई.

संवत् १९९४, शके १८५९.

1937.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मुद्रक और प्रकाशक–

गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास,

मालिक–" लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर " स्टीम्–प्रेस, कल्याण–बम्बई.

सन् १८६७ आक्ट २५के बमुजब रजिष्टरी सब हक
प्रकाशकने अपने आधीन रखा है।

पं० प्रेम दत्त शास्त्री
जहांगीराबाद २०२३९४
बुलन्दशहर (उ०प्र०)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्रस्तावना ।

प्रिय पाठकवृन्द !

हमारा यह प्यारा भारतवर्ष आजतक सम्पूर्ण देशोंकी अपेक्षा सबही बातोंमें चढा बढा हुआ रहा था । यहांके दानवीर कर्ण, महाराज प्रातःस्मरणीय हरिश्चन्द्र, युद्धवीर अर्जुन, धर्मवीर महाराज युधिष्ठिर, महर्षि जैमिनि, मुनिवर भगवान् कृष्णद्वैपायन, श्रीवेदव्यासजी, कपिल तथा कणाद इत्यादि इसी भारत माताके लाल थे कि, जिनके चरित्र तथा ग्रन्थोंको अवलोकन करनेसे मनुष्य संसारसागरसे तर जाते हैं। इसका कारण एकमात्र संस्कार है । 'संस्कार' शब्दका अर्थ सुधार है जिस प्रकार हीरा पाषाणकी आकर (खानि) से निकलकर शानके संस्कारहीसे मूल्यवान् होता है इसी प्रकार मनुष्य संस्कारसेही द्विजाति होता है । जैसा कि– मनुजी महाराजने कहा है–'जन्मना जायते शूद्रः संस्काराद्विज उच्यते' अर्थात् जन्मसे मनुष्य शूद्र होता है किन्तु संस्कारसे द्विज कहलाता है. जन्मसे लेकर मृत्युपर्यन्त सोलह संस्कार होते हैं ।

यथा–गर्भाधान १, पुंसवन २, सीमन्तोन्नयन ३, जातकर्म ४, नामकर्म ५, निष्क्रमण ६, अन्नप्राशन ७, चूडाकर्म ८, कर्णवेध ९, उपनयन १०, वेदारंभ ११, समावर्त्तन १२, विवाह १३, चतुर्थीकर्म १४, मृतक १५, षोडश (दशाह) १६ ।

अब सब द्विजातिमात्रको चाहिये कि, इन संस्कारोंको करके ऐहिक और पारमार्थिक फल प्राप्त करें. कारण कि, इन्हीं वैदिक संस्कारोंके करनेपर द्विज ब्राह्मण और विप्र पदवियोंको प्राप्त किया जाता है । अनाचाररहित व वैदिक कर्म करनेसे और ब्राह्मणी व क्षत्रियाणी तथा वैश्याकी योनिमें जन्मा हुआही ब्राह्मण, क्षत्रिय व वैश्य होता है, अतएव सब किसीको अत्यन्त भक्तिसहित वेदोक्त संस्कार अवश्य करना चाहिये और इसीलिये सब ऋषि मुनि ब्राह्मण मा विद्वान् पुरुष तथा स्त्री आजतक इन संस्कारोंको परम श्रद्धासे पति ने और करते चले आये हैं ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मेरी बहुत दिनोंसे इच्छा थी कि, कोई संस्कार विषयका उत्तम पुस्तक रचा जाय जिससे मनुष्य अपने वेदोक्त संस्कार करके उत्तम फलके भागी बने—इसी बीचमें विद्याप्रचारनिरत अखण्ड-प्रतापशाली श्रीवेंकटेश्वर स्टीम् यन्त्रालयाध्यक्ष मुम्बईनिवासी श्रीमान् सेठ खेमराज श्रीकृष्णदासजी महोदयकी आज्ञा मिली कि, आप 'दशकर्मपद्धति' भाषानुवाद कर दीजिये हम छापेंगे। उक्त महोदयकी आज्ञा पातेही मैंने शीघ्रतासे इसका भाषान्तर करके सर्वसत्व सहित श्रीमान् सेठजीको समर्पण कर दिया है।

आशा है कि, यदि इस पुस्तकके द्वारा आपको कुछ भी लाभ पहुँचा तो मैं अपने परिश्रमको सफल समझूँगा। पं०कन्हैयालालमिश्र.

समर्पणपत्रम्।

श्रीमान्!

अखण्ड प्रतापशाली दयादाक्षिण्यादि अनेक विशेषणविशिष्ट गौ ब्राह्मण प्रतिपालक परमोदारप्रकृति क्षत्रियवंशावतंस १०८ श्रीमन्महाराजा उदयराज-सिंहजू देवबहादुर काशीपुर स्टेट जिला नैनीताल करकमलेषु।

मान्य महोदय! हिन्दूधर्म ग्रन्थोंमें जैसी रुचि और श्रद्धा आपकी है वैसी अन्य किसीमें दिखाई नहीं देती, आपने अपने स्टेटमें शतशः लोकोपकारी कार्य करके अपनी प्रजा और ब्रिटिश गवर्नमेन्टसे विशेष सन्मान प्राप्त किया है। गौ और ब्राह्मणोंकी रक्षा करनेमें आप निरन्तर यत्नवान् रहते हैं। आपके उप-रोक्त गुणोंसे मोहित होकर मैं भी अपनी इस लघुकाय पुस्तक 'दशकर्म-पद्धति' को श्रीमान्के कोमल करपल्लवमें अत्यन्त भक्ति तथा आदरके सहित समर्पण करता हूँ, आशा है श्रीमान् इस भेंटको सुदामाके तन्दुलकी समान उदारतापूर्वक स्वीकार करके मुझे अनुगृहीत करेंगे। इति।

विनीत निवेदक—
पण्डित कन्हैयालाल मिश्र,
मोहल्ला दीनदारपुरा,
मुरादाबाद (यू. पी

पं० प्रेम दत्त शास्त्री
जहांगीराबाद २०२३६४
बुलन्दशहर (उ०प्र०)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

श्रीगणेशाय नमः ।

अथ

दशकर्मपद्धतिः ।

भाषाटीकासहिता ।

तत्रादौ गर्भाधानम् ॥ १ ॥

तत्र ऋतुस्नाता वधूः चतुर्थदिने प्रातस्तूष्णीमादित्यमुपतिष्ठेत । ततस्तद्दिने मातृपूजाभ्युदयिके कृत्वा षोडशरात्रादर्वाक् शुभरात्रौ दक्षिणकरेण पतिर्वध्वा उपस्थ-

---

मङ्गलाचरण ।

अखण्डमैश्वर्ययुतं परेशं विघ्नाटवीध्वंसनमेकमाग्निम् ।
गजाननं तं मनसा प्रणम्य करोमि भाषां दशकर्मपद्धतेः ॥

यतोऽभूज्जन्मादिः सततमपरोक्षस्य जगतः
परोक्षत्वं तस्मिन् गतवति च कस्तत्र विलयः ।
कृतातः सा भूम्नो बुधजनविकासाय विदुषा
कन्हैयालालेन श्रियमियमपारं दिशतु वः ॥

दोहा ।

विघ्न विनाशन गजवदन, नाशनहार कलेश ।
कृपा कीजिये दास पहँ, दाता सिद्धि गणेश ॥
कर्मदेव पद वन्दि पुनि, गुरुको शीश नवाय ।
लिखत पद्धती कर्मकी, कीजिये आय सहाय ॥

जहांगीराबाद २०२३९४
बुलन्दशहर (उ०प्र०)

अब गर्भाधानसंस्कार लिखाजाता है । तहां चौथे दिन ऋतुस्नान करके स्त्री प्रातःकाल मौनव्रतधारणपूर्वक सूर्यके सम्मुख हाथ जोडकर खडी हो जाय । फिर उसी दिन षोडश मातृकाओंकी पूजा और नान्दीमुख श्राद्ध करके उस स्त्रीका पति सोलह दिनसे पहले किसी शुभ रात्रिमें दाहिने हाथसे अपनी

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मभिस्पृश्य जपति-ॐ पूषा भगꣳसविता मे ददातु रुद्रः कल्पयतु ललामगुम्। विष्णुर्योनिं कल्पयतु त्वष्टा रूपाणि पिꣳशतु। आसिंचतु प्रजापतिर्धाता गर्भं दधातु ते॥ इति मन्त्रेण। अथ प्राङ्मुख उपविष्ट उदङ्मुखो वा एतामभिमन्त्रयेदनेन-ॐ गर्भं धेहि सिनीवालि गर्भं धेहि पृथुष्टुके। गर्भं ते अश्विनौ देवावाधत्तां पुष्करस्रजा॥ इति मन्त्रेण। ततः ॐ रेतो मूत्रं विजहाति योनिं प्रविशदिन्द्रियम्। गर्भो जरायुणाऽऽवृत उल्बं जहाति जन्मना॥ इति मन्त्रेण रेतःस्रावणम्। अथ तस्या हृदयमालभेत-ॐ यत्ते सुसीमे हृदयं दिवि चन्द्रमसि श्रितम्।

स्त्रीके योनिप्रदेशको स्पर्श करे और (उस काल) इस आगे लिखे मन्त्रको जपे। मन्त्र यथा-ॐ पूषा भगꣳसविता मे ददातु रुद्रः कल्पयतु ललामगुम्। विष्णुर्योनिं कल्पयतु त्वष्टा रूपाणि पिꣳशतु। आसिंचतु प्रजापतिर्धाता गर्भं दधातु ते॥ इसके उपरान्त पूर्व अथवा उत्तरको मुख कियेहुए पति इस अपनी पत्नीको निम्न लिखित मन्त्रसे अभिमन्त्रित करे। मन्त्र यथा-ॐ गर्भं धेहि सिनीवालि गर्भं धेहि पृथुष्टुके। गर्भं ते अश्विनौ देवावाधत्तां पुष्करस्रजा॥ फिर आगे लिखे मन्त्रसे वीर्य दान करना चाहिये। ॐ रेतो मूत्रं विजहाति योनिं प्रविशदिंद्रियम्। गर्भो जरायुणाऽऽवृत उल्बं जहाति जन्मना॥ अनन्तर उसके हृदयमें हाथ रखकर यह आगे लिखा हुआ मन्त्र उच्चारण करना चाहिये। मन्त्र यथा-ॐ यत्ते सुसीमे हृदयं दिवि चन्द्र-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वेदाहं तन्मां तद्विद्यात्पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतꣳ शृणुयाम शरदः शतम् ॥ इति मन्त्रेण। ततः स्वस्थो हृष्टमनाः हृद्देशे प्रसन्नामनातुरां कामयमानामभग्नशय्यायां प्रदोषादूर्ध्वं स्त्रियमभिगच्छेत्। सा यदि गर्भं न दधाति तदा पतिः कृतोपवासः पुष्यनक्षत्रे श्वेतकण्टकारिकामूलमुत्पाट्योदकेन पिष्ट्वा वधूदक्षिणनासापुटे तद्रसं दद्यात् अनेनैव मन्त्रेण—ॐ इयमोषधी त्रायमाणा सहमाना सरस्वती। अस्या अहं बृहत्याः पुत्रः पितुरिव नाम जग्रभम् ॥ इति ॥ इति गर्भाधानम् ॥१॥

मासि श्रितम्। वेदाहं तन्मां तद्विद्यात्पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतꣳ शृणुयाम शरदः शतम् ॥ अनंतर स्वस्थ अथ च प्रसन्न मन होता हुआ पति प्रसन्न हृदयवाली, उद्वेगरहित, पतिकी इच्छा करती हुई स्त्रीको उत्तम शय्यापर दो घडी रात जानेके पीछे वीर्यदान करे। यदि कदाचित् वह स्त्री गर्भ धारण नहीं करे तो उसका पति उपवासी होकर पुष्यनक्षत्रके दिन सफेद रंगवाली कटेरीकी जडको उखाड लावे और उसको जलके साथ पीसकर रस स्त्रीकी नासिकाके दाहिने स्वरसे सुँघावे और सुँघानेके समय इस नीचे लिखे मंत्रका पाठ करे। ॐ इयमोषधी त्रायमाणा सहमाना सरस्वती। अस्या अहं बृहत्याः पुत्रः पितुरिव नाम जग्रभम् ॥ इति ॥

इति श्रीकान्यकुब्जवंशावतंसमुरादाबादनिवासि—स्वर्गीयमिश्रसुखानन्दसूरिसूनु—पण्डितकन्हैयालालमिश्रकृतभाषाटीकायां गर्भाधानसंस्कारः समाप्तः ॥ १ ॥

पं० ... शास्त्री
जहांगीराबाद २०२३९४
बुलन्दशहर (उ०प्र०)
CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अथ पुंसवनम् ॥ २ ॥

तच्च गर्भमासापेक्षया द्वितीयतृतीययोरन्यतरस्मिन्करणीयम् । पुष्यपुनर्वसुमृगशिरोहस्तमूलश्रवणान्यतमपुन्नामनक्षत्रयुतोभयचन्द्रतारानुकूलदिवसमवगत्य ततःपूर्वदिने वधूमुपवासं कारयित्वा अग्रिमदिने तस्याः स्नातायाः अहतवासोयुगपरिधानानन्तरं शुचिः स्नातः कृताचमनो मातृपूजाभ्युदयिकादि कृत्वा वटप्ररोहं वटशुङ्गांश्च आचारात्कुशकंटकमपि शिशिरेण जलेन पिष्ट्वा वधूदक्षिणनासापुटे तद्रसं दद्यात् । ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य

अब पुंसवनसंस्कार कहा जाता है । गर्भके महीनेमें दूसरे या तीसरे महीनेमें पुष्य, पुनर्वसु, मृगशिरा, हस्त, मूल और श्रवण इन नक्षत्रोंमेंसे कोई पुँल्लिंग नक्षत्र जिस दिन हो तथा चंद्र और तारा भी जिस दिन अनुकूल हो ऐसे दिनके मिलजानेपर (पति) उससे एक दिन पहले स्त्रीको उपवास (व्रत) करावे । दूसरे दिन स्त्री स्नान करके दो नवीन वस्त्र धारण करे । फिर उसका पति पवित्रतापूर्वक स्नान करके आसनपर बैठ आचमन करे । तत्पश्चात् षोडशमातृकाओंका पूजन और नान्दीमुख श्राद्ध करके बडका एक नूतन (कोमल) पत्ता कि, जिसकी डंडीमें दोनों तरफ फल लग रहे हों तोडकर लावे तथा कुशकी जड लावे और फिर इन दोनों पदार्थोंको शीतल जल द्वारा पीस और उनका रस निकालकर स्त्रीकी नासिकाके दाहिने स्वरसे सुँघावे और उस काल आगे लिखे दोनों मंत्रोंको उच्चारण करना चाहिये । मंत्र यथा—ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जातः पतिरेक आसीत्। स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥ १ ॥ ॐ अद्भ्यः संभृतः पृथिव्यै रसाच्च विश्वकर्मणः समवर्त्तताग्रे। तस्य त्वष्टा विदधद्रूपमेति तन्मर्त्यस्य देवत्वमाजानमग्रे। इति मन्त्राभ्याम् ॥ इति पुंसवनम् ॥ २ ॥

अथ सीमन्तोन्नयनम् ॥ ३ ॥

तत्र गर्भमासापेक्षया षष्ठेऽष्टमे वा पुन्नामनक्षत्रयुते चन्द्रतारानुकूलविहितदिने मातृपूजाभ्युदयिकादि कृत्वा बहिः शालायां कुशकण्डिकां कुर्यात्। तत्र क्रमः—कुशत्रयेण हस्तपरिमितचतुरस्रभूमिं परिसमूह्य कुशानैशान्यां

पतिरेक आसीत्। स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥ ॐ अद्भ्यः संभृतः पृथिव्यै रसाच्च विश्वकर्मणः समवर्त्तताग्रे। तस्य त्वष्टा विदधद्रूपमेति तन्मर्त्यस्य देवत्वमाजानमग्रे ॥

इति श्रीकान्यकुब्जवंशावतंसमुरादाबादनिवासि-स्वर्गीयमिश्रसुखानंदसूरिसूनु—पंडितकन्हैयालालमिश्रकृतभाषाटीकायां पुंसवनसंस्कारः समाप्तः ॥ २ ॥

अब सीमन्तोन्नयनसंस्कार कहा जाता है। गर्भके महीनेसे छठे या आठवें महीनेमें (पुरुष) पूर्वलिखित पुंनक्षत्रयुक्त और चन्द्र तथा ताराके अनुकूलवाले दिनमें पहले षोडशमातृकाओंकी पूजा और नान्दीमुखश्राद्ध करके बाहर शाला (मण्डप)में आकार कुशकण्डिका करे। उसका क्रम यथा—एक हाथकी

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

निक्षिप्य गोमयोदकेनोपलिप्य स्रुवमूलेन स्फ्येन वोत्तरतस्त्रिरुल्लिख्योल्लेखनक्रमेणानामिकांगुष्ठाभ्यां मृदमुद्धृत्य वारिणा तं देशमभिषिच्य कांस्यपात्रेणाग्निमादाय तत्प्रत्यङ्मुखं निदध्यात् । ततो ब्राह्मणवरणम्—ॐ अद्यकर्त्तव्यसीमन्तोन्नयनहोमकर्मणि कृताकृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्म कर्तुममुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणमेभिः पुष्पचन्दनताम्बूलवासोभिर्ब्रह्मत्वेन त्वामहं वृणे । ॐ वृतोऽस्मीति प्रतिवचनम् । ॐ यथाविहितं कर्म कुर्विति होत्राऽभिहिते

बराबर लम्बी चौडी (चौकोन) वेदी बनाकर उसको तीन कुशाओंसे बुहारे फिर उन तीनों कुशाओंको ईशानकोनमें फेंक देवे और गोबर तथा जल मिलाकर वेदीको छिडके फिर स्रुवेके पिछले भागद्वारा स्फ्य यज्ञपात्रसे प्रादेशमात्र तीन लम्बी रेखा खैंचे और उन रेखाओंमेंसे अनामिका तथा अंगुष्ठ इन दो अँगुलियोंसे रेखा खैंचनेके क्रमसे मट्टी लेकर ईशानकोनमें फेंक देवे फिर वेदीके ऊपर जल छिडकाना चाहिये । अनन्तर काँसीके पात्रमें अग्निको लेकर उसको पश्चिमाभिमुख वा उत्तराभिमुख स्थापन करे फिर ब्रह्मा (ब्राह्मण) का वरण करे और पुष्प, चंदन, पानादि वरणकी सामग्री हाथमें लेकर नीचे लिखी संस्कृत वाक्यका पाठ करके उस ब्रह्माको प्रदान करे "ॐ अद्य कर्त्तव्यसीमन्तोन्नयनहोमकर्मणि कृताकृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्म कर्तुममुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणमेभिः पुष्पचन्दनताम्बूलवासोभिर्ब्रह्मत्वेन त्वामहं वृणे" तब ब्रह्मा उस सामग्रीको अपने हाथमें लेकर 'वृतोऽस्मि' उच्चारण करे फिर यजमान 'यथाविहितं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ॐ करवाणीति प्रतिवचनानन्तरमग्नेर्दक्षिणतः शुद्धमासनं दत्त्वा तदुपरि प्रागग्रान्कुशानास्तीर्यास्मिन्सीमन्तोन्नयनहोमकर्मणि त्वं मे ब्रह्मा भवेत्यभिधाय ॐ भवानीति तेनोक्ते अग्निप्रदक्षिणं कारयित्वा ब्रह्माणं तत्रोपवेश्य प्रणीतापात्रं पुरतः कृत्वा जलेनापूर्य कुशैराच्छाद्य ब्रह्मणो मुखमवलोक्याग्नेरुत्तरतः कुशोपरि निदध्यात् ॥ ततः परिस्तरणम्—बर्हिषश्चतुर्थभागमादायाग्नेयादीशानान्तं ब्रह्मणोऽग्निपर्यन्तं नैर्ऋत्याद्वायव्यान्तम् अग्नितः

कर्म कुरु' ऐसा कहे और इसके उत्तरमें ब्रह्मा 'ॐ करवाणि' कहे। इसके पश्चात् वेदीसे दक्षिणकी ओर शुद्ध आसन बिछावे और उसके ऊपर पूर्वकी ओर अग्रभागवाले तीन कुशा रखकर यजमानको आगे लिखी संस्कृतका पाठ करना चाहिये। यथा 'अस्मिन् सीमन्तोन्नयनहोमकर्मणि त्वं मे ब्रह्मा भव' अर्थात् इस सीमन्तोन्नयनहोमकर्ममें आप मेरे ब्रह्मा हूजिये। इस प्रकार कहे। तब ब्रह्माके 'ॐ भवानि' ऐसा कहनेपर अग्निकी परिक्रमा कराय यजमान उस पूर्वरचित आसनपर ब्रह्माको बैठाल देवे। फिर यजमान प्रणीतापात्रको आगे रखकर जलसे भरदेवे और उसको कुशाओंसे ढककर तथा ब्रह्माका मुख देखकर अग्निके उत्तरकी तरफ कुशाओंके ऊपर रख देवे। इसके पीछे परिस्तरण करना चाहिये। उसका क्रम यह है—मुट्ठीभर अथवा एक सौ कुश ग्रहण करके उसके चार भाग करे। पहला भाग अग्निकोनसे ईशानकोनतक, दूसरा भाग ब्रह्माके स्थानसे वेदी-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्रणीतापर्यन्तं ततोऽग्नेरुत्तरतः पश्चिमादिशि पवित्रच्छेदनार्थं कुशत्रयं पवित्रकरणार्थं साग्रमनंतर्गर्भकुशपत्रद्वयं प्रोक्षणीपात्रमाज्यस्थाली चरुस्थाली संमार्जनकुशा उपयमनकुशाः प्रादेशमितपालाशसमिधस्तिस्रः स्रुवः आज्यं षट्पञ्चाशदुत्तरयजमानमुष्टिशतद्वयावच्छिन्नतण्डुलपूर्णपात्रं तिलमुद्गमिश्रास्तंडुलाः पूर्णपात्रम् एतानि पवित्रच्छेदनकुशानां पूर्वपूर्वदिशि क्रमेणासादनीयानि, तदुत्तरतः वीणागाथिनौ, प्रादेशमात्रसाग्राश्वत्थशङ्कुः त्रिश्वेतशल्लकीकण्टकं पीतसूत्रं पूर्णस्तर्कुः दर्भपिंजूलिका-

---

तक, तीसरा भाग नैर्ऋत्यसे वायुकोनतक और चौथा भाग वेदीसे प्रणीतापात्रतक बिछा देना चाहिये । तदनन्तर अग्निके उत्तरभागमें पश्चिम दिशाकी तरफ पवित्र छेदन करनेके निमित्त तीन कुशा रक्खे और पवित्र बनानेके लिये अनन्तर्गर्भ अर्थात् बीचका पत्र निकालकर दो कुश पत्र रक्खे फिर प्रोक्षणीपात्र, आज्यस्थाली, चरुस्थाली, पांच संमार्जनकुशा और तीनसे तेरह तक उपयमनकुशा तथा प्रादेशमात्र तीन समिधा, स्रुवा, घृत, यजमानकी दो सौ छप्पन मुट्ठी चावल और तिल मूंगसे भराहुआ पूर्णपात्र इन सब वस्तुओंको पवित्र छेदन कुशाओंके आगे २ क्रमसे रख देवे । उनके आगे वीणाके बजानेवाले दो गायकोंको बैठाल देवे । वहां प्रादेशमात्र अग्रभागसहित पीपलकाष्ठकी कील तथा सेई (जंगलका सूअर) का कांटा और पीला सूत लपेटकर (एक) तकुआ तथा कुशाओंकी तीन

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

त्रयमुदुंबरयुग्मफलसुवर्णघटितदेवकर्करादियुक्तसूत्रदोरकपुष्पबिल्वादिफलयुतवाराष्टतयादि अन्यद्यथाचारपरिप्राप्तद्रव्यमासादनीयम् । ततः पवित्रच्छेदनार्थकुशैः प्रादेशमितपवित्रे छित्त्वा सपवित्रपाणिना प्रणीतोदकं त्रिः प्रोक्षणीपात्रे कृत्वा अनामिकांगुष्ठाभ्यामुत्तराग्रे पवित्रे गृहीत्वा त्रिरुद्दिङ्गनं प्रणीतोदकेन प्रोक्षणीप्रोक्षणं ततः प्रोक्षणीजलेन यथासादितद्रव्यसेचनं ततोऽ-

---

पिञ्जूलिका[1] बनाकर स्थापन करे । फिर गूलरके नवीन पत्तेकी डाली कि जिसके दोनों तरफ फल लगे हों और सुवर्णके तारयुक्त सूत्र अर्थात् डोरा पुष्प तथा बिल्वफलसहित अन्यान्य मांगलिक पदार्थ जो कि मंगलकार्योंमें होते हैं स्थापन करे। फिर पवित्रच्छेदनार्थ जो पहले तीन कुशा रक्खी गई हैं उनसे पवित्र बनानेके निमित्त जो अनन्तर्गर्भ कुशपत्र रक्खे गये हैं तिनके अग्रभागको प्रादेशप्रमाण छेदन करे और फिर उन पवित्रोंको हाथमें लेकर प्रणीतापात्रके जलको प्रोक्षणीपात्रमें तीन वार सेचन करे। फिर अनामिका और अंगुष्ठ इन दो अंगुलियोंसे पवित्रके अग्रभागको आगे करके पकडे और उन पवित्रोंसे तीन बार प्रणीतापात्रके जलको चलावे पीछे प्रणीतापात्रके जलमें उन्हीं पवित्रोंको डुबोकर प्रोक्षणीपात्रमें सेचन करे, तत्पश्चात् प्रोक्षणीके जलसे उन्हीं पवित्रों द्वारा पूर्वमें स्थापन करी हुई सब वस्तुओंको प्रोक्षण

---

१ तेरह कुशाओंको कलावेसे लपेटनेपर एक पिंजूलिका होती है । ऐसी तीन पिंजूलिका स्थापन करनी चाहिये।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

न्निप्रणीतयोर्मध्ये प्रोक्षणीपात्रनिधानं ततः आज्यस्थाल्या-माज्यनिर्वापः। चरौ तु तिलतंडुलमुद्गानां प्रणीतोदकेन त्रिः प्रक्षालनं तत्र किञ्चिज्जलं दत्त्वा प्रक्षेपः। ततः स्वयं चरुं गृहीत्वा ब्रह्मणा चाज्यं ग्राहयित्वा वह्नेरुत्तरतश्चरुं दक्षिणतः आज्यं युगपन्निदध्यात्। ततः सिद्धे चरौ ज्वल-त्तृणं प्रदक्षिणं भ्रामयित्वा वह्नौ तत्प्रक्षेपः। ततः स्रुवप्रतपनं त्रिः। ततः संमार्जनकुशानामग्रैरन्तरतो मूलैर्बाह्यतः स्रुवं

(सेचन) करे। फिर अग्नि और प्रणीतापात्रके बीचमें प्रोक्षणी पात्रको रख देना चाहिये। फिर आज्यस्थालीमें घृत डाले और चरु (साकल्य) बनानेके निमित्त तिल चावल तथा मूंग मिलावे और फिर उनको प्रणीतापात्रके जलसे तीन बार धोवे, पीछे किसी एक पात्रमें जल भरकर उसमें वह तिल, चावल तथा मूंग डाल देवे। तिस पीछे यजमान उस चरुपात्रको हाथमें लेकर और ब्रह्मासे घृतको ग्रहण कराकर वेदीस्थित अग्निके उत्तरकी ओर चरुको रक्खे और ब्रह्माके हस्तस्थित घृतको दक्षिणकी ओर स्थापन करा देवे। फिर जिस समय चरु सिद्ध हो जाय अर्थात् पक जाय तब एक तिनकेको बाले और चरुपात्रके चारों तरफ घूमाकर उसको अग्निमें डाल देवे। तदनन्तर स्रुवेको अग्निमें तीन बार तपाना चाहिये। फिर जो पहले संमार्जन-नामक पांच कुशा स्थापन करी गई हैं उनके अग्रभागसे स्रुवेके भीतर और पिछले भागद्वारा स्रुवेके बाहर साफ करे। फिर

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh, Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

संमृज्य प्रणीतोदकेनाभ्युक्ष्य पुनस्त्रिः प्रताप्य दक्षिणतो निदध्यात् । ततः आज्यमग्नितश्चरोः पूर्वेणानीयाग्रे धृत्वा आज्यपश्चिमेन चरुमानीयाज्यस्योत्तरतो निदध्यात् । तत आज्ये प्रोक्षणीवदुत्पवनं।अवेक्ष्य सत्यपद्रव्ये तन्निरसनम्। ततः पूर्ववत्प्रोक्षण्युत्पवनम् ।तत उत्थायोपयमनकुशाना-दाय प्रजापतिं मनसा ध्यात्वा तूष्णीमग्नौ क्षिपेत् समिधो घृताक्ताः।अथोपविश्य सपवित्रप्रोक्षणीजलेनाग्निं प्रदक्षिण-

---

प्रणीतापात्रके जलसे स्रुवेको प्रोक्षण करे । अर्थात् उसपर जल छिडके और फिर तीन बार अग्निमें तपाकर उसको (वेदीके) दक्षिणकी ओर रख देवे । अनन्तर घृतको अग्निमेंसे उठावे और चरुके पूर्वकी ओर लाकर फिर उसको अपने आगे रख देवे । फिर घृतके पश्चिमकी ओरको चरु लाकर घृतको उत्तर दिशामें स्थापन कर देवे । पश्चात् घृतको पूर्व निर्मित पवित्रोंसे कुछेक ऊँचा उछाले और देखे । यदि उसमें कुछ अपद्रव्य अर्थात् मक्खी इत्यादि पडी हो तो उसको निकालकर फेंक देवे । फिर पूर्ववत् प्रोक्षणीपात्रके जलको उछाले । पश्चात् यजमान खडा होकर बाँये हाथमें उपयमन नामवाली तीनसे तेरहतक जो कुशा पहिले कही गई हैं उनको ग्रहणपूर्वक मनमें प्रजापतिका ध्यान करता हुआ पूर्वस्थापित तीन समिधाओंको घृतमें भिगोकर स्वाहा उच्चारण पूर्वक चुपचाप अग्निमें डाल देवे । इसके पीछे यजमान आसनमें बैठकर पवित्रों सहित प्रोक्षणीके जलको

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

क्रमेण पर्युक्ष्य प्रणीतापात्रे पवित्रे धृत्वा ब्रह्मणाऽन्वारब्धः पातितदक्षिणजानुर्जुहुयात् । तत आहुतिचतुष्टये प्रत्याहुत्यनन्तरं हुतशेषस्य घृतस्य प्रोक्षणीपात्रे प्रक्षेपः । ततः समिद्धतमेऽग्नौ ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये० । इति मनसा । ॐ इन्द्राय स्वाहा इदमिन्द्राय० । इत्याघारौ ॥ ॐ अग्नये स्वाहा इदमग्नये० । ॐ सोमाय स्वाहा इदं सोमाय० । इत्याज्यभागौ ॥ ततोऽन्वारब्धः स्थालीपाकेन होमः—ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये० ।

हाथमें लेकर अग्निके चारों ओर छिडके और फिर उन पवित्रोंको प्रणीतापात्रमें रखदेवे पश्चात् यजमान ब्रह्मासे मिलकर और दाहिने घुटुएको नवायकर प्रज्वलित अग्निमें हवन करे । यहाँ घृतकी चार आहुति दी जाती हैं । उनमें एक एक आहुति देनेके अनन्तर स्रुवेमें शेष रहे हुए घृतको प्रोक्षणीपात्रमें डालते जाना चाहियें । यथा—ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये० । इति मनसा । ॐ इन्द्राय स्वाहा इदं इन्द्राय० । इत्याघारौ । ॐ अग्नये स्वाहा इदमग्नये० । ॐ सोमाय स्वाहा इदं सोमाय० । इत्याज्यभागौ । फिर घृत मिलाकर स्थालीपाकका अर्थात् पहले जो चरु बनाया गया है उसका होम करे । यहाँ दो आहुति तो ब्रह्मासे युक्त होकर दी जाती हैं और शेष ब्रह्मासे पृथक् होकर दी जाती हैं । इन आहुतियोंमें भी शेषरहा हुआ घृतादि पूर्ववत् प्रोक्षणीपात्रमें डालतेजाना चाहिये । ॐ प्रजा-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

इति मनसा। ततोऽन्वारब्धो जुहुयात्—तत्तदाहुत्यनन्तरं स्रुवावस्थितशेषस्य प्रोक्षण्यां प्रक्षेपः। तत्रैवाज्यस्थाली-पाकाभ्यां स्विष्टकृद्धोमः। ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा इदमग्नये स्विष्टकृते०। ॐ भूः स्वाहा इदमग्नये न मम। ॐ भुवः स्वाहा इदं वायवे०। ॐ स्वः स्वाहा इदं सूर्याय। एता महाव्याहृतयः॥ ॐ त्वन्नो अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडो अव यासिसीष्ठाः। यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषाꣳसि प्रमुमुग्ध्यस्मत्स्वाहा इद-मग्नीवरुणाभ्यां०। ॐ स त्वन्नो अग्नेऽव्वमो भवोती नेदिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टौ। अव यक्ष्व नो वरुणꣳरराणो व्वीहि मृडीकꣳसुहवो न एधि स्वाहा इदमग्नीवरु-णाभ्यां०। ॐ अयाश्चाग्नेस्यनभिशस्तिपाश्च सत्वमि-त्वमया असि। अयानो यज्ञं वहास्ययानो धेहि भेषजꣳ

पयते स्वाहा इदं प्रजापतये०। इति मनसा। ॐ अग्नये स्विष्ट-कृते स्वाहा इदमग्नये स्विष्टकृते०। ॐ भूः स्वाहा इदमग्नये न मम। ॐ भुवः स्वाहा इदं वायवे०। ॐ स्वः स्वाहा इदं सूर्याय०। एता महाव्याहृतयः। ॐ त्वन्नो अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडो अव यासिसीष्ठाः। यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषाꣳसि प्रमुमुग्ध्यस्मत्स्वाहा इदमग्नीवरुणाभ्याम्०। ॐ स त्वन्नो अग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टौ। अव यक्ष्व नो वरुणꣳरराणो वीहि मृडीकꣳसुहवो न एधि स्वाहा इदमग्नीवरुणाभ्याम्०। ॐ अयाश्चाग्नेस्यनभिशस्तिपाश्च सत्वमित्त्वमया असि। अयानो यज्ञं वहास्ययानो धेहि भेषजꣳ

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

स्वाहा इदमग्नये० । ॐ ये ते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता महान्तः । तेभिर्नो अद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा । इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च न मम । ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं विमध्यमꣳ श्रथाय । अथावयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा इदं वरुणाय० । इति सर्वप्रायश्चित्तम् ॥ ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये० इति प्राजापत्यम् । अथ संस्रवप्राशनम् । ततः आचम्य ॐ अद्य सीमन्तोन्नयनहोमकर्मणि कृताकृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्मप्रतिष्ठार्थ-

---

स्वाहा इदमग्नये० । ॐ ये ते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता महान्तः । तेभिर्नो अद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च न मम । ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं विमध्यमꣳ श्रथाय । अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा इदं वरुणाय० । इति सर्वप्रायश्चित्तम् । ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये० । इति प्राजापत्यम् । फिर होमकी समाप्ति होनेपर यजमान संस्रवप्राशन अर्थात् प्रोक्षणीपात्रसे जल लेकर यत्किंचित् पान करे । फिर आचमनपूर्वक पूर्णपात्रका संकल्प करके ब्रह्माको (दक्षिणा) प्रदान कर देवे । संकल्प यथा ' ॐ अद्य सीमन्तोन्नयनहोमकर्मणि कृताकृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्मप्रतिष्ठार्थ-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मिदं पूर्णपात्रं प्रजापतिदैवतममुकगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय ब्रह्मणे दक्षिणां तुभ्यमहं संप्रददे । ॐ स्वस्तीति प्रतिवचनम् । ततो ब्रह्मग्रन्थिविमोकः । ततः ॐ सुमित्रिया न आप ओषधयः सन्तु इति पवित्राभ्यां प्रणीताजलेन शिरः संमृज्य । ॐ दुर्मित्रियास्तस्मै संतु योऽस्मान्द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः इत्यैशान्यां प्रणीतान्युब्जीकरणम् । ततः स्तरणक्रमेण बर्हिरुत्थाप्याज्येनाभिघार्य ॐ देवा गातुविदो गातुं वित्वा गातुमित मनसस्पत इमं देव यज्ञꣳ स्वाहा व्वाते धाः स्वाहा इति मन्त्रेण बर्हिर्होमः ।

मिदं पूर्णपात्रं प्रजापतिदैवतममुकगोत्रायाऽमुकशर्मणे ब्राह्मणाय ब्रह्मणे दक्षिणां तुभ्यमहं सम्प्रददे' तब ब्रह्मा 'स्वस्ति' इस प्रकार कहकर उस पूर्णपात्रको ग्रहण कर लेवे । फिर पवित्रकी ब्रह्मग्रंथिको खोल देना चाहिये । इसके पीछे आगे लिखे मंत्रद्वारा प्रणीतापात्रके जलसे यजमान अपने शिरमें मार्जन करे । मन्त्र यथा—' ॐ सुमित्रिया न आप ओषधयः सन्तु ' इसके उपरान्त ' ॐ दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु योऽस्मान्द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः ' इस मन्त्रसे प्रणीतापात्रको ईशानकोनमें उलटा कर देवे । तदनन्तर पहले बिछाये हुए कुशाओंको क्रमानुसार अर्थात् जिस क्रमसे बिछाये थे उसी क्रमसे उठाकर घृतमें भिगोवे और ' ॐ देवा गातुविदो गातुं वित्वा गातुमित मनसस्पत इमं देव यज्ञꣳ स्वाहा व्वाते धाः स्वाहा ॥' इस मन्त्रद्वारा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ततः पश्चादग्नेर्वधूमहतवाससी परिधाप्य मृद्वासने उपवेशयेत् । ततस्त्रिश्वेतशल्लकीकंटकाश्वत्थशंकुपीततन्तुतर्कु-दर्भपिञ्जूलीत्रितयोदुम्बरफलयुग्मा-न्वितप्रादेशमित शाखाभिर्वर्तुलीकृत्य सीमन्तमूर्द्धनि विनयति ॐ भूर्भुवः स्वः विनयामि इति मन्त्रेण सकृत् । ॐ भूर्विनयामि । ॐ भुवर्विनयामि । ॐ स्वर्विनयामि इति मन्त्रेण वारत्रयम्। ततः उदुम्बरफलयुगलान्वितशल्लकीकण्टकादिपञ्चकं वधूसीमन्तदक्षिणतो वेणीकृत्वा पतिर्बध्नाति-ॐ अयमूर्ज्जावतो वृक्ष उर्ज्जीव फलिनी भव इति मन्त्रेण । तत उदुम्बरफलादिसमन्वितसूत्रदोरकं वधूग्रीवायाम् अनेनैव

अग्निमें स्वाहा उच्चारण करके डालदेवे । पश्चात् नवीन वस्त्र धारण करीहुई गर्भवती स्त्रीको अग्निके पश्चिमकी तरफ कोमल आसनपर बैठाले और फिर सेई (वनसूकर) का कांटा, पीपलकी कीली, पीले डोरेसे लिपटा हुआ तकुआ तथा तीन कुशाओंकी पिंजूलिका और गूलरकी दो फलयुक्त डाली इन पांचों पदार्थोंसे पति अपनी स्त्रीके बालोंको आगे लिखे ' ॐ भूर्भुवः स्वः विनयामि ' इस मन्त्रसे एक वार 'ॐ भूर्विनयामि' ' ॐ भुवर्विनयामि ' 'ॐ स्वर्विनियामि ' इन मन्त्रोंसे तीन वार इकट्ठा करे अनन्तर उन्ही पांचों पदार्थोंद्वारा माँग निकालनेकी रीतिसे आगे लिखे ' ॐ अयमूर्जावतो वृक्ष उर्जीव फलिनी भव ' इस मंत्रसे गूलरके फलादिसहित डोरेको परम्परानुसार वधूके गले या चोटीमें बाँध देवे और फिर सुवर्णरचित तागे

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

क्रमेण वा आचाराद्वध्नीयात्। ततो बिल्वादिसमन्वितं वाराष्टतयेन स्नपनम्। ततः फलपुष्पादिकं नूतनवस्त्रेण बद्धा प्रतीक्ष्य धर्त्तव्यं प्रतिस्नपने स्वामिपठनीयो मन्त्रः ॐ अयमूर्जेति राजानꣳ संगायेतामिति प्रैषानन्तरं—सोम एव नो राजेमा मानुषीः प्रजाः। अविमुक्तचक्र आसीरंस्तीरे तुभ्यमसौ श्रीअमुकदेवी इति गाथां वीणागाथिनौ गायेतामन्यो वा वीरतरः। ततो या ग्रामसन्निहिता नदी तस्या नाम गृह्णीयात्। तत उत्थाय वधूदक्षिणकरेण स्रुव-

अथवा पीले तागेसे वधूकी वेणी बाँध देनी चाहिये। फिर जो बिल्वफलादि मांगलिक पदार्थ कहे हैं उनको जलमें डालकर आठ वार (लोटे अथवा मोलुएसे) पत्नीको स्नान करावे। यहाँ फल पुष्पादि नये वस्त्रमें बाँधे और उनको देखकर अपने निकट रख लेवे प्रत्येक वार स्नानके समय पति आगे लिखे मन्त्रको पढे और उसी समय वीणागायकोंको 'आप किसी राजा अथवा वीरपुरुषके यशको गाओ' ऐसी आज्ञा देवे। स्नानका मन्त्र 'अयमूर्जावतो वृक्ष उर्जीव फलिनी भव' (वीणा गायकोंके गानेका मन्त्र) 'सोम एव नो राजेमा मानुषीः प्रजाः। अविमुक्तचक्र आसीरंस्तीरे तुभ्यमसौ श्रीअमुकदेवी'[1] फिर जिस नगर या ग्राममें यजमानका घर हो उसके समीप बहनेवाली नदीका नाम पत्नीसे उच्चारण करावे फिर पति अपनी स्त्रीके साथ खडा होजाय और पत्नीके दाहिने हाथसे स्रुवेको स्पर्श

१ अमुकदेवीके स्थानमें स्त्रीका नाम लेवे।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

स्पृष्टेन फलपुष्पसमन्वितघृतेन ॐ मूर्द्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत आजातमग्निम् । कविꣳ सम्राज-मतिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयन्त देवाः स्वाहा॥इति मन्त्रेण ॐ पूर्णा दर्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत । वस्नेव विक्रीणाव्वहा इषमूर्जꣳ शतक्रतो स्वाहा॥इत्यनेन च पूर्णा-हुतिं दत्त्वोपविश्य स्रुवेण भस्मानीय दक्षिणकरानामि-काग्रगृहीतभस्मना ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेरिति ललाटे। ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषमिति ग्रीवायाम् । ॐ यद्देवेषु त्र्यायुष-मिति दक्षिणबाहुमूले। ॐतन्नो अस्तु त्र्यायुषमिति हृदि। इति त्र्यायुषं कुर्य्यात् । अनेनैव क्रमेण वध्वा अपि

कराय उस स्रुवेमें घृत, फल, पुष्पस्थापनपूर्वक 'ॐ मूर्द्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत आजातमग्निम् । कविꣳस-म्राजमतिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयन्त देवाः स्वाहा ॥ ॐ पूर्णा दर्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत । वस्नेव विक्रीणाव्वहा इषमूर्जꣳ शतक्रतो स्वाहा' इन मंत्रोंसे पूर्णाहुति करावे । फिर बैठकर स्रुवेमें कुंड (वेदी) की भस्म लगाय दाहिने हाथकी अनामिका अंगुलीसे स्रुवेमें लगी हुई भस्म ग्रहण कर 'ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः' यह कहकर माथेमें, 'ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषं' बोलकर गलेमें, 'ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषं' कहकर दक्षिणबाहुमूलमें और 'ॐ तन्नो अस्तु त्र्यायुषं' ऐसा उच्चारण करके उसको हृदयमें लगाना चाहिये । इसी प्रकार फिर अपनी पत्नीके भी

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

त्र्यायुषं कुर्य्यात्। तत्र तत्ते अस्तु त्र्यायुषं इति विशेषः। ततो ब्राह्मणभोजनम् ॥ इति सीमन्तोन्नयनम् ॥ ३ ॥

अथ जातकर्म ॥ ४ ॥

तत्र प्रथमं शूलवतीमद्भिः परिषिञ्चति--ॐ एजतु दशमास्यो गर्भो जरायुणा सह। यथाऽयं वायुरेजति यथा समुद्र एजति। एवायं दशमास्यो अस्रज्जरायुणा सह ॥ इति मन्त्रेण। ततो वधूसमीपे पतिर्जपति-ॐ अवैतु पृश्नि शेवलꣳ शुने जराय्वत्तवे। नैव माꣳसेन पीवरीं न कस्मिंश्चनायतनमव जरायुपद्यताम् ॥ इति। ततः पुत्रे

त्र्यायुष करे अर्थात् भस्म लगावे। किन्तु पत्नीके भस्म लगाते समय तन्नो अस्तुके स्थानमें 'तत्ते अस्तु' उच्चारण करे और फिर पीछे ब्राह्मणोंको भोजन कराना चाहिये ॥

इति श्रीकान्यकुब्जवंशावतंसमुरादावादनिवासि-स्वर्गीयमिश्र-सुखानन्दसूरिसूनु-पण्डितकन्हैयालालमिश्रकृतभाषा-टीकायां सीमन्तोन्नयनसंस्कारः समाप्तः ॥ ३ ॥

अब जातकर्म संस्कार कहा जाता है। जिस समय प्रसव होनेसे पूर्व स्त्रीको प्रसवकी प्रथम पीडा उपस्थित हो तो उसका पति आगे लिखे 'ॐ एजतु दशमास्यो गर्भो जरायुणा सह। यथाऽयं वायुरेजति यथा समुद्र एजति। एवायं दशमास्यो अस्रज्जरायुणा सह' इस मंत्रसे जलोंसे पत्नीपर अभिषेक। इस मंत्रको पत्नीके समीप जपे-'ॐ अवैतु पृश्नि शेवलꣳ शुने जराय्वत्तवेनैव माꣳसेन पीवरीं न कस्मिंश्चनायतनमव जरायु पद्यताम्'

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जाते नाभिवर्धनीयात् प्राक्कृताभ्युदयिकः कुमारं दक्षिण-करस्यानामिकया स्वर्णान्तर्हितया मधुघृते एकीकृत्य घृतमेव वा प्राशयति ॐ भूस्त्वयि दधामि ॐ भुवस्त्वयि दधामि ॐ स्वस्त्वयि दधामि ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वं त्वयि दधामि इति मन्त्रेण । एतच्च मेधाजननम् । ततः कुमारस्य दक्षिणकर्णे नाभ्यां वा मुखं दत्त्वा ॐ अग्निरायुष्मान्स वनस्पतिभिरायुष्मांस्तेन त्वाऽऽयुषाऽऽयुष्मन्तं करोमि ॥ १ ॥ ॐ सोम आयुष्मान्स ओषधीभिरायुष्मांस्तेन त्वाऽऽयुषाऽऽयुष्मन्तं करोमि ॥२॥ ॐ ब्रह्मायुष्मत्तद्ब्राह्मणैरायुष्मत्तेन त्वाऽऽयुषाऽऽयुष्मंतं करोमि।३।ॐदेवा

तत्पश्चात् पुत्रके उत्पन्न होनेपर नाल काटनेसे पहले नान्दीमुख नामक श्राद्ध करके बालकको सुवर्णकी सलाईसे अनामिका अंगुलिद्वारा शहत और घृतको मिलाकर अथवा केवलमात्र घृतकोही चटावे और इन आगे लिखे हुए मंत्रोंका उस समय उच्चारण करे–' ॐ भूस्त्वयि दधामि ॐ भुवस्त्वयि दधामि ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वं त्वयि दधामि ' एतच्च मेधाजननम् । तिस पीछे (पिता वा आचार्य) कुमारके दाहिने कान अथवा उसकी नाभिके समीप अपना मुख लगाकर आगे लिखे हुए मंत्रोंको तीन वार जपे–ॐ अग्निरायुष्मान्स वनस्पतिभिरायुष्माँस्तेन त्वाऽऽयुषाऽऽयुष्मन्तं करोमि ॥१॥ ॐ सोम आयुष्मान्स ओषधीभिरायुष्माँस्तेन त्वाऽऽयुषाऽऽयुष्मंतं करोमि॥ २॥ॐब्रह्मायुष्मत्तद्ब्राह्मणैरायुष्मत्तेन त्वाऽऽयुषाऽऽयुष्मन्तं करोमि ॥३॥ ॐ देवा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

आयुष्मन्तस्तेऽमृतेनायुष्मन्तस्तेन त्वाऽऽयुषाऽयुष्मन्तं करोमि ॥ ४ ॥ ॐ ऋषय आयुष्मन्तस्ते व्रतैरायुष्मन्तस्तेन त्वायुषायुष्मन्तं करोमि ॥५॥ ॐ पितर आयुष्मन्तस्ते स्वधाभिरायुष्मन्तस्तेन त्वायुषायुष्मन्तं करोमि ॥ ६ ॥ ॐ यज्ञ आयुष्मान्त्स दक्षिणाभिरायुष्मांस्तेन त्वाऽऽयुषाऽऽयुष्मन्तं करोमि ॥७॥ ॐ समुद्र आयुष्मान्स स्रवंतीभिरायुष्माँस्तेन त्वाऽऽयुषायुष्मन्तं करोमि ॥ ८ ॥ इति त्रिर्जपित्वा । ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुषम् यद्देवेषु त्र्यायुषं तन्नो अस्तु त्र्यायुषम् इति त्रिर्जपित्वा । अथ तस्य दीर्घमायुः कामयमानः पुत्रमभिस्पृशन् वाग् जपति । स चायम्—ॐ दिवस्परि प्रथमं जज्ञे

आयुष्मंतस्तेऽमृतेनायुष्मंतस्तेन त्वायुषायुष्मन्तं करोमि ॥ ४ ॥ ॐऋषय आयुष्मंतस्ते व्रतैरायुष्मंतस्तेन त्वायुषायुष्मन्तं करोमि ॥५॥ ॐ पितर आयुष्मंतस्ते स्वधाभिरायुष्मंतस्तेन त्वाऽऽयुषाऽऽयुष्मन्तं करोमि॥६॥ ॐयज्ञ आयुष्मान्त्सदक्षिणाभिरायुष्मांस्तेनत्वायुषायुष्मंतं करोमि॥७॥ ॐ समुद्र आयुष्मान्त्स स्रवंतीभिरायुष्मांस्तेन त्वायुषायुष्मन्तं करोमि ॥ ८ ॥ तत्पश्चात् आगे लिखे हुए 'त्र्यायुषं जमदग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुषं यद्देवेषु त्र्यायुषं तन्नो अस्तु त्र्यायुषम्' मन्त्रको तीन बार जप करे। पिता यदि पुत्रको दीर्घायु होनेकी कामना करे तो फिर पुत्रके शरीरको अपने हाथसे स्पर्श करता हुआ इन आगे लिखे हुए मन्त्रोंको जपे। "ॐ दिवस्परि प्रथमं जज्ञे अग्निरस्मद्द्वितीयं परि जात-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अग्निरस्मद्वितीयं परि जातवेदाः । तृतीयमप्सु नृम्णा अजस्रमिंधान एनं जरते स्वाधीः ॥ १ ॥ ॐ विद्मा ते अग्ने त्रेधा त्रयाणि विद्मा ते धाम बिभृता पुरुत्रा । विद्मा ते नाम परमं गुहा यद्विद्मा तमुत्सं यत आजगंथ ॥ २ ॥ ॐ समुद्रे त्वा नृम्णा अप्स्वन्तर्नृचक्षा ईधे दिवो अग्न ऊधन् । तृतीये त्वा रजसि तस्थिवाꣳसमपामुपस्थे महिषा अवर्द्धन् ॥ ३ ॥ ॐ अक्रंददग्निः स्तनयन्निव द्यौः क्षामा रेरिहद्वीरुधः समञ्जन् । सद्यो जज्ञानो व्विहीमिद्धो अख्यदा रोदसी भानुना भात्यंतः ॥ ४ ॥ ॐ श्रीणामुदारो धरुणो रयीणां मनीषाणां प्रार्पणः सोमगोपाः । वसुः सूनुः सहसो अप्सु राजा विभात्यग्र उषसामिधानः ॥ ५ ॥ ॐ विश्वस्य केतुर्भुवनस्य गर्भ आ रोदसी अपृ-

---

वेदाः । तृतीयमप्सु नृम्णा अजस्रमिंधान एनं जरते स्वाधीः ॥ १ ॥ ॐ विद्मा ते अग्ने त्रेधा त्रयाणि विद्मा ते धाम बिभृता पुरुत्रा । विद्मा ते नाम परमं गुहा यद्विद्मा तमुत्सं यत आजगन्थ ॥ २ ॥ ॐ समुद्रे त्वा नृम्णा अप्स्वन्तर्नृचक्षा ईधे दिवो अग्न ऊधन् । तृतीये त्वा रजसि तस्थिवाꣳसमपामुपस्थे महिषा अवर्द्धन् ॥ ३ ॥ ॐअक्रंददग्निः स्तनयन्निव द्यौः क्षामा रेरिहद्वीरुधः समञ्जन् । सद्यो जज्ञानो व्विहीमिद्धो अख्यदा रोदसी-भानुना भात्यंतः ॥ ४ ॥ ॐ श्रीणामुदारो धरुणो रयीणां मनीषाणां प्रार्पणः सोमगोपाः । वसुः सूनुः सहसो अप्सु राजा विभात्यग्र उषसामिधानः ॥ ५ ॥ ॐ विश्वस्य केतुर्भुवनस्य गर्भ आ

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

णाज्जायमानः। वीडुं चिदद्रिमभिनत्परायंजना यदग्निमयजन्त पंच ॥ ६ ॥ ॐ उशिक् पावको अरतिः सुमेधा मर्त्तेष्वग्निरमृतो निधायि। इयर्ति धूममरुषं भरिभ्रदुच्छुक्रेण शोचिषा द्यामिनक्षन् ॥ ७ ॥ ॐ दृशानो रुक्म उर्व्या व्यद्यौद्दुर्मर्षमायुः श्रिये रुचानः। अग्निरमृतो अभवद्वयोभिर्यदेनं द्यौरजनयत्सुरेताः ॥ ८ ॥ ॐ यस्ते अद्य कृणवद्भद्रशोचेऽपूपं देव घृतवंतमग्ने। प्रतन्नय प्रतरं वस्यो अच्छाभि सुम्नं देवभक्तं यविष्ठ ॥ ९ ॥ ॐ आतं भज सौश्रवसेष्वग्न उक्थ उक्थ आभज शस्यमाने। प्रियः सूर्ये प्रियो अग्ना भवात्युज्जातेन भिनददुज्जनित्वैः ॥ १० ॥ ॐ त्वामग्ने यजमाना अनुद्यून् विश्वा वसु दधिरे वार्याणि। त्वया सह द्रविणमिच्छमाना व्रजं

रोदसी अपृणाज्जायमानः। वीडुं चिदद्रिमभिनत्परायंजना यदग्निमयजंत पंच ॥ ६ ॥ ॐ उशिक् पावको अरतिः सुमेधा मर्तेष्वग्निरमृतो निधायि। इयर्ति धूममरुषं भरिभ्रदुच्छुक्रेण शोचिषा द्यामिनक्षन् ॥ ७ ॥ ॐ दृशानो रुक्म उर्व्या व्यद्यौद्दुर्मर्षमायुः श्रिये रुचानः। अग्निरमृतो अभवद्वयोभिर्यदेनं द्यौरजनयत्सुरेताः ॥ ८ ॥ ॐ यस्ते अद्य कृष्णवद्भद्रशोचेऽपूपं देव घृतवंतमग्ने। प्रतन्नय प्रतरं वस्यो अच्छाभि सुम्नं देवभक्तं यविष्ठ ॥ ९ ॥ ॐ आ तं भज सौश्रवसेष्वग्न उक्थ उक्थ आभज शस्यमाने। प्रियः सूर्ये प्रियो अग्ना भवात्युज्जातेन भिनददुज्जनित्वैः ॥ १० ॥ ॐ त्वामग्ने यजमाना अनुद्यून् विश्वा वसु दधिरे वार्याणि। त्वया सह

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

गोमंतमुशिजो विवव्रुः ॥ ११ ॥ ततः कुमारं प्रतिदिश-मेकैकं ब्राह्मणं मध्ये पंचममूर्ध्वमवेक्षमाणमवस्थाप्य तमु-द्दिश्य इममनुप्राणितेति पिता ब्रूयात् । ततस्तेषु प्राणेति पूर्वो व्यानेति दक्षिणोऽपानेति अपर उदानेति उत्तर उपरिष्टादवेक्षमाणः समानेति पञ्चमो ब्रूयात् । एषा-मसंभवे स्वयमेव तत्र तत्रोपविश्य तथैव ब्रूयात् । अथ कुमारस्य जन्मभूमिमभिमंत्रयेत्–ॐ वेद ते भूमि हृदयं दिवि चंद्रमसि श्रितम् । वेदाहं तन्मां तद्विद्यात्पश्येम

द्रविणमिच्छमाना व्रजं गोमंतमुशिजो विवव्रुः ॥ ११ ॥ ”

तिसके पीछे बालकके पूर्व पश्चिम उत्तर और दक्षिण इन चारों दिशामें चार ब्राह्मणको बैठाल देवे और उनके बीचमें एक पांचवें ब्राह्मणको ऊर्ध्वदृष्टि करके बैठाले अर्थात् वह पाँचवां ब्राह्मण ऊपरको देखता रहे । तब पिता पूर्व तरफके ब्राह्मणकी ओर देखकर 'इममनुप्राणित' ऐसा कहे । तत्पश्चात् उन चारों ब्राह्मणोंमेंसे पूर्वकी ओर बैठा हुआ ब्राह्मण ' प्राणेति 'उच्चारण करे । दक्षिणकी दिशामें बैठा हुआ ब्राह्मण 'व्यानेति' पश्चिम-दिशामें बैठाहुआ ब्राह्मण ' अपानेति ' और उत्तर दिशामें बैठाहुआ ब्राह्मण 'उदानेति' उच्चारण करे । तथा बीचमें ऊर्ध्व-दृष्टि खडा हुआ ब्राह्मण ' समानेति ' उच्चारण करे । यदि उस समय यह पांच ब्राह्मण नहीं मिल सकें तो पिताको चाहिये कि, उन पूर्वादि चारों दिशाओंमें स्वयं जाकर उन उन मन्त्रोंको उच्चारण कर देवे । फिर आगे लिखे ' ॐ वेद ते भूमि हृदयं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शरदः शतं जीवेम शरदः शतꣳ शृणुयाम शरदः शतमित्यनेन । अथ कुमारमभिमृशति–अश्मा भव परशुर्भव हिरण्यमश्रुतं भव । आत्मा वै पुत्रनामासि त्वं जीव शरदः शतमित्यनेन । तत्र कुमारमातरमभिमंत्रयेत्–इडाऽसि मैत्रावरुणी वीरे वीरमजीजनथाः । सा त्वं वीरवती भव याऽस्मान्वीरवतोऽकरत्॥इत्यनेन।ततः कुमारनाभिवर्द्धने कृते तस्या दक्षिणस्तनं प्रक्ष्याल्य कुमाराय प्रयच्छति–ॐ इमꣳ स्तनमूर्जस्वन्तं धयापां प्रपीनमग्ने सरिरस्य मध्ये । उत्सं जुषस्व मधुमंतमर्वन्त्समुद्रियꣳ सदनमाविशस्व ॥ इति मंत्रेण । ततो वामस्तनं

दिवि चन्द्रमसि श्रितम् वेदाहं तन्मां तद्विद्यात्पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतꣳ शृणुयाम शरदः शतम् ' इस मन्त्रसे कुमारकी जन्मभूमिको भी अभिमन्त्रित करे । अनन्तर आगे लिखे ' अश्मा भव परशुर्भव हिरण्यमश्रुतं भव । आत्मा वै पुत्रनामासि त्वं जीव शरदः शतम्' इस मन्त्रसे कुमारको स्पर्श करे । इसके पश्चात् आगे लिखे 'इडाऽसि मैत्रावरुणी वीरे वीरमजीजनथाः । सा त्वं वीरवती भव याऽस्मान् वीरवतोऽकरत्' इस मन्त्रसे कुमार (बालक) की माताको भी अभिमन्त्रित करे । फिर बालकके नालच्छेदन करनेपर उसकी माताके दाहिने स्तनको धुलावे और आगे लिखे ' ॐ इमꣳ स्तनमूर्जस्वन्तं धयापां प्रपीनमग्ने सरिरस्य मध्ये । उत्सं जुषस्व मधुमंतमर्वन्त्समुद्रियꣳ सदनमाविशस्व' इस मन्त्रसे बालकको दुग्धपान करावे अर्थात् बालकके मुखमें

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्रक्षाल्य प्रयच्छति-ॐ इमꣳ स्तनमित्यादि। यस्ते स्तनः शशयो यो मयोभूर्यो रत्नधा वसुविद्यः सुदत्रः। येन विश्वा पुष्यसि वार्याणि सरस्वति तमिह धातवेऽकः॥ इति मंत्राभ्याम्। ततः प्रसवित्रीशयनीयमस्तकोपरि भूमौ वारिपूर्णभाजनं निदध्यात्-आपो देवेषु जागृथ यथा देवेषु जागृथ एवमस्यां सूतिकायां सपुत्रिकायां जागृथ॥ इत्यनेन मंत्रेण। तच्च सूतिकोत्थापनपर्यंतं तत्रैव धर्तव्यम्। ततः सूतिकागृहद्वारप्रदेशे पंचभूसंस्कारान् कृत्वाऽग्नेरुपसमाधानम्।स चाग्निरुत्थानादिनपर्यंतं तत्रैव धर्तव्यः। तत्र चाग्नौ संध्ययोः फलीकरणांस्तण्डुलांस्तान्मिश्रान् सर्षपान् दश

स्तन देवे। फिर बांये स्तनको धोकर पूर्वोक्त 'ॐइमꣳस्तनमूर्जस्वन्तं' इत्यादि और दूसरे 'यस्ते स्तनः शशयो यो मयोभूर्यो रत्नधा वसुविद्यः सुदत्रः। येन विश्वा पुष्यसि वार्याणि सरस्वति तमिह धातवेऽकः॥' इस मंत्रसे बालकको देवे। फिर उस पुत्रवती स्त्रीके शिरहानेकी तरफ आगे लिखे-'आपो देवेषु जागृथ यथा देवेषु जागृथ एवमस्यां सूतिकायां सपुत्रिकायां जागृथ' इस मन्त्र द्वारा जलसे भराहुआ एक पात्र (कलश) स्थापन करे और दश दिनपर्यन्त अर्थात् जबतक सूतक निवृत्त न हो उसको वहांसे नहीं उठावे। फिर जहां पुत्र जन्मा हो उसी कोठरी (सोवर) के दरवाजे पर पञ्चभूसंस्कारपूर्वक अग्निको स्थापन करे। यह अग्निभी सूतकान्ततक रहनी चाहिये। उस घरकी स्थापित अग्निमें प्रातः तथा सायंकालको धानोंकी

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

दिनानि पिता अन्यो वा ब्राह्मणो नित्यं हस्तेन जुहोति। तत्र प्रथमाहुतौ मंत्रः—ॐ शंडामर्का उपवीरः शौंडिकेय उलूखलः। मलिम्लुचो द्रोणासश्च्यवनो नश्यतादितः स्वाहा॥ इदं शंडामर्काभ्यामुपवीराय मलिम्लुचाय द्रोणेभ्यश्च्यवनाय०। द्वितीयाहुतौ ॐ आलिखन्ननिमिषः किंवदन्त उपश्रुतिर्हर्यक्षः कुंभीशत्रुः पात्रपाणिर्नृमणिर्हंत्रीमुखः सर्षपारुणश्च्यवनो नश्यतादितः स्वाहा॥ इदमालिखतेऽनिमिषाय किंवदन्त्य उपश्रुतये हर्यक्षाय कुंभीशत्रवे पात्रपाणये नृमणये हंत्रीमुखाय सर्षपायारुणाय०। अथ यदि दशाहाभ्यन्तरे कुमारग्रहो बालमाविशेत्तेनाविष्टो न नामयति न रोदिति न हृष्यति न

पृथक् की हुई भुस्सी (चोकर) चावलोंकी कनी और सरसों मिलाकर आगे लिखे "ॐ शण्डामर्का उपवीरः शौण्डिकेय उलूखलः। मलिम्लुचो द्रोणासश्च्यवनो नश्यतादितः स्वाहा॥ इदं शण्डामर्काभ्यामुपवीराय मलिम्लुचाय द्रोणेभ्यश्च्यवनाय०। द्वितीयाहुतौॐआलिखन्ननिमिषः किंवदन्त उपश्रुतिर्हर्यक्षःकुंभीशत्रुः पात्रपाणिर्नृमणिर्हंत्रीमुखः सर्षपारुणश्च्यवनो नाश्यतादितः स्वाहा॥ इदमालिखतेऽनिमिषाय किंवदन्त्य उपश्रुतये हर्यक्षाय कुंभीशत्रवे पात्रपाणये नृमणये हन्त्रीमुखाय सर्षपायारुणाय० इन मंत्रोंसे पिता अथवा और कोई ब्राह्मण दश दिनतक आहुति देता रहे फिर यदि दश दिनके भीतर बालकको किसी (पूतनादि) बालग्रहजनित पीडा (व्याधि) मालूम हो और उससे ग्रसित होनेपर बालक न हाथ पैर हिलावे, न रोवे, न हँसे और

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तुष्यति च तदैतन्नैमित्तिकं कर्तव्यम् । तदा तं बालकं जालेन प्रच्छाद्य उत्तरीयेण वाससा अंकमादाय तं बालं पिता जपति–कूर्कुरस्तु कूर्कुरः कूर्कुरो बालबंधनः । चेच्चेच्छुनक सृज नमस्ते अस्तु सीसरो लपेतापह्वरत्सत्यं यत्ते देवा वरमददुः स त्वं कुमारमेव वावृणीथाः चेच्चेच्छुनक सृज नमस्ते अस्तु सीसरो लपेतापह्वर सत्यं यत्ते सरमा माता सीसरः पिता श्यामशबलौ भ्रातरौ चेच्चेच्छुनक सृज नमस्ते अस्तु सीसरो लपेतापह्वरेति जपः। न नामयति न रोदिति न हृष्यति न ग्लायति यत्र वयं वदामो यत्र चाभिमृशामसि । इत्यभिमृशति॥इति जातकर्म॥४॥

न प्रसन्न रहे तब इस व्याधिके शमनार्थ यह कर्म करना चाहिये कि, उस बालकको उसके ओढनेके वस्त्रसहित जालसे ढककर पिता अपनी गोदीमें बैठाले और इन आगे लिखे ' कूर्कुरस्तु कूर्कुरः कूर्कुरो बालबन्धनः । चेच्चेच्छुनक सृज नमस्ते अस्तु सीसरो लपेतापह्वरत्सत्यं यत्ते देवा वरमददुः सत्वं कुमारमेव वावृणीथाः चेच्चेच्छुनक सृज नमस्ते अस्तु सीसरो लपेतापह्वरत्सत्यं यत्ते सरमा माता सीसरः पिता श्यामशबलौ भ्रातरौ चेच्चेच्छुनक सृज नमस्ते अस्तु सीसरो लपेतापह्वरेति जपः । न नामयति न रोदिति न हृष्यति न ग्लायति यत्र वयं वदामो यत्र चाभिमृशामसि " इन मंत्रोंको जपता हुआ अभिमर्शन करे ॥

इति श्रीकान्यकुब्जवंशावतंसस्वर्गीयमिश्रसुखानन्दसूरिसूनु-
पण्डित–कन्हैयालालमिश्रकृतभाषाटीकायां
जातकर्मसंस्कारः समाप्तः ॥ ४ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अथ नामकर्म ॥ ९ ॥

अथ दशमेऽहनि सूतिकां चोत्थाप्यैकादशेऽहनि विहितदिनान्तरे वा पिता नाम कुर्यात्। तत्र प्रथमं मातृपूजाभ्युदयिकादि कृत्वा ब्राह्मणान् भोजयेत्। कुमारं संस्नाप्य अहतवासः परिधाप्य कृतस्वस्त्ययनं प्राङ्मुखं दक्षिणकर्णे अमुकशर्मासीति त्रिः श्रावयति। अथ आयुर्वेदान्मंत्रः-ॐअंगादंगात्संभवसि हृदयादधिजायसे। आत्मा वै पुत्रनामासि स जीव शरदः शतम्। नाम द्व्यक्षरं

अब नामकर्मसंस्कार कहा जाता है—दशवें दिन सूतिकाको स्नान कराकर घरको (झाड बुहार लीप पोतकर) शुद्ध करे। फिर ग्यारहवें दिन नामकरण संस्कार करना चाहिये। यदि कदाचित् उस दिन न होसके तो जिस दिनको निश्चय कर लिया है उसी दिन कर देवे। उस दिन पहले मातृपूजा और नान्दीमुखश्राद्ध करके ब्राह्मणोंको भोजन करावे फिर बालकको स्नान कराकर नवीन वस्त्र पहरावे। अनन्तर स्वस्तिवाचनपूर्वक पूर्वको मुख किये हुए बालकके दाहिने कानमें 'अमुक शर्मासि' ऐसा तीन बार सुनावे और फिर अगले—'ॐ अङ्गादङ्गात्सम्भवसि हृदयादधिजायसे। आत्मा वै पुत्रनामासि स जीव शरदः शतम्' मंत्रका पाठ करे। ब्राह्मणके पुत्रका नाम दो अक्षरयुक्त चार अक्षरयुक्त सहजही उच्चारण करने योग्य और शर्मान्त करे अर्थात् नामके अन्तमें शर्मापद जोड देना चाहिये। क्षत्रियका वर्मान्त नाम करण करे अर्थात् उसके नामके पीछे वर्मा पद

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

चतुरक्षरं सुखोद्यं शर्मान्तं ब्राह्मणस्य वर्मान्तं क्षत्रियस्य गुप्तान्तं वैश्यस्य दासान्तं शूद्रस्य ॥ इति नामकर्म ॥५॥

अथ निष्क्रमणम् ॥ ६ ॥

तत्र चतुर्थे मासि चन्द्रतारानुकूले दिने स्नातमलंकृतं शिशुं गृहाद्बहिरानीय पिताऽन्यो वा ब्राह्मणः सूर्यमुदीक्षयति ॐ–तच्चक्षुरित्यादिमंत्रेण । तत्र फलपुष्पान्वितपयसा भास्करस्य अर्घ्यो देयः । इति निष्क्रमणम् ॥६॥

जोड देना चाहिये । वैश्यका गुप्तान्त नामकरण करे अर्थात् वैश्यके नामके अन्तमें गुप्त पद जोड देना चाहिये और शूद्रका दासान्त नामकरण करे अर्थात् शूद्रके नामके अन्तमें दासपद जोड देना चाहिये ॥

इति श्रीकान्यकुब्जवंशावतंसमुरादाबादनिवासि–पं० कन्हैयालाल मिश्रकृतभाषाटीयां नामकर्मसंस्कारः समाप्तः ॥ ५ ॥

अब निष्क्रमण संस्कार लिखा जाता है–यह संस्कार चौथा महीनेमें और चन्द्र ताराकी अनुकूलताके दिन करना चाहिये। प्रथम बालकको स्नान कराकर नवीन गहने और वस्त्र पहिराय पिता या कोई दूसरा पुरुष उसको बाहर ले जावे और फिर इस आगे लिखे ' ॐ तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रम् ० ' इत्यादि मन्त्रका उच्चारण करके बालकको सूर्यनारायणका दर्शन करावे । फिर उपरोक्त मन्त्रका पाठ कर चुकनेपर फल पुष्प गन्धयुक्त जलके द्वारा भगवान् सूर्यको अर्घ्य देना चाहिये ॥

इति श्रीकान्यकुब्जवंशावतंसमुरादाबादनिवासि–पं० कन्हैयालालमिश्रकृत भाषाटीकायां निष्क्रमणसंस्कारः समाप्तः ॥ ६ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अथान्नप्राशनम्॥ ७॥

तत्र षष्ठे मासि चन्द्रतारानुकूलशुभदिने स्नातः शुचिराचान्तः शुक्लद्विवासाः पिता सूतिकागृह एव कुशकण्डिकां कुर्यात्। तत्र कुशैर्हस्तपरिमितचतुरस्रभूमिं परिसमूह्य तानैशान्यां निक्षिप्य गोमयोदकेनोपलिप्य स्फ्येन स्रुवेण वा प्रादेशमात्रमुत्तरोत्तरक्रमेण प्रागग्रं त्रिरुल्लिख्य उल्लेखनक्रमेणानामिकांगुष्ठाभ्यां मृदं समुद्धृत्य वारिणा तं देशमभ्युक्ष्य कांस्यपात्रस्थं वह्निं प्रत्यङ्मुखमुपसमधाय ॐ अद्यकर्तव्यान्नप्राशनहोमकर्मणि कृताकृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्म कर्तुममुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मण-

---

अब अन्नप्राशन संस्कार लिखा जाता है—यह संस्कार छठे महीनेमें जिस दिन चन्द्र और तारा अनुकूल हो उसी शुभ दिनमें करना चाहिये। उस दिन पिता प्रातःकाल स्नानपूर्वक शुद्ध हो आचमन करके पवित्र हो सफेद वस्त्र धारणपूर्वक जिस घरमें बालकका जन्म हुआ हो उसी घरमें चौखूंटी वेदी बनावे और उससे वेदीको तीन कुशोंसे बुहारकर उन कुशोंको ईशान दिशामें फेंक देवे। फिर गोबरसे वेदीको लीपकर स्फ्यनामक यज्ञपात्र अथवा स्रुवेसे क्रमशः प्रादेशप्रमाण तीन रेखा करके अनामिका और अंगुष्ठसे रेखा खैंचनेके क्रमानुसार मिट्टी उठाकर फेंक देवे। फिर जलसे वेदीको सेचन करे। अनन्तर कांसीके पात्रमें अग्निको लेकर पूर्वकी ओर उसका मुख करके स्थापनकरे फिर आगे लिखे 'ॐ अद्य कर्तव्यान्नप्राशनहोमकर्मणि कृताकृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्म कर्तुममुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणमेभिः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मेभिः पुष्पचंदनतांबूलवासोभिर्ब्रह्मत्वेन त्वामहं वृणे इति ब्रह्माणं वृणुयात् । ॐ वृतोऽस्मीति प्रतिवचनं ॐ यथाविहितं कर्म कुर्विति यजमानेनोक्ते ॐ करवाणीति तेनोक्ते अग्नेर्दक्षिणतः शुद्धमासनं निधाय तदुपरि प्राग-ग्रान् कुशानास्तीर्य अग्निप्रदक्षिणं कारयित्वा ब्रह्माण-मुदङ्मुखं तत्रोपवेश्यास्मिन्नन्नप्राशनहोमकर्मणि त्वं मे ब्रह्मा भवेत्यभिधाय ॐ भवानीति तेनोक्ते प्रणीतापात्रं पुरतः कृत्वा वारिणा परिपूर्य कुशैराच्छाद्य ब्रह्मणो मुखमवलोक्याग्नेरुत्तरतो निदध्यात् । ततः परिस्तरणम्

न पुष्पचन्दनताम्बूलवासोभिर्ब्रह्मत्वेन त्वामहं वृणे' इस संकल्पको उच्चारण करके ब्रह्मका वरण करे तब ब्रह्मा उस पुष्पादि सामग्रीको लेकर—' ॐ वृतोऽस्मि ' कहे फिर यजमानके ' ॐ यथाविहितं कर्म कुरु ' ऐसा कहनेपर ब्रह्मा—' ॐ करवाणि ' ऐसा कहे । फिर अग्निके दक्षिणकी तरफ चौकी इत्यादि शुद्ध आसन बिछावे और उसपर पूर्वको अग्रभाग करके कुशा बिछावे फिर ब्रह्मासे अग्निकी प्रदक्षिण कराकर और उत्तरकी तरफ मुख कराकर उसपर ब्रह्माको बैठाल देवे । और कहे कि 'अस्मिन्नन्नप्राशनहोमकर्मणि त्वं मे ब्रह्मा भव ' तब इसके उत्त-रमें ब्रह्मा—'ॐ भवानि' ऐसा कहे । तत्पश्चात् यजमान प्रणीता-पात्रको अपने आगे रखकर जलसे भर देवे और कुशोंसे उसको ढक देवे और ब्रह्मका मुख देखकर अग्निके (वेदीके) उत्त-रकी ओरको रख देवे । इसके पीछे परिस्तरण करना चाहिये ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

बर्हिषश्चतुर्थभागमादायाग्नेयादीशानान्तं ब्रह्मणोऽग्निपर्यन्तं नैर्ऋत्याद्वायव्यांतम् अग्नितः प्रणीतापर्यन्तं ततोऽग्नेरुत्तरतः पश्चिमदिशि पवित्रच्छेदनार्थं कुशत्रयं पवित्रकरणार्थं साग्रमनन्तर्गर्भितकुशपत्रद्वयं प्रोक्षणीपात्रम् आज्यस्थाली चरुस्थाली संमार्जनकुशाः उपयमनकुशाः प्रादेशमितपलाशसमिधस्तिस्रः स्रुवः आज्यं षट्पंचाशदुत्तरयजमानमुष्टिशतद्वयावच्छिन्नतण्डुलपूर्णपात्रं चर्वर्थास्तण्डुला एतानि पवित्रच्छेदनकुशानां पूर्वपूर्वदिशि

एक मुट्ठी कुशा लेकर उसके चारभाग करे । पहले भाग द्वारा अग्निकोनसे ईशान कोनतक, दूसरे भागद्वारा ब्रह्माके आसनसे अग्निपर्यन्त, तीसरे भागद्वारा नैर्ऋत्यकोनसे वायव्यकोनतक, चौथे भागको अग्नि (वेदी) से लेकर प्रणीतापात्रतक बिछा देवे । फिर अग्निके उत्तरकी ओर पश्चिमदिशामें पवित्र छेदनके लिये तीन कुशा रक्खे । पवित्र बनानेके लिये अग्रभागसहित तथा बीचके पत्तेसे रहित (अर्थात् जिनके भीतर अन्य कुश न हों) दो कुशपत्र रखने चाहिये । फिर प्रोक्षणीपात्र, आज्यस्थाली, चरुस्थाली, पाँच संमार्जन कुशा, तीनसे लेकर तेरहतक उपयमनकुशा, प्रादेशप्रमाण (बिलस्तभर लम्बी) ढाककी तीन समिधा, स्रुवा, घृत, दो सौ छप्पन यजमानकी मुट्ठी चावलोंसे भराहुआ पूर्णपात्र और चरुके निमित्त चावल इन सब वस्तुओंको क्रमशः पवित्रच्छेदनकी कुशाओंके पूर्वपूर्वकी ओर

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

क्रमेणासादनीयानि । ततः पवित्रच्छेदनकुशैर्यजमान-प्रादेशमितपवित्रच्छेदनं सपवित्रकरेण प्रणीतोदकं त्रिः प्रोक्षणीपात्रे निधाय द्वाभ्यामनामिकाङ्गुष्ठाभ्यामुत्तराग्रे पवित्रे गृहीत्वा त्रिरुत्पवनम् । ततः प्रोक्षणीपात्रं सव्य-हस्तेन गृहीत्वा दक्षिणानामिकाङ्गुष्ठाभ्यां पवित्रे गृहीत्वा त्रिरुदिङ्गनं ततः प्रणीतोदकेन प्रोक्षणीपात्रमभ्युक्ष्य प्रोक्षणीजलेनासादितवस्तुसेचनम् । अग्निप्रणीतयोर्मध्ये प्रोक्षणीपात्रं निदध्यात् । ततः आज्यस्थाल्यामाज्यं निरूप्य प्रणीतोदकेन तण्डुलान्प्रक्षाल्य चरुपात्रे प्रणी-

---

रखता जावे । फिर पवित्रच्छेदनकी कुशाओंसे यजमान प्रादेश-प्रमाण पवित्रच्छेदनपूर्वक पवित्रोंको हाथमें ग्रहण कर प्रणीताके जलको तीन वार प्रोक्षणीपात्रमें डाले । अनन्तर अनामिका और अंगुष्ठसे पवित्रोंको पकडकर तीन बार प्रोक्षणीके जलको उछाले फिर प्रोक्षणीपात्रको बायें हाथमें रख दाहिने हाथके अनामिका अंगुष्ठद्वारा पवित्रोंको ग्रहण करके तीन बार प्रोक्षणीका जल ऊपरको फेंके । तिसके पीछे प्रणीताके जलसे प्रोक्षणीका सेचन करे फिर प्रोक्षणीके जलसे पूर्व स्थापन करी हुई सब वस्तुओंको सेचन कर । पश्चात् अग्नि (वेदी) और प्रणीताके बीचमें प्रोक्षणीपात्रको रख देवे । अनन्तर आज्यस्थालीमें घृत डालकर प्रणीताके जलसे चरुके निमित्त रखे हुए चावलोंको धोवे और चरु पका-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तोदकं दत्त्वा तत्र तण्डुलान् प्रक्षिप्य स्वयं चरुं गृहीत्वा ब्रह्मा चाज्यं वह्नावुत्तरतश्चरुं दक्षिणतः आज्यं निदध्यात्। ततः सिद्धे चरौ तृणादि प्रज्वाल्य उभयोरुपरि प्रदक्षिणं भ्रामयित्वा वह्नौ तत्प्रक्षेपः। ततस्त्रिः स्रुवप्रतपनम्। संमार्जनकुशानामग्रैरन्तरतो मूलैर्बाह्यतः स्रुवं संमृज्य प्रणीतोदकेनाभ्युक्ष्य पुनस्त्रिः प्रतप्य दक्षिणतो निदध्यात्। तत आज्यमग्नितश्चरोः पूर्वेणानीयाग्रे धृत्वा आज्यपश्चिमेन चरुमानीयाज्यस्योत्तरतो निदध्यात्। तत आज्यस्य प्रोक्षणीवत्त्रिरुत्पवनम् अवेक्ष्य

नेके पात्रमें प्रणीताका जल डालकर फिर उसमें चावलोंको डाल देवे पीछे यजमान चरुपात्रको उठाकर और ब्रह्मा घृतपात्रको लेकर अग्निमें उत्तरकी तरफको चरु और दक्षिणकी तरफ घृतको रख देवे। फिर चरुके पक जानेपर एक तिनकेको वाले और उनको चरु तथा घृतके ऊपर दक्षिणतरफसे घुमाता हुआ अग्निमें डाल देवे। तत्पश्चात् स्रुवेको तीन वार अग्निमें तपाना चाहिये फिर संमार्जन कुशाओंके अग्रसे स्रुवेके भीतर और मूलभागसे बाहरकी तरफ स्रुवेको झाडे अर्थात् शुद्ध करे। अनन्तर प्रणीताके जलसे स्रुवेको छिडककर फिर तीन वार तपाकर (वेदीके) दक्षिणकी ओर रख देवे। फिर घृतको अग्निमेंसे उठाकर और उसको चरुके पूर्वभागसे लाकर अपने आगे रक्खे और फिर घृतके पश्चिमकी तरफसे चरुको लाकर घृतके उत्तरकी ओर रख देवे। पश्चात् प्रोक्षणीकी तरह तीन बार पवित्रोंसे उछाले और देखे यदि उसमें कोई मक्खी इत्यादि अशुभ

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सत्यपद्रव्ये तन्निरसनं ततः प्रोक्षण्युत्पवनं तत उत्थाय उपयमनकुशान्वामहस्ते कृत्वा प्रजापतिं मनसा ध्यात्वा तूष्णीमग्नौ घृताक्ताः समिधस्तिस्रः प्रक्षिपेत्। तत उपविश्य सपवित्रप्रोक्षण्युदकेन प्रदक्षिणक्रमेणाग्निं पर्युक्ष्य प्रणीतापात्रे पवित्रे निधाय ब्रह्मणाऽन्वारब्धः पातितदक्षिणजानुः समिद्धतमेऽग्नौ जुहुयात्। तत्र प्रथमाहुतिचतुष्टये तत्तदाहुत्यनन्तरं स्रुवावस्थितहुतशेषस्य प्रोक्षणीपात्रे प्रक्षेपः—ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये०। इति मनसा। ॐ इंद्राय स्वाहा इदमिंद्राय०। इत्या-

---

वस्तु पडी हो तो उसको निकालकर बाहर फेंक देवे फिर प्रोक्षणीके जलको भी उछाले और फिर यजमान खडा होकर उपयमन कुशाओंको बायें हाथमें ग्रहणपूर्वक मनसे प्रजापतिका ध्यान करता हुआ तीनों समिधाओंको घृतमें भिगोकर स्वाहा मंत्रके सहित चुपचाप अग्निमें डालदेवे। तदनन्तर आसनमें बैठकर पवित्रोंके साथ प्रोक्षणीका जल हाथमें ग्रहणपूर्वक दक्षिण क्रमसे अग्निके चारोंतरफ छिडके फिर पवित्रोंको प्रणीतापात्रमें रख देवे अनन्तर ब्रह्मासे मिलकर और दाहिनी जानुको नवायकर जलती हुई अग्निमें होम करे। पहली चार आहुति देनेके अनन्तर स्रुवेमें शेष रहे घृतको प्रोक्षणीपात्रमें डालता जाय। ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये०। इति मनसा। ॐ इन्द्राय स्वाहा इदं इन्द्राय। इत्याघारौ। ॐ अग्नये स्वाहा इदं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

घारौ। ॐ अग्नये स्वाहा इदमग्नये०। ॐ सोमाय स्वाहा इदं सोमाय०। इत्याज्यभागौ। ततोऽनन्वारब्धेन साधारणासाधारणाहुतिद्वयम्। तत्र प्रथमाहुतिमंत्रः—ॐ देवीं वाचमजनयन्त देवास्तां विश्वरूपाः पशवो वदन्ति। सा नो मन्द्रेषमूर्जं दुहाना धेनुर्वागस्मानुपसुष्टुतैतु स्वाहा॥ इदं वाचे०। द्वितीयाहुतिस्तु—ॐ देवीं वाचमित्यादिमंत्रः। ॐ वाजो नो अद्य प्रसुवाति दानं वाजो देवाꣳ ऋतुभिः कल्पयाति। वाजो हि मा सर्ववीरं जजान विश्वा आशा वाजपतिर्जयेयꣳ स्वाहा॥ इदं वाचे वाजाय। इति मंत्राभ्याम्। ततः स्थालीपाकेनाहुतिचतुष्टयम्—ॐ प्राणेनान्न-

---

अग्नये०। ॐ सोमाय स्वाहा इदं सोमाय०। इत्याज्यभागौ[1]। फिर ब्रह्मासे मिलेहुए यजमानको आगे लिखे मन्त्रोंसे साधारण और असाधारण दो आहुति देनी चाहिये। तिनमें पहली आहुतिका मन्त्र निम्न लिखित जानना—'ॐ देवीं वाचमजनयन्त देवास्तां विश्वरूपाः पशवो वदन्ति। सा नो मन्द्रेषमूर्जं दुहाना धेनुर्वागस्मानुपसुष्टुतैतु स्वा० इदं वाचे न०। और दूसरी आहुतिका वही पहला 'ॐ देवीं वाचम्' इत्यादि मन्त्र जिससे कि[2] प्रथम आहुति दी गई है और एक यह 'ॐ वाजो नो अद्य प्रसुवाति दानं वाजो देवाꣳ ऋतुभिः कल्पयाति। वाजो हि मा सर्ववीरं जजान विश्वा आशा वाजपतिर्जयेयꣳ स्वाहा इदं वाचे वाजाय०' अर्थात् पहली आहुतिका मन्त्र और क दूसरा मंत्र इन दोनोंको मिलाकर दूसरी आहुति

---

१ यह दो आहुति आज्यभाग कहाती हैं। २ यह दोनों आघार आहुति कहलाती हैं।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मशीय स्वाहा इदं प्राणाय० । ॐ अपानेन गंधमशीय स्वाहा इदमपानाय० । ॐ चक्षुषा रूपाण्यशीय स्वाहा इदं चक्षुषे० । ॐ श्रोत्रेण यशोऽशीय स्वाहा इदं श्रोत्राय० । ततो ब्रह्मणाऽन्वारब्धकर्तृको होमः । तत्र तत्तदाहुत्यनन्तरं स्रुवावस्थितहुतशेषद्रव्यस्य प्रोक्षणीपात्रे प्रक्षेपः । तत्रैवाज्यस्थालीपाकाभ्यां स्विष्टकृतम् । ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा इदमग्नये स्विष्टकृते० । तत आज्येन—ॐ भूः स्वाहा इदमग्नये० । ॐ भुवः स्वाहा इदं वायवे न० । ॐ स्वः स्वाहा इदं सूर्याय न० । एता

देनी चाहिये । इसके अनन्तर स्थालीपाकमें घृत मिलाकर आगे लिखे 'ॐ प्राणेनान्नमशीय स्वाहा इदं प्राणाय० । ॐ अपानेन गन्धमशीय स्वाहा इदमपानाय० । ॐ चक्षुषा रूपाण्यशीय स्वाहा इदं चक्षुषे० । ॐ श्रोत्रेण यशोऽशीय स्वाहा इदं श्रोत्राय० ' इन मन्त्रोंसे स्थालीपाक चरुकी चार आहुति देवे । इसके आगेका हवन भी ब्रह्मासे मिलकरही किया जाता है । प्रत्येक आहुतिके अनन्तर स्रुवेमें बची हुई वस्तुको प्रोक्षणी पात्रमें डालना चाहिये । अब प्रथम घृत और चरु इन दोनोंसे आगे लिखे 'ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा इदमग्नये स्विष्टकृते' इन मंत्रों द्वारा स्विष्टकृत् आहुति देवे । फिर घृतद्वारा आगे लिखे भूरादि मन्त्रोंसे नव आहुति देवे—ॐ भूः स्वाहा इदमग्नये० । ॐ भुवः स्वाहा इदं वायवे न० । ॐ स्वःस्वाहा इदं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

महाव्याहृतयः। ॐ त्वन्नो अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडो अव यासिसीष्ठाः। यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषाꣳसि प्रमुमुग्ध्यस्मत्स्वाहा इदमग्नीवरुणाभ्यां०। ॐ स त्वन्नो अग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टौ। अव यक्ष्व नो वरुणꣳ रराणो व्वीहि मृडीकꣳ सुहवो न एधि स्वाहा इदमग्नीवरुणाभ्यां०। ॐ अयाश्चाग्नेस्यनभिशस्तिपाश्च सत्वमित्वमया असि। अयानो यज्ञं वहास्ययानो धेहि भेषजꣳ स्वाहा इदमग्नये०। ये ते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता महान्तः। तेभिर्नो अद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुंचंतु मरुतः स्वर्काः स्वाहा इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यः०। ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं

सूर्याय न०। एता महाव्याहृतयः। ॐ त्वन्नो अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडो अव यासिसीष्ठाः। यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषाꣳसि प्रमुमुग्ध्यस्मत्स्वाहा इदमग्नीवरुणाभ्याम्। ॐ स त्वन्नो अग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टौ। अव यक्ष्व नो वरुणꣳ रराणो व्वीहि मृडीकꣳ सुहवो न एधि स्वाहा इदमग्नीवरुणाभ्याम्०। ॐ अयाश्चाग्नेस्यनभिशस्तिपाश्च सत्वमित्वमया असि। अयानो यज्ञं वहास्ययानो धेहि भेषजꣳ स्वाहा इदमग्नये०। ॐ ये ते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता महान्तः। तेभिर्नो अद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा इदं। वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च०। ॐ उदुत्तमं वरुण पाश-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

विमध्यमꣳ श्रथाय । अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा इदं वरुणाय० । इति सर्वप्रायश्चित्तम् । ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये० । इति मनसा । इति प्राजापत्यम् । अथ संस्रवप्राशनम् । तत आचम्य ओमद्य कृतैतदन्नप्राशनहोमकर्मणि कृताकृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्मप्रतिष्ठार्थमिदं पूर्णपात्रं प्रजापतिदैवतममुकगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय ब्रह्मणे दक्षिणां तुभ्यमहं संप्रददे इति दक्षिणां दद्यात् । ॐ स्वस्तीति प्रतिवचनम् । ततः प्रणीताविमोकः । ॐ सुमित्रिया न आप ओषधयः सन्तु इति पठित्वा पवित्राभ्यां प्रणीताजल-

---

मस्मदवाधमं विमध्यमꣳश्रथाय । अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा इदं वरुणाय० । इति सर्वप्रायश्चित्तम् । ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये० । इति मनसा । इति प्राजापत्यम् । अनन्तर प्रोक्षणीपात्रके जलको यत्किंचित् पान करे फिर शुद्ध जलसे आचमन करे पुनः आगे लिखे हुए 'ओमद्य कृतैतदन्नप्राशनहोमकर्मणि कृताकृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्मप्रतिष्ठार्थमिदं पूर्णपात्रं प्रजापतिदैवतममुकगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय ब्रह्मणे दक्षिणां तुभ्यमहं सम्प्रददे' ऐसा संकल्प करके पूर्णपात्रका दान करके ब्रह्माको देवे । तब ब्रह्मा 'ॐ स्वस्ति' कहकर उसको ग्रहण करे । फिर पवित्रोंसे प्रणीता पात्रके जलको लेकर आगे लिखे 'ॐ सुमित्रिया न आप ओषधयः सन्तु' मन्त्रसे अपने शिरमें छिडके । अनन्तर आगे

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मानीय तेन शिरः संमृज्य ॐ दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु योऽस्मान्द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः इत्यैशान्यां प्रणीतान्युब्जीकरणम् । ततः स्तरणक्रमेण बर्हिरुत्थाप्याज्येनाभिघार्य हस्तेनैव जुहुयात् । ॐ देवा गातुविदो गातुं वित्वा गातुमित मनसस्पत इमं देव यज्ञꣳ स्वाहा व्वाते धाः स्वाहा । इति बर्हिर्होमः । अथ सर्वान् कटुमधुरलवणादिरसान् सर्वाणि च शाल्यादीन्यन्नानि यथासंभवमुद्धृत्यैकस्मिन्नुत्तमपात्रे कृत्वा कृतस्नानादिरलंकारादियुतो बालस्तूष्णीं ॐ हंत इति मंत्रेण वा अन्नपतेऽन्नस्य नो देह्यनमीवस्य शुष्मिणः प्रप्रदातारं तारिष ऊर्ज्जन्नो धेहि

लिखे 'ॐ दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु योऽस्मान्द्वेष्टि यञ्च वयं द्विष्मः' मंत्रसे प्रणीतापात्रको ईशानकोनमें उल्टा कर देना चाहिये । इसके पीछे स्तरणक्रमसे अर्थात् जिस क्रमसे कुश बिछाये थे उसी क्रमसे कुशोंको उठाकर घृतमें भिगोवे और फिर उनको हाथसे ही आगे लिखे 'ॐ देवा गातुविदो गातुं वित्वा गातुमित मनसस्पत इमं देव यज्ञꣳ स्वाहा वाते धाः स्वाहा' इस मन्त्रद्वारा अग्निमें होम कर देवे । फिर सब प्रकारके कडवे, तीखे, कसैले, मीठे, खट्टे, लवण रसोंको, सब प्रकारके चावल इत्यादि अन्नको, जिस परिमाणसे घरमें बनाये गये हों उन सबमेंसे थोडा थोडा एक उत्तम पात्रमें परोसकर स्नानपूर्वक शुद्ध नवीन वस्त्र पहराये हुए बालकको चुपचाप 'ॐ हन्त' इस मंत्रसे यह आगे लिखे 'अन्नपतेऽन्नस्य नो देह्यनमीवस्य शुष्मिणः । प्रप्रदातारं तारिष

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

विमध्यमꣳ श्रथाय । अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा इदं वरुणाय० । इति सर्वप्रायश्चित्तम् । ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये० । इति मनसा । इति प्राजापत्यम् । अथ संस्रवप्राशनम् । तत आचम्य ओमद्य कृतैतदन्नप्राशनहोमकर्मणि कृताकृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्मप्रतिष्ठार्थमिदं पूर्णपात्रं प्रजापतिदैवतममुकगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय ब्रह्मणे दक्षिणां तुभ्यमहं संप्रददे इति दक्षिणां दद्यात् । ॐ स्वस्तीति प्रतिवचनम् । ततः प्रणीताविमोकः । ॐ सुमित्रिया न आप ओषधयः सन्तु इति पठित्वा पवित्राभ्यां प्रणीताजल-

---

मस्मदवाधमं विमध्यमꣳश्रथाय । अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा इदं वरुणाय० । इति सर्वप्रायश्चित्तम् । ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये० । इति मनसा । इति प्राजापत्यम् । अनन्तर प्रोक्षणीपात्रके जलको यत्किंचित् पान करे फिर शुद्ध जलसे आचमन करे पुनः आगे लिखे हुए 'ओमद्य कृतैतदन्नप्राशनहोमकर्मणि कृताकृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्मप्रतिष्ठार्थमिदं पूर्णपात्रं प्रजापतिदैवतममुकगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय ब्रह्मणे दक्षिणां तुभ्यमहं सम्प्रददे' ऐसा संकल्प करके पूर्णपात्रका दान करके ब्रह्माको देवे । तब ब्रह्मा 'ॐ स्वस्ति' कहकर उसको ग्रहण करे । फिर पवित्रोंसे प्रणीता पात्रके जलको लेकर आगे लिखे 'ॐ सुमित्रिया न आप ओषधयः सन्तु' मन्त्रसे अपने शिरमें छिडके । अनन्तर आगे

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मानीय तेन शिरः संमृज्य ॐ दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु योऽस्मान्द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः इत्यैशान्यां प्रणीतान्युब्जीकरणम् । ततः स्तरणक्रमेण बर्हिरुत्थाप्याज्येनाभिघार्य हस्तेनैव जुहुयात् । ॐ देवा गातुविदो गातुं वित्वा गातुमित मनसस्पत इमं देव यज्ञꣳ स्वाहा व्वाते धाः स्वाहा । इति बर्हिर्होमः । अथ सर्वान् कटुमधुरलवणादि रसान् सर्वाणि च शाल्यादीन्यन्नानि यथासंभवमुद्धृत्यैकस्मिन्नुत्तमपात्रे कृत्वा कृतस्नानादिरलंकारादियुतो बालस्तूष्णीं ॐ हंत इति मंत्रेण वा अन्नपतेऽन्नस्य नो देह्यनमीवस्य शुष्मिणः प्रप्रदातारं तारिष ऊर्ज्जन्नो धेहि

लिखे 'ॐ दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु योऽस्मान्द्वेष्टि यश्च वयं द्विष्मः' मंत्रसे प्रणीतापात्रको ईशानकोनमें उल्टा कर देना चाहिये । इसके पीछे स्तरणक्रमसे अर्थात् जिस क्रमसे कुश बिछाये थे उसी क्रमसे कुशोंको उठाकर घृतमें भिगोवे और फिर उनको हाथसे ही आगे लिखे 'ॐ देवा गातुविदो गातुं वित्वा गातुमित मनसस्पत इमं देव यज्ञꣳ स्वाहा वाते धाः स्वाहा' इस मन्त्रद्वारा अग्निमें होम कर देवे । फिर सब प्रकारके कडवे, तीखे, कसैले, मीठे, खट्टे, लवण रसोंको, सब प्रकारके चावल इत्यादि अन्नको, जिस परिमाणसे घरमें बनाये गये हों उन सबमेंसे थोडा थोडा एक उत्तम पात्रमें परोसकर स्नानपूर्वक शुद्ध नवीन वस्त्र पहराये हुए बालकको चुपचाप 'ॐ हन्त' इस मंत्रसे यह आगे लिखे 'अन्नपतेऽन्नस्य नो देह्यनमीवस्य शुष्मिणः । प्रप्रदातारं तारिष

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

द्विपदे चतुष्पदे ॥ इत्यनेन वा प्राशनीयम् । अथ कुमारस्य वाक्प्रसरणकामेन भरद्वाजमांसेन अन्नाद्यकामेन कपिञ्जलमांसेन जवनकामेन आयुःकामेन च कृकलासमांसेन ब्रह्मवर्चसकामेन आटिमांसेन सर्वफलकामेन कथितसर्वमांसः कपिञ्जलः। (आटि गौरतित्तिर इति केचित् ।) अलाभे पिष्टकमयानां भरद्वाजप्रभृतीनामेकदेशः प्राशयितव्यः । तत आचम्योत्थाय फलमूलपुष्पसमन्वित-

---

ऊर्ज्जन्नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे ' इस मंत्रसे उस पात्रमें रक्खे हुए सब अन्न चटा देवे । यहाँ विशेषता यह है, यदि पिता इच्छा करे कि यह मेरा बालक उत्तम वक्ता हो तो भारद्वाज (पक्षी विशेष) के मांससे उसको प्राशन कराना चाहिये । यदि बालकके विशेष अन्नशाली होनेकी कामना हो तो कपिञ्जल(पक्षी) के मांससे प्राशन कराना चाहिये । यदि पुत्रके वेगवान् होनेकी चाहना हो तो मत्स्यमांस द्वारा, विशेष दीर्घायु होनेकी लालसा होनेपर कृकलास (गिरगट) के मांस द्वारा और पुत्रके ब्रह्म तेजस्वी होनेकी अभिलाषा होनेपर सफेद तीतरके मांससे प्राशन कराना चाहिये । यदि बालकके सर्वगुणसम्पन्न होनेकी अभिलाषा हो तो उसको सब प्रकारके भक्ष्य मांसद्वारा प्राशन कराना चाहिये । यदि उपरोक्त मांस न मिल सकें तो आटे द्वारा उन उन पक्षियोंका आकार (मूर्ति) बनाकर उसके कुछ अंशको प्राशन करा देवे, फिर आचमनपूर्वक स्रुवेमें फल, मूल, पुष्प,

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

घृतेन स्रुवं परिपूर्य ॐ मूर्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत आजातमग्निम् । कविꣳ सम्राजमतिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयंत देवाः स्वाहा ॥ इति मंत्रेण पूर्णाहुतिं दद्यात् । तत उपविश्य भस्मानीय दक्षिणानामिकाग्रगृहीतभस्मना ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेरिति ललाटे । ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषमिति ग्रीवायाम् । ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषमिति दक्षिणबाहुमूले। ॐ तन्नो अस्तु त्र्यायुषमिति हृदि । अनेनैव क्रमेण कुमारललाटादावपि तन्नो इत्यत्र तत्ते अस्त्विति विशेषः । ततो दूर्वाक्षतादिदानं ब्राह्मणानां भोजनं च ॥ इत्यन्नप्राशनम् ॥ ७ ॥

घृत भरकर खडा होजाय और आगे लिखे 'ॐ मूर्द्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत आजातमग्निम् । कविꣳसम्राजमतिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयंत देवाः स्वाहा' इस मन्त्रसे पूर्णाहुति देवे । तत्पश्चात् आसनमें बैठकर स्रुवेमें होमकी भस्म लगावे और फिर अनामिका अंगुली द्वारा उस स्रुवेकी भस्म लेकर ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः' उच्चारण करके माथेमें, 'ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषं' कहकर गलेमें, 'ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषं' पढकर दक्षिणबाहुमूलमें और 'ॐ तन्नो अस्तु त्र्यायुषं' ऐसा बोलकर उस भस्मको हृदयमें लगा लेना चाहिये । इस प्रकार पिता अपने भस्म लगाकर फिर ऐसेही पुत्रके भी लगावे किन्तु जब पुत्रके भस्म लगावे तब 'तन्नो अस्तु' के स्थानमें 'तत्ते अस्तु' उच्चारण करे । फिर ब्राह्मणोंसे दूर्वा अक्षत पुष्पादि द्वारा आशीर्वाद ग्रहण करे । इसके उपरान्त ब्राह्मणोंको भोजन कराना चाहिये ॥ इति अन्नप्राशनसंस्कारः ॥ ७ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अथ चूडाकर्म ॥ ८ ॥

तच्च पूर्णवर्षे तृतीये वा असंपूर्णे उपनीत्या सह वा यथाचारम् उदगयन आपूर्यमाणपक्षे शुक्रास्तादिदोषरहित-रिक्तादिदोषरहित-सोमगुरुबुधशुक्रान्यतमवार-विहित-नक्षत्रसमन्वितायां तिथौ कृतनित्यक्रियो यजमानो मातृ-पूजाभ्युदयिकादि कृत्वा मंडपे परिष्कृतभूमौ कुश-कण्डिकामारभेत् । तत्र क्रमः-कुशैर्हस्तामितां भूमिं परि-समूह्य तानैशान्यां परित्यज्य गोमयोदकेनोपलिप्य स्रुवमूलेन प्रादेशमात्रं त्रिरुल्लिख्य उल्लेखनक्रमेणानामि-

---

अब चूडाकरणसंस्कार लिखा जाता है-यह चूडाकरण संस्कार वर्षके पूर्ण हो जानेपर अथवा तीसरे वर्ष या यज्ञोपवीत संस्कारके साथ अपने यहाँकी रीतिके अनुसार किया जाता है । चूडाकरण संस्कार उत्तरायण शुक्लपक्ष और शुक्रादिके अस्तरहित समयमें तथा रिक्तातिथिरहित समयमें और सोम, गुरु, बुध तथा शुक्र इन वारोंमें और ज्योतिषशास्त्रोक्त चूडाकर्म कथित नक्षत्रयुक्त तिथिमें होना चाहिये । उस दिन यजमान स्नान तथा नित्यकर्म करके मातृपूजा और नान्दीमुख श्राद्ध कर रचे हुए मण्डपकी शुद्ध भूमिमें वेदी बनायकर कुश कण्डिकाका आरंभ करे । प्रथम तीन कुशाओंसे वेदीको परिष्कार (साफ) करे और फिर उन कुशाओंको ईशानकोनमें फेंक देवे । अनन्तर गोबरमें जल मिलाकर वेदीको लीपे फिर स्रुवेसे प्रादेशप्रमाण तीन रेखा खैंचकर रेखा खैंचनेके क्रमानु-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

काङ्गुष्ठाभ्यां मृदमुद्धृत्य वारिणा तं देशमभ्युक्ष्य कांस्यपात्रेणाग्निमानीय प्रत्यङ्मुखमग्नेरुपसमाधानं कुर्यात्। ततोऽग्नेः पश्चिमतो यजमानदक्षिणदिशि स्थापितं कुमारमहतवासः परिधाप्याङ्के निधाय माता उपविशति। ततः पुष्पचन्दनताम्बूलवासांस्यादाय ॐ अद्य कर्तव्यचूडाकरणहोमकर्मणि कृताकृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्म कर्तुममुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणमेभिः पुष्पचन्दनताम्बूलवासोभिर्ब्रह्मत्वेन त्वामहं वृणे इति ब्रह्माणं वृणुयात्। ॐ वृतोऽस्मीति प्रतिवचनम्। ॐ यथाविहितं कर्म कुर्विति यजमानेनोक्ते ॐ करवाणीति प्रतिवचनम्।

सार अनामिका और अंगुष्ठ द्वारा उन रेखाओंमेंसे मिट्टी उठाकर ईशानकोनमें डाल देवे तत्पश्चात् वेदीको जलसे सेचन करना चाहिये और काँसीके पात्रमें अग्नि लाकर उसको पश्चिमाभिमुख करके वेदीमें स्थापन करे। फिर अग्निके पश्चिमकी तरफ आसन बिछाकर यजमान नवीन वस्त्र पहरकर बैठे पश्चात् बालकको स्नान कराय नवीन वस्त्र पहराय माता अपनी गोदीमें लेकर पतिके दाहिनी तरफ बैठे तदनन्तर पुष्प, चन्दन, ताम्बूल तथा वस्त्र लेकर यजमान आगे लिखेहुए 'ॐ अद्य कर्त्तव्यचूडाकरणहोमकर्मणि कृताकृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्म कर्तुममुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणमेभिः पुष्पचन्दनताम्बूलवासोभिर्ब्रह्मत्वेन त्वामहं वृणे' इस संकल्पको उच्चारण पूर्वक ब्रह्माका वरण करे तब ब्रह्मा उस पुष्पादि सामग्रीको लेकर 'ॐ वृतोऽस्मि' ऐसा कहे। फिर यजमान 'ॐ यथाविहितं कर्म कुरु' कहे तब (उसके उत्तरमें)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ततो यजमानोऽग्नेर्दक्षिणतः शुद्धमासनं दत्त्वा तदुपरि प्रागग्रान् कुशानास्तीर्याग्निप्रदक्षिणं कारयित्वा अस्मिन् कर्मणि त्वं मे ब्रह्मा भवेत्यभिधाय। ॐ भवानीति तेनोक्ते ब्रह्माणमुदङ्मुखं तत्रोपवेश्य प्रणीतापात्रं पुरतः कृत्वा वारिणा परिपूर्य कुशैराच्छाद्य ब्रह्मणो मुखमवलोक्याग्नेरुत्तरतः कुशोपरि निदध्यात्। ततः परिस्तरणम्-बर्हिषश्चतुर्थभागमादायाग्नेयादीशानान्तं ब्रह्मणोऽग्निपर्यन्तं नैर्ऋत्याद्वायव्यान्तं अग्नितः प्रणीता-

---

ब्रह्मा 'ॐ करवाणि' ऐसा कहे। तत्पश्चात् यजमान अग्निके दक्षिणकी ओर चौकी आदि शुद्ध आसन बिछाकर उसपर पूर्वको जिनका अग्रभाग हो ऐसे कुश बिछावे और ब्रह्मासे अग्निकी प्रदक्षिणा कराकर 'अस्मिन्कर्मणि त्वं मे ब्रह्मा भव' अर्थात् इस कर्ममें आप मेरे ब्रह्मा हो ऐसा कहे तब इसके उत्तरमें ब्रह्माके 'ॐ भवानि' कहनेपर उस आसनपर ब्रह्माको उत्तराभिमुख करके बैठाल देना चाहिये। फिर प्रणीतापात्रको आगे रखकर जलसे परिपूर्ण करके कुशाओंसे ढक देवे और ब्रह्माके मुखकी तरफ देखकर अग्निके उत्तरकी ओर कुशाओंपर रख देवे तिसके पीछे अग्निके सब ओर परिस्तण करना चाहिये। मुट्ठीभर अथवा सौ कुश लेकर उसके चार भाग करे। प्रथम भाग अग्निकोनसे लेकर ईशानकोतनक, दूसरा भाग ब्रह्माके आसनसे अग्निकोनतक, तीसरा भाग नैर्ऋत्यकोनसे वायुकोनतक और चौथा भाग अग्निसे प्रणीतापात्रपर्यन्त बिछा देवे। फिर हवनके लिये

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पर्यन्तं ततोऽग्नेरुत्तरतः पश्चिमदिशि पवित्रच्छेदनार्थं कुशत्रयं पवित्रकरणार्थं साग्रमनन्तर्गर्भितकुशपत्रद्वयं प्रोक्षणीपात्रं आज्यस्थाली संमार्जनकुशाः समिधस्तिस्रः स्रुवः आज्यं षट्पंचाशदुत्तरयजमानमुष्टिशतद्वयावच्छिन्नतंडुलपूर्णपात्रं पवित्रच्छेदनकुशानां पूर्वपूर्वदिशि क्रमेणासादनीयम्।अमीषामुत्तरोत्तरतः साधारणवस्तून्युपकल्पनीयानि। तत्र शीतोदकमुष्णोदकं घृतदधिनवनीतान्यतमस्य पिंडः त्रिश्वेतशल्लकीकंटकं साग्रसप्तविंशतिकुशपत्राणि लोहक्षुरः नापितः वृषभगोमयपिंडः अन्यदप्या-

---

अग्निसे उत्तर पश्चिम दिशामें पवित्रच्छेदनके लिये तीन कुशा रक्खे और पवित्र बनानेके लिये अग्रभागसहित और बीचके पत्तेसे रहित ऐसे दो कुशपत्र रक्खे। फिर प्रोक्षणीपात्र, आज्यस्थाली, पांच संमार्जनकुशा, तीन समिधा, स्रुवा घृत और दो सौ छप्पन मुट्ठी चावलोंसे भरा हुआ पूर्णपात्र इन सब पदार्थोंको पवित्रछेदनकी कुशाओंके आगे आगे रखता जावे और इन सबके आगे आगे अन्यान्य साधारण वस्तुओंको भी रखता जावे। (इनके सिवाय) शीतल और उष्णजल रक्खे। घृत, दही अथवा माखन इनमें यथालब्ध किसी एक पदार्थका गोलाकार पिंड बनाकर रख देवे। तीन स्थानमें सफेदवाला वन सूअरका कांटा, सत्ताईस कुशा, लोहेका उस्तरा, नापित (नाई) बैलके गोबरका पिंड (लौंदा) तथा अन्यान्य

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

चारान्नलिनीदलादि । ततः पवित्रच्छेदनकुशाः पवित्रे छित्त्वा सपवित्रकरेण प्रणीतोदकं त्रिःप्रोक्षणीपात्रे निधाय द्वाभ्यामनामिकाङ्गुष्ठाभ्यामुत्तराग्रे पवित्रे गृहीत्वा त्रिरुत्पवनं ततः प्रोक्षणीपात्रं वामहस्ते कृत्वाऽनामिकांगुष्ठगृहीतपवित्राभ्यां प्रोक्षणीजलं त्रिरुत्क्षिप्य प्रणीतोदकेन प्रोक्षणीपात्रमभ्युक्ष्य प्रोक्षणीजलेनासादितवस्तून्यभिषिच्याग्निप्रणीतयोर्मध्ये प्रोक्षणीपात्रं निदध्यात् । आज्यस्थाल्यामाज्यं कृत्वाऽधिश्रित्य ज्वलत्तृणादिकमादायाज्यस्योपरि प्रदक्षिणं भ्रामयित्वा वह्नौ तत् क्षिपेत् । ततस्त्रिः

कमलके पत्ते इत्यादि मांगलिक पदार्थोंको स्थापन करे । फिर पवित्रच्छेदनकी कुशाओंसे पवित्र छेदनकर उन पवित्रोंको हाथमें ले प्रणीताके जलको प्रोक्षणीपात्रमें डाले । पश्चात् अनामिका और अंगुष्ठ इन दोनों अंगुलियोंके द्वारा पवित्रोंको पकड प्रोक्षणीका जल तीन बार उछाले । फिर प्रोक्षणीपात्रको बायें हाथमें रखकर अनामिका तथा अंगुष्ठसे पकडे हुए पवित्रोंसे प्रोक्षणीका जल तीन बार ऊपरको छिडके । पीछे प्रणीताके जलसे प्रोक्षणीपात्रको सेचन कर प्रोक्षणीके जल द्वारा पूर्वस्थापित सब वस्तुओंको छिडके । फिर उस प्रोक्षणीपात्रको अग्नि और प्रणीताके बीचमें रख देना चाहिये अनन्तर आज्यस्थालीमें घृत डालकर उसको वेदीकी अग्निमें रख देवे । फिर एक तिनका बालकर घृतके चारों ओर दक्षिण क्रमसे घुमाकर अग्निमें डाल देवे तदनन्तर तीन बार स्रुवेको (वेदीकी अग्निमें) तपावे और

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

स्रुवप्रतपनं संमार्जनकुशानामग्रैरन्तरतो मूलैर्बाह्यतः स्रुवं संमृज्य प्रणीतोदकेनाभ्युक्ष्य पूर्ववत् त्रिःप्रताप्य दक्षिणतो निदध्यात्। ततः अग्नितः प्रदक्षिणक्रमेणाज्यमवतार्याग्रतो निदध्यात्। ततः प्रोक्षणीवत्त्रिराज्योत्पवनम्, अवेक्ष्य सत्यपद्रव्ये तन्निरसनं पूर्ववत्प्रोक्षण्युत्पवनं तत उत्थाय उपयमनकुशानादाय वामहस्ते कृत्वा प्रजापतिं मनसा ध्यात्वा तूष्णीमग्नौ घृताक्ताः समिधस्तिस्रः प्रक्षिपेत्। तत उपविश्य सपवित्रप्रोक्षण्युदकेन प्रदक्षिणक्रमेणाग्निं

फिर संमार्जनकुशाओंके अग्रभागसे भीतर और मूलभागसे बाहरकी तरफ स्रुवेको शुद्ध कर प्रणीताके जलसे छिडके अनन्तर पूर्वोक्त प्रकारसेही फिर तीन बार तपाकर दक्षिणकी ओर रख देवे। तत्पश्चात् दक्षिण क्रमसे अग्निसे घृतको उठाकर यजमान अपने आगे रख लेवे फिर प्रोक्षणीपात्रकी तरह यजमान उस घृतको पवित्रोंद्वारा उछाले और देखे यदि उसमें मक्खी इत्यादि कोई अपवित्र वस्तु पडी हो तो उसको निकालकर फेंक देना चाहिये। फिर पूर्ववत् पवित्रोंद्वारा तीन बारही प्रोक्षणीपात्रके जलको उछालना उचित है। फिर यजमान खडा हो उपयमन कुशाओंको बायें हाथमें ले मनमें प्रजापतिका ध्यान करता हुआ उन पूर्वस्थापित तीनों समिधाओंको घृतमें भिगोकर स्वाहाशब्दके साथ चुपचाप अग्निमें डाल देवे। फिर आसनपर बैठकर पवित्र और प्रोक्षणीका जल हाथमें ग्रहणपूर्वक अग्निके चारों तरफ छिडक पवित्रोंको प्रणीतापात्रमें रखदेवे

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पर्युक्ष्य प्रणीतापात्रे पवित्रे कृत्वा ब्रह्मणान्वारब्धः पातित-दक्षिणजानुः समिद्धतमेऽग्नौ जुहुयात् । तत्र प्रत्याहुत्यनन्तरं स्रुवावस्थितहुतशेषघृतस्य प्रोक्षणीपात्रे प्रक्षेपः। ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये० १ । इति मनसा । ॐ इंद्राय स्वाहा इदमिन्द्राय० २ । इत्याघारौ ॥ ॐ अग्नये स्वाहा इदमग्नये० ३ । ॐ सोमाय स्वाहा इदं सोमाय० ४ । इत्याज्यभागौ ॥ ॐ भूः स्वाहा इदमग्नये० ५ । ॐ भुवः स्वाहा इदं वायवे० ६ । ॐ स्वः स्वाहा इदं सूर्याय० ७ । एता महाव्याहृतयः ॥ ॐ त्वन्नो अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडो अव यासिसीष्ठाः यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषाꣳसि प्रमु-

---

फिर ब्रह्मासे मिलकर और अपने दाहिने घुटुएको नवायकर प्रज्वलित अग्निमें होम करे प्रत्येक आहुति देनेपर स्रुवमें जो घृत शेष रहे उसको प्रोक्षणीपात्रमें डालता जाय । हवन करनेके मन्त्र यथा—ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये न मम ॥ १ ॥ इति मनसा । ॐ इंद्राय स्वाहा इदमिन्द्राय न मम ॥ २ ॥ इत्याघारौ ॥ ॐ अग्नये स्वाहा इदमग्नये न मम ॥३॥ ॐ सोमाय स्वाहा इदं सोमाय न मम॥४॥ इत्याज्यभागौ । ॐ भूः स्वाहा इदमग्नये न मम ॥ ५ ॥ ॐ भुवः स्वाहा इदं वायवे न मम ॥ ६ ॥ ॐ स्वः स्वाहा इदं सूर्याय न मम ॥ ७ ॥ एता महाव्याहृतयः । ॐ त्वन्नो अग्ने वरुणस्य विद्वान्देवस्य हेडो अव यासिसीष्ठाः । यजिष्ठो वह्नि

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri
पं० प्रेम दत्त शास्त्री
जहांगीराबाद (२५१३)९४
बुलन्दशहर (उ०प्र०)

मुग्ध्यस्मत्स्वाहा इदमग्नीवरुणाभ्यां० ८ ॐ स त्वन्नो अग्ने ऽवमो भवोती नेदिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टौ । अव यक्ष्व नो वरुणꣳ रराणो वीहि मृडीकꣳ सुहवो न एधि स्वाहा इदमग्नीवरुणाभ्यां० ९ । ॐ अयाश्चाग्नेस्यनभिशास्तिपाश्च सत्वमित्वमया असि । अयानो यज्ञं वहास्ययानो धेहि भेषजꣳ स्वाहा । इदमग्नये० १० । ॐ ये ते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता महान्तः । तेभिर्नो अद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा । इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च न मम ११ । ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं विमध्यमꣳ श्रथाय । अथा वयमादित्य व्रते तवा-

---

तमः शोशुचानो विश्वा द्वेषाꣳसि प्रमुमुग्ध्यस्मत्स्वाहा इदमग्नीवरुणाभ्यां० ॥ ८ ॥ ॐ स त्वन्नो अग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टौ । अव यक्ष्व नो वरुणꣳ रराणो वीहि मृडीकꣳ सुहवो न एधि स्वाहा इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम ॥ ९ ॥ ॐ अयाश्चाग्नेस्यनभिशस्तिपाश्च सत्वमित्वमया असि । अयानो यज्ञं वहास्ययानो धेहि भेषजꣳ स्वाहा इदमग्नये० ॥ १० ॥ ॐ ये ते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता महान्तः । तेभिर्नो अद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्का स्वाहा । इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च न मम ॥ ११ ॥ ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं विमध्यमꣳ श्रथाय । अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नागसो अदितये स्याम स्वाहा इदं वरुणाय० १२। इति सर्वप्रायश्चित्तम्॥ ॐप्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये० १३। इति प्राजापत्यम् ॥ ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा इदमग्नये स्विष्टकृते० १४। इति स्विष्टकृत्॥ अथ संस्रव-प्राशनम्। तत आचम्य ॐ अद्यामुष्य कुमारस्य कृतै-तच्चूडाकरणहोमकर्मणि कृताकृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्म-प्रतिष्ठार्थमिदं पूर्णपात्रं प्रजापतिदैवतममुकगोत्रायाऽमुक-शर्मणे ब्राह्मणाय ब्रह्मणे दक्षिणां तुभ्यमहं सम्प्रददे। इति ब्रह्मणे दक्षिणां दद्यात्। ॐ स्वस्तीति प्रतिवच-नम्। ततो ब्रह्मग्रन्थिविमोकः। ततः ॐ सुमित्रिया न आप

स्याम स्वाहा इदं वरुणाय० ॥ १२ ॥ इति सर्वप्रायश्चित्तम् ॥ ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापये० ॥ १३ ॥ इति मनसा । इति प्राजापत्यम् । ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा इदमग्नये स्विष्ट-कृते० ॥ १४ ॥ इसके पीछे प्रोक्षणीके जलद्वारा प्राशन करना चाहिये और फिर दूसरी बार शुद्ध जलसे आचमन करे अन-न्तर आगे लिखे 'ॐ अद्यामुष्य कुमारस्य कृतैतच्चूडाकरणहोम-कर्मणि कृताकृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्मप्रतिष्ठार्थमिदं पूर्णपात्रं प्रजा-पतिदैवतममुकगोत्रायाऽमुकशर्मणे ब्राह्मणाय ब्रह्मणे दक्षिणां तुभ्यमहं सम्प्रददे' इस संकल्पको पढकर ब्रह्माके निमित्त पूर्ण पात्रका दान करे। ब्रह्मा 'ॐ स्वस्ति' कहकर वह दक्षिणा लेलेवे। फिर पवित्रोंकी गांठ खोल देना चाहिये और उन्ही पवित्रोंसे आगे लिखे 'ॐ सुमित्रिया न आप ओषधयः सन्तु'

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ओषधयः संतु। इति पवित्राभ्यां प्रणीताजलमानीय तेन शिरः संमृज्य ॐ दुर्मित्रियास्तस्मै संतु योऽस्मान् द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः। इत्यैशान्यां प्रणीतान्युब्जीकरणम्। ततः स्तरणक्रमेण बर्हिरुत्थाप्याज्येनाभिघार्य ॐ देवा गातुविदो गातुं वित्वा गातुमित मनसस्पत इमं देव यज्ञꣳ स्वाहा व्वाते धाः स्वाहा॥ इति मंत्रेण बर्हिर्होमः॥ अथ शीतोदकमुष्णोदकेन ॐ उष्णेन वा य उदकेनेह्यदिते केशान्वप इति मंत्रेणाभिषिच्य तक्रमिश्रितोदके नवनीताद्यन्यतमपिण्डं तूष्णीं प्रक्षिप्य दक्षिणपश्चिमोत्तरक्रमेण

यह मन्त्र पढकर यजमान प्रणीताके जलद्वारा शिरमें मार्जन करे और पश्चात् आगे लिखे 'ॐ दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु योऽस्मान् द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः' इस मंत्रको पढकर प्रणीतापात्रको ईशानकोनमें उल्टा कर देवे। तिस पीछे बिछानेके क्रमानुसार अर्थात् जिस क्रमसे कुश बिछाये थे उसी क्रमसे उन कुशोंको उठावे और फिर उनको घृतमें भिगोकर आगे लिखे 'ॐ देवा गातुविदो गातुं वित्वा गातुमित मनसस्पत इमं देव यज्ञꣳ स्वाहा वाते धाः स्वाहा' इस मन्त्रसे अग्निमें डाल देवे। तदनन्तर पूर्वस्थापित शीतल जलको गरम जलमें आगे लिखे 'ॐ उष्णेन वा य उदकेनेह्यदिते केशान् वप' इस मन्त्र द्वारा मिलावे। फिर उस जलमें थोडासा मट्ठा डालकर पूर्व स्थापित घृत, दही वा माखनके पिंडमेंसे भी यत्किंचित् पिंडही बनाकर चुपचाप उसमें डालदेवे। फिर चूडाकर्मके निर्दिष्ट दिनसे पहले दिन बाल-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पूर्वनिशाबद्धकुमारकेशजूटिकात्रये दक्षिणजूटिकाम् ॥ ॐसवित्रा प्रसूता देव्या आप उन्दन्तु ते तनुम् । दीर्घायुत्वाय वर्चसे । इति मंत्रं पठित्वा तेनैव मिश्रितवारिणा प्रक्षाल्य ततो दक्षिणभागस्थितजूटिकाभागत्रयं कुर्यात् । तत्र एकैकां जूटिकां प्रति कुशपत्रत्रयसंयोजनं कुर्यात् । शल्लकीकण्टकेन तूष्णीं विवरणं कृत्वा भागत्रयं कुर्यात् । ततः सप्तविंशतिकुशपत्रतः पत्रत्रयमानीय तत्केशमूलसंलग्नाग्रजूटिकाप्रथमभागमध्यांतरितं कुर्यात् । ॐ ओषधे त्रायस्व स्वधिते मैनꣳ हिꣳसीः । शिवो नामासि स्वधितिस्ते पिता नमस्ते अस्तु मा मा हिꣳसीः ॥ इति मंत्रेण

कके केशोंके तीन भाग कर कलावेसे दक्षिण पश्चिम उत्तर तीन तरफ जूटिका (जूडा) बांधे । उन पहले दिन बांधी हुई तीनों जूटिकाओंमें दक्षिण तरफवाली जूटिकाको आज चूडाकर्मके दिन आगे लिखे ' ॐ सवित्रा प्रसूता देव्या आप उन्दन्तु ते तनुम् । दीर्घायुत्वाय वर्चसे ' इस मन्त्रको पढकर शीतोदक, उष्णोदक, मट्ठा और दधि इत्यादि मिश्रित जलसे भिगोवे । फिर उस दक्षिण तरफकी जूटिकाके भी सेहीके काँटेसे सुलझाकर तीन भाग करे और पूर्व स्थापित सत्ताईस कुशोंमेंसे तीन कुश ले कलावा लपेटकर उनकी भी पिंजूलिका बना लेवे और पहली जूटिकाके साथ उस पिंजूलिकाको युक्त करे । अनन्तर आगे लिखे ' ॐ ओषधे त्रायस्व स्वधिते मैनꣳ हिꣳसीः शिवो नामासि स्वधितिस्ते पिता नमस्ते अस्तु मा मा हिꣳसीः । ' इस मन्त्रसे

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

लोहक्षुरं गृहीत्वा ॐ निवर्तयाम्यायुषेऽन्नाद्याय प्रजननाय रायस्पोषाय सुप्रजास्त्वाय सुवीर्याय।इति मंत्रेण जूटिकासंलग्नं कुर्यात् ॥ ततः कुशपत्रत्रयसहितां जूटिकां छिनत्ति। ॐ येनावपत्सविता क्षुरेण सोमस्य राज्ञो वरुणस्य विद्वान्। तेन ब्रह्मणो वपतेदमस्यायुष्यं जरदष्टिर्यथासत्। इति मन्त्रेण पश्चिमजूटिकाछेदनं कुर्यात्। ततस्तान् लूनकुशपत्रत्रयसहितान् अनडुद्गोमयपिण्डोपरि उत्तरस्यां निदध्यात्। अत्रैव पूर्वप्रक्षालितपरभागद्वये कुशपत्रत्रितयान्तर्निधानादि च्छेदवर्जं सर्वं पूर्ववदेव छेदनं तूष्णीम्। ततः पश्चिमजूटिकायां पूर्ववत्तेनैव मंत्रेण

उस्तरेको हाथमें लेवे। तदनन्तर आगे लिखे 'निवर्त्तयाम्यायुषेऽन्नाद्याय प्रजननाय रायस्पोषाय सुप्रजास्त्वाय सुवीर्याय' इस मन्त्रसे उस उस्तरेको बालोंमें लगावे और फिर आगे लिखे 'ॐ येनावपत्सविता क्षुरेण सोमस्य राज्ञो वरुणस्य विद्वान्। तेन ब्रह्मणो वपतेदमस्यायुष्यं जरदष्टिर्यथाऽसत्।' इस मंत्रसे उस पिंजूलिकासमेत बालोंके जूडाको काट लेवे। पश्चात् उन कुश सहित काटे हुए बालोंको उत्तरकी ओर स्थापित बैलके गोबरपर रखदेवे फिर पहले भिगोई हुई दक्षिणभागकी दोनों जूटिकाको तीन कुशोंकी पिंजूलिकासे युक्त कर केश काटनेके अतिरिक्त तीन तीन कुशपत्र रखना तथा सेहीके काँटेका लगाना इत्यादि सब काम पूर्ववत् करै, किन्तु छेदन अर्थात् बालोंके काटनेका काम चुपचाप करे। अनन्तर पश्चिमकी तरफके जूडामें

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्रक्षालनं तूष्णीं शल्लकीकण्टकेन भागत्रयकरणं केश-मूलसंलग्नाग्रकेशांतरितमध्यकुशपत्रत्रयधारण-क्षुरग्रहण-तत्संयोजनानि तत्तन्मंत्रेणैव । तत्र प्रथमजूटिकाछेदने मन्त्रः—ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुषम् । यद्देवेषु त्र्यायुषं तन्नो अस्तु त्र्यायुषम् ॥ इति मन्त्रेण छित्त्वा ततः पूर्ववद्गोमयपिण्डोपरि निदध्यात् । तत्रावशिष्टभागद्वये कुशपत्रत्रयं केशांतर्निधानादि च्छेदनवर्जं सर्वं पूर्ववदेव च्छेदनं तूष्णीमेव लूनकुशपत्रत्रयकेशानां गोमयपिंडोपरि धारणं च । तत उत्तरभागजूटिकायां प्रक्षालनादिक्षुरसं-योजनान्तेषु पूर्ववत्तत्तन्मन्त्रं प्रयोज्य प्रथमभागजूटिकायां

पूर्ववत् तत्तन्मन्त्रों द्वारा भिजोना सेईके काँटेसे चुपचाप बालोंके तीन भाग करना और फिर तीन तीन कुश पिंजूलिकाओंका युक्त करना, क्षुरे (उस्तरे) को हाथमें लेना; बालोंमें उस्तरेका लगाना यह सब काम करे । पश्चात् आगे लिखे 'ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुषम् । यद्देवेषु त्र्यायुषं तन्नो अस्तु त्र्यायुषम्' इस मन्त्रसे पहली जूडाको काट लेवे । फिर पूर्ववत् काटी हुई जूटिका इत्यादिको उसी गोबरके लौंदेपर रख देवे । अनन्तर बची हुई दो जूटिकाओंको तीन तीन कुशोंसे संयुक्तकर छेदनके अतिरिक्त सब कार्य पूर्ववत् करे किन्तु छेदन चुपचाप करना चाहिये । फिर इन केश और पिंजूलिकाको पूर्ववत् गोबरके लौंदेपर रख देवे इसके पश्चात् उत्तर भागके जूडामें बाल भिगोनेसे लेकर बालोंमें छुरेको रखनेतक उन उन मन्त्रोंद्वारा सब कार्य पूर्ववत् करके प्रथम भागके जूडाको

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

छेदने मंत्रः-ॐ येन भूरिश्चरा दिवं ज्योक्च पश्चाद्धि सूर्यम्। तेन ते वपामि ब्रह्मणा जीवातवे जीवनाय सुश्लोक्याय स्वस्तये॥ ततः केशान् गोमयपिण्डोपरि निदध्यात्। ततोऽवशिष्टभागद्वये कुशपत्रत्रये केशान्तर्निधानादिच्छेदनवर्जं सर्वं पूर्ववदेव च्छेदनं तूष्णीं गोमयपिंडोपरि धारणमपि। ततः समस्तं शिरः प्रक्षाल्य त्रिः केशोपरि क्षुरं प्रदक्षिणक्रमेणानुकेशान् भ्रामयति। ॐ यत् क्षुरेण मज्जयता सुपेशसा वप्त्वा वपति केशांश्छिंधि शिरो माऽस्यायुः प्रमोषीः॥ इति मंत्रेण। ततस्ताभिरेवाद्भिः समस्तं शिरः प्रक्षाल्य ॐ अक्षण्वन्परि-

---

आगे लिखे 'ॐ येन भूरिश्चरा दिवं ज्योक्च पश्चाद्धि सूर्यम्। तेन ते वपामि ब्रह्मणा जीवातवे जीवनाय सुश्लोक्याय स्वस्तये' इस मन्त्रसे छेदन करे अर्थात् काट लेवे। फिर उन केश तथा कुशाओंको गोबरके लौंदेपर रख देवे। तत्पश्चात् शेष उत्तरके दो भागोंमें तीन तीन कुशाओंको केशोंके भीतर रखना इत्यादि सारे कार्य पहलेकी नाईं चुपचाप करे और बालोंको काटकर गोबरके लौंदेपर रख देवे। तदनन्तर समस्त शिरको गीला कर अर्थात् जलसे भिजोकर छुरेको दक्षिण क्रमसे तीन वार आगे लिखे 'ॐ यत्क्षुरेण मज्जयता सुपेशसा वप्त्वा वपति केशांश्छिंधि शिरो माऽस्यायुः प्रमोषीः' इस मन्त्रद्वारा शिरके चारों ओर घुमावे फिर उन्ही पहले घृतादि मिले शीतल और उष्ण जलसे सारे शिरको भिगोकर 'ॐ अक्षण्वन्परिवप' ऐसा उच्चा-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वप इति नापिताय क्षुरं प्रयच्छति। अथ नापितः शिखां धृत्वा समस्तशिरोवपनं यथाकुलधर्मं कुर्यात्। तांश्च केशान्नूतनवस्त्रेण प्रतीक्ष्य माता दधिभक्तदुग्धसमन्वितगोमयपिंडोपरि निदध्यात्। इति समाचारः॥ पूर्ववत्पूर्णाहुतिः। ॐ मूर्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत आजातमग्निम्। कविꣳ सम्राजमतिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयंत देवाः स्वाहा॥ इति मंत्रेण पूर्णाहुतिः। तत उपविश्य स्रुवेण भस्मानीय दक्षिणानामिकाग्रगृहीतभस्मना त्र्यायुषं कुर्यात्। ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेरिति ललाटे। ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषमिति ग्रीवायाम्। ॐ यद्देवेषु

रण करके उस छुरे (उस्तरे) को नाईके हाथमें देदेना चाहिये और तब फिर वह नाई कुलधर्मानुसार शिखाको छोडकर शेष समस्त शिरका मुण्डन कर देवे। अनन्तर बालककी माता उन बालोंको नवीन वस्त्रमें लपेटकर दही दूध सहित गोबरके लौंदेपर रख देवे। इस रीतिको सब किसीके पक्षमें समान जानना चाहिये। फिर पूर्ववत् आगे लिखे 'ॐ मूर्द्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत आजातमग्निम्। कविꣳ सम्राजमतिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयन्त देवाः स्वाहा' इस मंत्रसे पूर्णाहुति देनी चाहिये। फिर आसनपर बैठकर स्रुवेसे अग्निकी भस्म ले दाहिने हाथकी अनामिका अंगुलीसे उस भस्मको ॐ 'त्र्यायुषं जमदग्नेः' ऐसा कहकर माथेमें 'ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषं' यह कहकर गलेमें 'ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषं' ऐसा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

त्र्यायुषमिति दक्षिणबाहुमूले । ॐ तन्नो अस्तु त्र्यायुषमिति हृदि । अनेनैव क्रमेण कुमारललाटादावपि । तत्र तत्ते अस्तु इति विशेषः । ततो दूर्वाक्षतादिग्रहणम् । ततस्तान् केशान् सगोमयपिंडान् गोष्ठे सरित्तीरे वा अन्यस्मिन्नुदकान्तरे वा निदध्यात् । तत आचाराद्भोज्यादिकम् । इति चूडाकर्म ॥ ८ ॥

अथ कर्णवेधः ॥ ९ ॥

तत्र तृतीये वर्षे पंचमे वा पुष्येन्दुचित्राहरिरेवत्यन्यतमनक्षत्रसमन्वितारिक्ताऽतिरिक्ततिथिपूर्वाह्णे पिताऽन्यो वा

कहकर दक्षिणबाहुमूलमें और 'तन्नो अस्तु त्र्यायुषं' कहकर यजमान अपने हृदयमें लगावे । फिर इसी रीतिसे पुत्रके भस्म लगानी चाहिये । किन्तु जब पुत्रके भस्म लगावे तब 'तन्नो अस्तु' के स्थानमें 'तत्ते अस्तु' उच्चारण करे फिर दूर्वाक्षतादिरूप आशीर्वाद ग्रहण करे । तत्पश्चात् उन केशोंको गोबरके लौंदे समेत गोशालामें अथवा किसी नदीके किनारे किंवा किसी अन्य जलाशयके समीप रख देवे और फिर अपने कुलकी रीतिके अनुसार ब्राह्मण तथा इष्ट मित्रोंको भोजन करावे ॥

इति श्रीकान्यकुब्जवंशावतंसमुरादाबादनिवासि-स्वर्गीयमिश्रसुखानंदसूरिसूनु-पंडितकन्हैयालालमिश्रकृतभाषाटीकायां चूडाकर्मसंस्कारः समाप्तः ॥ ८ ॥

अब कर्णवेध (कनछेदन) संस्कार लिखा जाता है । तीसरे अथवा पाँचवें वर्षमें पुष्य, इन्दु, चित्रा, हरि, रेवती इन नक्षत्रोंमें कोई नक्षत्रयुक्त, रिक्ता तिथिके अतिरिक्त अन्य तिथिके

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पूर्वाभिमुखोपविष्टः कुमारस्य मधुरं दत्त्वा ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः । स्थिरैरंगैस्तुष्टुवाꣳसस्तनूभिर्व्यशेम हि देवहितं यदायुः । इति मंत्रेण दक्षिणकर्णमभिमंत्र्य ॐ वक्ष्यंतीवेदा गनीगंति कर्णं प्रियꣳ सखायं परिषस्वजाना । योषेव शिंक्ते वितताधि धन्वन्ज्या इयꣳ समने पारयंती ॥ इति मन्त्रेण वामकर्णमभिमंत्रयेत् । ततो मध्यं वीक्ष्य नापितद्वारा वेधयेत् । तस्मिन् समये मधुरादिदानमाचारात् । ततो ब्राह्मणभोजनम् ॥ इति कर्णवेधः ॥ ९ ॥

पूर्वाह्न समयमें पिता अथवा दूसरा घरका कोई वृद्ध पुरुष पूर्वाभिमुख बैठकर बालकके हाथमें कोई मोदकादि (मीठी) वस्तु देकर आगे लिखे ' ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः । स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाꣳसस्तनूभिर्व्यशेम हि देवहितं यदायुः' इस मन्त्रसे दाहिने कानको अभिमन्त्रित करे फिर आगे लिखे मन्त्रसे बायें कानको भी अभिमन्त्रित करे । मन्त्र यथा- 'ॐ वक्ष्यन्तीवेदा गनीगन्ति कर्णं प्रियꣳ सखायं परिषस्वजाना । योषेव शिंक्ते वितताधि धन्वन्ज्या इयꣳ समने पारयन्ती ' अनन्तर कर्णवेधके ठीक मध्यस्थानको देखकर नाईके[1] द्वारा वेध करावे अर्थात् कानको छिदावे कर्णवेधके समय बालकके हाथमें मोदकादिका देना समाचार अर्थात् परंपरा है । तत्पश्चात् ब्राह्मणोंको भोजन कराना चाहिये ॥ इति कर्णवेधः ॥ ९ ॥

---

१ यहां नाईशब्दसे स्वर्णकारको समझना चाहिये ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अथोपनयनम् ॥ १० ॥

तत्र शुद्धसमये रविगुरुचन्द्रतारादिशुद्धौ जन्मतो गर्भतो वाष्टमेऽब्दे वाऽऽनुकूल्ये षोडशसंवत्सराभ्यन्तरे ब्रह्मवर्चसकामस्य पञ्चमेऽप्युदगयन आपूर्यमाणपक्षेऽनध्यायषष्ठीरिक्ताद्यतिरिक्ततिथौ रविगुरुशुक्रान्यतमवारे मध्याह्नादर्वाक् कुमारपित्राभ्युदयिके कृते तदभावे आचार्येणैव कृते ब्राह्मणान्माणवकं च भोजयित्वा सशिखकृतक्षौरं स्नानानंतरं यथाशक्त्यलंकृत्य बहिःशालायां तुषकेशशर्करादिशून्यपरिष्कृतभूमौ आचार्योऽग्निस्थापनं कुर्यात्।

अब उपनयनसंस्कार लिखा जाता है। सूर्य, गुरु, चन्द्र, तारादिकी शुद्धिवाले शुभ समयमें जन्म अथवा गर्भसे आठवें वर्ष अथवा सोलह वर्षके भीतर अपने अनुकूल समयमें और ब्रह्मतेजकी इच्छा करनेवाला पुरुष पाँचवें वर्ष उत्तरायण और शुक्लपक्षयुक्त कालमें अनध्याय षष्ठी रिक्ताके सिवाय अन्यान्य तिथिमें रवि, गुरु, शुक्र इन वारोंके बीच किसी वारमें मध्याह्नसे पहले यज्ञोपवीत करना चाहिये। पिता अथवा पिताके न होनेपर आचार्य नान्दीमुख श्राद्ध करके ब्राह्मण[1] और बालकको भोजन करावे। फिर शिखा धरवाय क्षौर करवाय स्नान करावे और उस बालकको अपनी सामर्थ्यके अनुसार अलंकृत कर बाहर तुष केश धूरि इत्यादि रहित संस्कृत तथा शुद्ध भूमिपर रची हुई शालामें आचार्य अग्नि स्थापन करे। तहां

---

१ अन्यान्य पद्धतियोंमें तीन ब्राह्मणोंको भोजन कराना लिखा है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तत्र हस्तमात्रपरिमितचतुरस्रभूमिकुशकरणकसमूहना-नन्तरं गोमयोदकेनोपलिप्य स्रुवमूलेन प्रागग्रप्रादेश-मात्रमुत्तरोत्तरक्रमेण त्रिरुल्लिख्य उल्लेखनक्रमेणानामि-कांगुष्ठाभ्यां मृदमुद्धृत्य जलेनाभ्युक्ष्य नवीनकांस्य-पात्रेणाग्निमानीय स्वाभिमुखं निदध्यात् । ततः कुमार-माचार्यः शिष्यद्वाराऽग्नेः पश्चाद्दक्षिणपार्श्वेऽवस्थाप-यति । ततः कुमारं बद्धांजलिं संबोधयति-ॐ ब्रह्मचर्यमा-गामिति ब्रूहि इति प्रैषानन्तरं ॐ ब्रह्मचर्यमागामिति कुमार आह । ततः ॐ ब्रह्मचार्यसानीति ब्रूहीत्याचार्येणोक्ते

तहाँ एक हाथ परिमित चौकोन वेदी बनाकर कुशोंसे शुद्ध करनेके अनन्तर गोबरसे उसको लीपना चाहिये । फिर स्रुवेकी जडसे पूर्वको अग्रभागवाली प्रादेशप्रमाण उत्तरोत्तर क्रमसे तीन रेखा खैंचकर रेखाओंके क्रमानुसार अनामिका और अंगुष्ठ इन दो अंगुलियोंद्वारा रेखाओंमेंसे मिट्टी उठाकर ईशानकोनमें डाल देवे फिर जलसे उस वेदीको सेचन करे पीछे नवीन काँसीके पात्रमें अग्नि मंगाकर अपने सन्मुख अर्थात् पश्चिमाभि-मुख स्थापन करे फिर आचार्य उस कुमार (बालक) को अपने शिष्यके द्वारा अग्निके पश्चिम ओर अपनी दाहिनी तरफ बैठाले तदनन्तर कुमारसे हाथ जुडवाकर कहे कि 'ॐ ब्रह्म-चर्यमागाम्' ऐसा उच्चारण कर, इस प्रकार आज्ञा देवे ऐसी आज्ञा देनेपर कुमार कहे कि 'ॐ ब्रह्मचर्यमागाम्' फिर आचार्य 'ॐ ब्रह्मचार्यसानि' ऐसा उच्चारण कर, आचार्यके आज्ञा देने

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ॐ ब्रह्मचार्यसानीति कुमार आह । अथ माणवकमाचार्यो वासः परिधापयति तत्र आचार्यपठनीयो मंत्रः-ॐ येनेन्द्राय बृहस्पतिर्वासः पर्यदधादमृतं तेन त्वा परिदधाम्यायुषे दीर्घायुत्वाय बलाय वर्चसे । ततो माणवकस्य द्विराचमनम् । अथ माणवकस्य वेष्टनत्रयेण तत्प्रवरग्रंथितां मेखलामाचार्यो बध्नाति । तत्र माणवकपठनीयो मंत्रः-ॐ इयं दुरुक्तं परिबाधमाना वर्णे पवित्रं पुनती म आगात् । प्राणापानाभ्यां बलमादधाना स्वसा देवी सुभगा मेखलेयम् ॥ ॐ युवा सुवासाः परिवीत आगात् स उ श्रेयान्भवति जायमानः । तं धीरासः कवय उन्नयंति स्वाध्यो मनसा देवयंतः॥इति वा।तत आचाराद्यज्ञोपवीत-

---

उपरान्त 'ॐ ब्रह्मचार्यसानि' ऐसा कुमार कहे । तत्पश्चात् कुमारको आचार्य आगे लिखे 'ॐ येनेन्द्राय बृहस्पतिर्वासः पर्यदधादमृतं तेन त्वा परिदधाम्यायुषे दीर्घायुत्वाय बलाय वर्चसे' इस मन्त्रसे वस्त्र (कौपीन) पहरावे । फिर कुमारको दो आचमन करावे । इसके अनन्तर तीन लड (लपेट) वाली और प्रवरके अनुसार ग्रन्थिवाली मूंजकी मेखला आचार्य करे । फि[illegible]धदेवे । तब कुमार आगे लिखे मन्त्रोंको उच्चारण उसी जल[illegible]यं दुरुक्तं परिबाधमाना वर्णे पवित्रं पुनती म आगात् । "ॐ आ[illegible]यां बलमादधाना स्वसा देवी सुभगा मेखलेयम् ॥ ॐ यो[illegible]वासाः परिवीत आगात्स उ श्रेयान् भवति जायमानः। ॐ तर[illegible] कवय उन्नयंति स्वाध्यो मनसा देवयंतः ॥ ' अनन्तर

CC-0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सहितभांडाष्टतयं ब्राह्मणेभ्यो दत्त्वा ॐ तत्सदद्यामुकगोत्रः स्वकीयोपनयनकर्मविषयकसत्संस्कारप्राप्त्यर्थे इदं भांडाष्टत (त्र) यं सयज्ञोपवीतं सदक्षिणं यथानामेति। ततो यज्ञोपवीतं परिदधाति माणवकः—ॐ यज्ञोपवीतमिति मंत्रस्य परमेष्ठी ऋषिर्लिङ्गोक्ता देवता त्रिष्टुप् छंदो यज्ञोपवीतपरिधाने विनियोगः। ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्। आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुंच शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः॥ इति मंत्रेण। तत ऐणेयमजिनं तूष्णीं परिधत्ते। ततो माणवककेशपरिमित-

---

परम्परानुसार यज्ञोपवीतयुक्त तथा दक्षिणासहित आठ (२४) पात्र कुमारसे आगे लिखे संकल्पद्वारा ब्राह्मणोंको प्रदान करावे। संकल्पः—अद्यामुकगोत्रः स्वकीयोपनयनकर्मविषयसत्संस्कारप्राप्त्यर्थे इदं भाण्डाष्टत्रयं सयज्ञोपवीतं सदक्षिणं यथानामगोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यः यथांशेन विभज्य दास्ये ॐ तत्सत्। तदनन्तर आचार्य कुमारको यज्ञोपवीत धारण करावे और कुमार आगे लिखे 'ॐ यज्ञोपवीतमिति मन्त्रस्य परमेष्ठीऋषिर्लिङ्गोक्ता देवता त्रिष्टुप् छन्दो यज्ञोपवीतपरिधाने विनियोगः' इस मन्त्रसे यज्ञोपवीतधारणका विनियोग छोडे फिर आगे [illegible]हिनी तरफ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत् सहजं पुरस्तात् 'ॐ ब्रह्मग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः॥' [illegible]ा देवे ऐसी यज्ञोपवीत धारण करना चाहिये। अनन्तर आचा[illegible] फिर आचार्य चुपचाप मृगचर्म प्रदान करे और कुमार उसको धा[illegible]के आज्ञा देने

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पालाशदंडमाचार्यस्तूष्णीं तस्मै प्रयच्छति। तं च यो मे दण्ड इति प्रजापतिर्ऋषिर्दण्डो देवता। यजुर्दण्डग्रहणे विनियोगः। ॐ यो मे दण्डः परापतद्वैहायसोऽधिभूम्याम्। तमहं पुनराददे आयुषे ब्रह्मणे ब्रह्मवर्चसाय इति मन्त्रेण माणवको गृह्णाति। तत आचार्यो वारिणा स्वमञ्जलिं पूरयित्वा कुमारस्यांजलिं तेनैवांजलिजलेन पूरयति—ॐ आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन। महे रणाय चक्षसे॥ ॐ यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः। उशतीरिव मातरः॥ ॐ तस्माऽअरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो

फिर कुमारके केशतक प्रमाणवाले पलाश (ढाक) के दंडको आचार्य चुपचाप कुमारके निमित्त देवे। उसको लेकर कुमार आगे लिखे 'ॐ यो मे दण्ड इति प्रजापतिर्ऋषिर्दंडो देवता। यजुर्दंडग्रहणे विनियोगः' इस मन्त्रसे विनियोग छोडे। पश्चात् आगे लिखे 'ॐ यो मे दंडः परापतद्वैहायसोऽधिभूम्याम्। तमहं पुनराददे आयुषे ब्रह्मणे ब्रह्मवर्चसाय' इस मंत्रसे दण्डको ग्रहण करे। फिर आचार्य प्रथम अपनी अंजली जलसे भरकर पुनः उसी जलसे आगे लिखे मन्त्र द्वारा कुमारकी अंजली भर देवे। "ॐ आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन। महे रणाय चक्षसे। ॐ यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः। उशतीरिव मातरः॥ ॐ तस्माऽअरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जन-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जनयथा च नः ॥ इति ऋग्भिः ॥ ततः सूर्यमुदीक्षस्वेति आचार्यप्रैषानंतरं ॐ तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतꣳ शृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात् ॥ इत्यनेनादित्यं पश्यति। अथ कुमारस्य दक्षिणांसं सहृदयं दक्षिणहस्तेन स्पृशत्याचार्यः—ॐ मम व्रते ते हृदयं दधामि मम चित्तमनु चित्तं ते अस्तु। मम वाचमेकमना जुषस्व बृहस्पतिष्ट्वा नियुनक्तु मह्यम्॥इति मन्त्रेण। ततः कुमारस्य दक्षिणहस्तं गृहीत्वा तं पृच्छति को नामासीति। श्रीअमुकशर्माहं भोः

यथा च नः॥" फिर नीचे लिखे मन्त्रसे आचार्य कुमारको सूर्यके दर्शन करनेकी आज्ञा देवे—" ॐ तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतꣳ शृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात्॥" कुमार वह अञ्जली इन मन्त्रोंके सहित सूर्यके सन्मुख छोड देवे। तदनन्तर कुमारके दाहिने कन्धेकी तरफ अपना दाहिना हाथ डालकर आचार्य कुमारके हृदयको स्पर्श करे और फिर आगे लिखे ' ॐ मम व्रते ते हृदयं दधामि मम चित्तमनु चित्तं ते अस्तु।मम वाचमेकमना जुषस्व बृहस्पतिष्ट्वा नियुनक्तु मह्यम् ' इस मन्त्रको उच्चारण करे। फिर कुमराके दाहिने हाथको पकडकर आचार्य पूछे ' को नामासि ' तब ' श्रीअ-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कुमारपक्षे 'तन्नो' इत्यस्य स्थाने 'तत्ते' इति विशेषः। अथ क्षारलवणमधुमांसादिनिवृत्तिः उद्धृतजलस्नानं दंडकृष्णाजिनधारणं वृक्षारोहणविषमभूमिलंघननग्नस्त्रीनिरीक्षणस्त्रीसंभोगव्यसनव्यावृत्तिरिति ब्रह्मचारिणो नियमाः। तद्दिने ब्रह्मचारी वाग्यतोऽहःशेषं स्थित एव गमयेत्। ततः सायंसंध्यां कृत्वा तस्मिन्नेवाग्नौ पूर्ववत्पर्युक्षणपरि-

---

करके हृदयमें उस भस्मको लगाना चाहिये। किन्तु जब कुमारके व्यायुष करे अर्थात् स्रुवेकी भस्म लगावे तो 'तन्नो अस्तु' के स्थानमें 'तत्ते अस्तु' उच्चारण करना चाहिये। फिर आगे लिखे वाक्योंसे ब्रह्मचारीको उपदेश करे। अर्थात् खारी वस्तु लवण, मधु (मद्य), मांस इनकी निवृत्ति करे अर्थात् इनको भोजन नहीं करना चाहिये। उद्धृत जलसे स्नान करे, दंड और कृष्णाजिन (काले मृगका चर्म) धारण करे, वृक्षपर चढना, ऊँची नीची भूमिको कूदना, नंगी स्त्रीको देखना, स्त्रीके संग मैथुन करना, व्यसन अर्थात् जुए (चौसर, ताश इत्यादि) में आसक्त होना इत्यादि दुष्कर्मोंको त्याग देनाही ब्रह्मचारीके नियम कहे गये हैं। उस यज्ञोपवीतके दिन ब्रह्मचारी मिथ्या भाषणादि त्यागपूर्वक चुपचाप यज्ञोपवीतकर्मसे बचे हुए दिनको बितावे। फिर सायंकालकी सन्ध्या कर उसी वेदिकाकी अग्निमें पूर्ववत् जलद्वारा चारोंओर वेदीका सेचन करै। फिर पूर्वोक्त पांच मन्त्रोंके द्वारा अग्निको एकत्रित करके वाणीको उच्चारण करे अर्थात् यह उपरोक्त

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

समूहने कृत्वा वाचं विसृजेत् । परिसमूहनान्ते शुष्कनिषिद्धेतरेन्धनस्याग्नौ प्रक्षेपः । ततः संध्यामुपास्य प्रतिदिनं सायंप्रातरपि ब्रह्मचारिणा कर्तव्यः । इत्युपनयनसंस्कारः ॥ १० ॥

अथ वेदारंभः ॥ ११ ॥

तत्र कृतनित्यक्रिय आचार्यः कुशैर्हस्तमात्रपरिमितां भूमिं परिसमुह्य तान्कुशानैशान्यां परित्यज्य गोमयोदकेनोपलिप्य स्रुवमूलेन उत्तरोत्तरतः प्रागग्रप्रादेशमात्रं त्रिरुल्लिख्य उल्लेखनक्रमेणानामिकाङ्गुष्ठाभ्यां मृदमुद्धृत्य

कार्य करके तब फिर बातचीत कर सकता है। तिसके उपरान्त अग्निके एकत्रित करनेपर शुद्ध अथ च सूखी समिधा ग्रहणपूर्वक घृतमें भिजोकर पूर्ववत् अग्निमें होम करे । इसी नियमसे ब्रह्मचारीको प्रतिदिन करना चाहिये ॥

इति श्रीकान्यकुब्जवंशावतंसमुरादाबादनिवासि-स्वर्गीयमिश्रसुखानंदसूरिसूनु-पंडितकन्हैयालालमिश्रकृतभाषाटीकायाम्
उपनयनसंस्कारः समाप्तः ॥ १० ॥

अब वेदारंभसंस्कार लिखा जाता है—तहां नित्य कृत्यको समाप्त करके आचार्य एक हाथकी बराबर शुद्ध भूमिमें वेदी बनाकर उसको तीन कुशाओंसे शुद्ध कर उन कुशाओंको ईशानकोनमें डाल देवे । फिर गोबरसे उस वेदीको लीपकर स्रुवेके मूलसे उत्तर उत्तरको पूर्वकी ओर अग्रभागवाली प्रादेशप्रमाण तीन रेखा खैंचे और रेखा खैंचनेके क्रमानुसार अनामिका और अंगुष्ठद्वारा उन रेखाओंसे मिट्टी उठाकर ईशान कोनेमें

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जलेनाभ्युक्ष्य कांस्येनाग्निमानीयाभिमुखमुपसमाधाय पुष्पचन्दनताम्बूलवस्त्राण्यादाय—ॐ अद्यकर्त्तव्यवेदारम्भहोमकर्मणि कृताकृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्म कर्त्तुममुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणमेभिः पुष्पचन्दनताम्बूलवासोभिर्ब्रह्मत्वेन त्वामहं वृणे इति ब्राह्मणं वृणुयात्। ॐ वृतोऽस्मीति प्रतिवचनम्। ॐ यथाविहितं कर्म कुर्वित्याचार्यः। ॐ करवाणीति तेनोक्ते अग्नेर्दक्षिणतः शुद्धमासनं दत्त्वा तदुपरि प्रागग्रान्कुशानास्तीर्य ब्रह्माणमग्निप्रदक्षिणक्रमेण भ्रामयित्वा अस्मिन्कर्मणि त्वं मे ब्रह्मा भवेत्यभिधाय ॐ भवानीति तेनोक्ते ब्रह्माणमुदङ्मुखं तत्रोपवेश्य

फेंक देवे। फिर जलद्वारा वेदीको सेचन कर कांसीके पात्रमें अग्नि लाय अपने समीप स्थापन करे। अनन्तर पुष्प, चन्दन, ताम्बूल, वस्त्र लेकर आगे लिखे हुए संकल्पसे ब्रह्माका वरण करे—'ॐ अद्य कर्तव्यवेदारम्भहोमकर्मणि कृताकृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्म कर्तुममुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणमेभिः पुष्पचन्दनताम्बूलवासोभिर्ब्रह्मत्वेन त्वामहं वृणे' तब ब्रह्मा 'ॐ वृतोऽस्मि' कहकर उस दक्षिणाको ले लेवे। फिर 'ॐ यथाविहितं कर्म कुरु' ऐसा आचार्य कहे। तब 'ॐ करवाणि' ऐसा ब्रह्माके कहनेपर अग्निके दक्षिणकी ओर शुद्ध आसन बिछावे और उस आसनपर पूर्वाग्र कुशाओंको बिछाय ब्रह्माको अग्निकी प्रदक्षिणा कराय 'अस्मिन्कर्मणि त्वं मे ब्रह्मा भव' ऐसा कहे। तब ब्रह्माके 'ॐ भवानि' ऐसा कहनेपर उसको उत्तर मुख

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्रणीतापात्रं पुरतः कृत्वा वारिणा परिपूर्य कुशैराच्छाद्य ब्रह्मणो मुखमवलोक्याग्नेरुत्तरतः कुशोपरि निदध्यात्। ततः परिस्तरणम्-बर्हिषश्चतुर्थभागमादाय आग्नेय्यादीशानान्तं ब्रह्मणोऽग्निपर्यन्तं नैर्ऋत्याद्वायव्यान्तम् अग्नितः प्रणीतापर्यन्तम्। ततोऽग्नेरुत्तरतः पश्चिमदिशि पवित्रच्छेदनार्थं कुशत्रयं पवित्रकरणार्थं साग्रमनन्तर्गर्भं कुशपत्रद्वयं प्रोक्षणीपात्रमाज्यस्थाली संमार्जनकुशाः उपयमनकुशाः समिधस्तिस्रः स्रुवः आज्यं पूर्णपात्रं पवित्रच्छेदनकुशानां पूर्वपूर्वदिशि क्रमेणासादनीयम्। ततः

करके उस आसनपर बैठाल देवे। फिर प्रणीतापात्रको आगे रक्खे और उसको जलसे भरकर कुशाओंद्वारा आच्छादन कर देवे। पश्चात् ब्रह्माके मुखको देखकर अग्निके उत्तरकी ओर कुशाओंके ऊपर रख देवे। तदनन्तर परिस्तरण करना चाहिये। मुट्ठीभर अथवा सौ कुशाओंको लेकर उसके चार भाग करे। पहिला भाग अग्निकोनसे लेकर ईशान कोनतक, दूसरा भाग ब्रह्मासे अग्नि (वेदी) तक, तीसरा भाग नैर्ऋत्यसे वायुकोनतक और चौथा भाग अग्निसे प्रणीतापात्रतक बिछा देना चाहिये। फिर अग्निके उत्तरसे पश्चिम दिशामें पवित्र छेदनके लिये तीन कुशा रक्खे और पवित्र बनानेके लिये अग्रभागसहित तथा बिचले पत्तेसे रहित दो कुशपत्र रक्खे। अनन्तर प्रोक्षणीपात्र, आज्यस्थाली, पाँच संमार्जन कुशा, तीनसे तेरहतक उपयमन कुशा, तीन समिधा, स्रुवा, घृत, पूर्णपात्र इन सब वस्तुओंको पवित्रच्छेदन कुशाओंसे क्रमशः पूर्वपूर्वकी ओर रखता जाय।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पवित्रच्छेदनकुशैः पवित्रे छित्त्वा सपवित्रकरेण प्रणीतोदकं त्रिः प्रोक्षणीपात्रे निधाय द्वाभ्यामनामिकांगुष्ठाभ्यामुत्तराग्रे पवित्रे गृहीत्वा त्रिरुत्पवनम्। ततः प्रोक्षणीपात्रं वामहस्ते गृहीत्वा दक्षिणहस्तानामिकाङ्गुष्ठाभ्यां त्रिरुद्दिङ्गनम्। ततः प्रणीतोदकेन प्रोक्षणीपात्रमभ्युक्ष्य प्रोक्षणीजलेन यथासादितवस्तून्यभिषिच्याग्निप्रणीतयोर्मध्ये प्रोक्षणीपात्रं निदध्यात्। ततः आज्यस्थाल्यामाज्यं निरूप्याधिश्रयणम्। ततः कुशं प्रज्वाल्याज्यस्याग्नेश्चोपरि प्रदक्षिणं भ्रामयित्वा अग्नौ तत्प्रक्षेपः। ततस्त्रिः स्रुवप्रतपनं संमार्जनकुशानामग्रैरन्तरतो मूलैर्बाह्यतः स्रुवं संमृज्य

फिर पवित्रच्छेदनके कुशाओंसे पवित्रोंको छेदन करे। पीछे पवित्र हाथमें लेकर प्रणीताके जलको प्रोक्षणीपात्रमें डाले। पश्चात् अनामिका तथा अंगुष्ठ इन दो अंगुलियोंसे पवित्रोंको ग्रहण कर तीन बार प्रोक्षणीपात्रका जल ऊपरको उछाले। फिर प्रोक्षणीपात्रको बायें हाथमें लेकर दाहिने हाथकी अनामिका और अंगुष्ठ इन दो अंगुलियोंसे पवित्रको पकडकर तीन बार प्रोक्षणीके जलसे ऊपरको सेचन करे अनन्तर प्रणीताके जलसे प्रोक्षणीपात्रको सेचनकर प्रोक्षणीके जलसे पूर्व स्थापित सब वस्तुओंको सेचन करे। फिर प्रोक्षणीपात्रको प्रणीता और अग्निके बीचमें रख देवे फिर आज्यस्थालीमें घृत डालकर अग्निपर रख देवे पश्चात् एक कुशको बाल लेवे और उसको दक्षिणक्रमसे घृत तथा अग्निके ऊपर घुमाकर अग्निमें डालदेवे। फिर स्रुवेको अग्निमें तीन वार तपावे और संमार्जनकुशाओंके अग्रभागसे भीतर

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्रणीतोदकेनाभ्युक्ष्य पुनस्त्रिः प्रतप्य दक्षिणतो निद-
ध्यात्। ततः आज्यमग्निप्रदक्षिणं भ्रामयित्वाऽवतार्याग्ने
निदध्यात्। ततः आज्ये प्रोक्षणीवदुत्पवनम्। अवेक्ष्य
सत्यपद्रव्ये तन्निरसनं ततः प्रोक्षण्युत्पवनं तत उत्थायोप-
यमनकुशानादाय प्रजापतिं मनसा ध्यात्वा तूष्णीमग्नौ
घृताक्ताः समिधस्तिस्रः क्षिपेत्। तत उपविश्य सपवित्र-
प्रोक्षण्युदकेन प्रदक्षिणक्रमेणाग्निं पर्युक्ष्य प्रणीतापात्रे पवित्रे
निधाय ब्रह्मणाऽन्वारब्धः पातितदक्षिणजानुः समिद्ध-

और मूलभागसे बाहर उस स्रुवेको शुद्ध करे। अनन्तर प्रणीताके जलसे उस स्रुवेको और पुनर्वार तीन वार तपाकर अग्निके दक्षिणकी ओर रख देवे। फिर घृतको अग्निसे उतारे और अग्निके चारोंतरफ घुमाकर अपने आगे रख लेवे अनंतर पवित्रोंसे घृतको प्रोक्षणीपात्रकी नाईं तीनवार उछाले और देखे यदि उसमें मक्खी इत्यादि कोई अपवित्र वस्तु पडी हो तो उसको निकालकर फेंक देवे। फिर पवित्रोंसे प्रोक्षणीपात्रके जलको तीन वार उछाले इसके पीछे खडा होजाय और बांये हाथमें उपयमनकुशाओंको लेकर मनसे प्रजापतिका ध्यान करता हुआ चुपचाप घृतसे भिजोई हुई तीनों समिधाओंको स्वाहाशब्दके साथ अग्निमें डाल देवे। फिर आसनपर बैठकर पवित्रोंके सहित प्रोक्षणीके जलको हाथमें लेकर दक्षिण क्रमसे अग्निके चारोंओर सेचन करे और पवित्रोंको प्रणीतापात्रमें रख देवे। अनन्तर ब्रह्माके साथ एकत्रित हो दाहिनी जानुको नवाय जलती हुई अग्निमें होम

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तमेऽग्नौ जुहुयात्। तत्र प्रथमाहुतिचतुष्टये स्रुवावस्थितहुतशेषघृतस्य प्रोक्षणीपात्रे प्रक्षेपः। ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये०। इति मनसा। ॐ इंद्राय स्वाहा इदमिंद्राय०। इत्याघारौ। ॐ अग्नये स्वाहा इदमग्नये०। ॐ सोमाय स्वाहा इदं सोमाय०। इत्याज्यभागौ। ततः प्राकृतोऽनन्वारब्धकर्तृको होमः। ॐ अन्तरिक्षाय स्वाहा इदमन्तरिक्षाय०। ॐ वायवे स्वाहा इदं वायवे०। ॐ ब्रह्मणे स्वाहा इदं ब्रह्मणे०। ॐ छन्दोभ्यः स्वाहा इदं छन्दोभ्यः०। एताः सामान्याहुतयः। ॐप्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये० इति मनसा। ॐ देवेभ्यः

करे। प्रथम चार आहुति देनेके समय जो स्रुवेमें घृतादि शेष रहे उसको प्रोक्षणीपात्रमें डाल देवे। आहुति मन्त्र आगे लिखे हैं(उपरोक्त चार आहुतियोंमें पहिली दो आहुति आघार और दूसरी दो आहुति आज्यभाग कहलाती हैं। आघारकी पहली आहुति मानसिक अर्थात् मनसे मन्त्र बोलकर दी जाती है।) ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये० इति मनसा। ॐ इन्द्राय स्वाहा इदमिन्द्राय०। इत्याघारौ। ॐ अग्नये स्वाहा इदमग्नये०। ॐ सोमाय स्वाहा इदं सोमाय०। इत्याज्यभागौ। ततः प्राकृतोऽनन्वारब्धकर्तृको होमः। अन्तरिक्षाय स्वाहा इदमन्तरिक्षाय। ॐ वायवे स्वाहा इदं वायवे०। ॐ ब्रह्मणे स्वाहा इदं ब्रह्मणे०। ॐ छन्दोभ्यः स्वाहा इदं छन्दोभ्यः०। एताः सामान्याहुतयः। ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये०। इति मनसा।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

स्वाहा इदं देवेभ्यः० । ॐ ऋषिभ्यः स्वाहा इदम् ऋषिभ्यः । ॐ श्रद्धायै स्वाहा इदं श्रद्धायै० । ॐ मेधायै स्वाहा इदं मेधायै० । ॐ सदसस्पतये स्वाहा इदं सदसस्पतये० । ॐअनुमतये स्वाहा इदमनुमतये० । ततोऽन्वारब्धकर्तृको होमः । तत्तदाहुत्यनन्तरं स्रुवावस्थितहुतशेषघृतस्य प्रोक्षणीपात्रे प्रक्षेपः । ॐ भूः स्वाहा इदमग्नये० । ॐ भुवः स्वाहा इदं वायवे० । ॐ स्वः स्वाहा इदं सूर्याय० । एता महाव्याहृतयः । ॐ त्वन्नो अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडो अव यासिसीष्ठाः । यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषाꣳसि प्रमुमुग्ध्यस्मत्स्वाहा इदमग्नीवरुणाभ्यां० । ॐ स त्वन्नो अग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठो

ॐ देवेभ्यः स्वाहा इदं देवेभ्यः० । ॐ ऋषिभ्यः स्वाहा इदम् ऋषिभ्यः० । ॐ श्रद्धायै स्वाहा इदं श्रद्धायै० । ॐ मेधायै स्वाहा इदं मेधायै० । ॐ सदसस्पतये स्वाहा इदं सदसस्पतये० । ॐ अनुमतये स्वाहा इदमनुमतये० । ततोऽन्वारब्धकर्त्तृको होमः । (आहुतियोंके अनन्तर स्रुवेमें शेष रहे घृतादिको प्रोक्षणीपात्रमें डालते जाना चाहिये) ॐ भूः स्वाहा इदमग्नये० । ॐ भुवः स्वाहा इदं वायवे० । ॐ स्वः स्वाहा इदं सूर्याय० । एताः महाव्याहृतयः । ॐ त्वन्नो अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडो अव यासिसीष्ठाः । यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषाꣳसि प्रमुमुग्ध्यस्मत्स्वाहा इदमग्नीवरुणाभ्याम् । ॐ स त्वन्नो अग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठो अस्या

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अस्या उषसो व्युष्टौ। अव यक्ष्व नो वरुणꣳ रराणो वीहि मृडीकꣳ सुहवो न एधि स्वाहा इदमग्नीवरुणाभ्यां०। ॐ अयाश्चाग्नेऽस्यनभिशस्तिपाश्च सत्वमित्वमया असि। अयानो यज्ञं वहास्ययानो धेहि भेषजꣳ स्वाहा इदमग्नये०। ॐ ये ते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता महांतः। तेभिर्नो अद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च०। ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यमꣳ श्रथाय। अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा इदं वरुणाय०। इति सर्वप्रायश्चित्तसंज्ञकाः। ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये०। इति मनसा। इति प्राजापत्यम्।

उषसो व्युष्टौ। अव यक्ष्व नो वरुणꣳ रराणो वीहि मृडीकꣳ सुहवो न एधि स्वाहा इदमग्नीवरुणाभ्याम्। ॐ अयाश्चाग्नेऽस्यनभिशस्तिपाश्च सत्वमित्वमया असि। अयानो यज्ञं वहास्ययानो धेहि भेषजꣳ स्वाहा इदमग्नये०। ॐ ये ते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता महान्तः। तेभिर्नो अद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च०। ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यमꣳ श्रथाय। अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा इदं वरुणाय०। इति सर्वप्रायश्चित्तसंज्ञकाः। ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये०। इति

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा इदमग्नये स्विष्टकृते० । इति स्विष्टकृद्धोमः । ततः संस्रवप्राशनम् । तत आचम्य ॐ अद्य कृतैतद्वेदारंभहोमकर्मणि कृताकृतावेक्षणरूप-ब्रह्मकर्मप्रतिष्ठार्थमिदं पूर्णपात्रं प्रजापतिदैवतममुकगोत्रा-यामुकशर्मणे ब्राह्मणाय ब्रह्मणे दक्षिणां तुभ्यमहं संप्रददे इति दक्षिणां दद्यात् । ॐ स्वस्तीति प्रतिवचनम् । ततो ब्रह्मग्रंथिविमोकः । ॐ सुमित्रिया न आप ओषधयः सन्तु इति पवित्राभ्यां प्रणीताजलमानीय तेन शिरः संमृज्य ॐ दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु योऽस्मान्द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः । इति मंत्रेण ऐशान्यां प्रणीतां न्युब्जीकुर्यात् ।

मनसा । इति प्राजापत्यम् । ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा इद-मग्नये स्विष्टकृते० । इसके उपरान्त प्रोक्षणीपात्रके घृतमिश्रित जलका प्राशन करना चाहिये । फिर शुद्ध जलसे आचमन करे अनन्तर आगे लिखे संकल्पको उच्चारणपूर्वक पूर्णपात्रका दान करके ब्रह्माको देवे—' ॐ अद्य कृतैतद्वेदारम्भहोमकर्मणि कृताकृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्मप्रतिष्ठार्थमिदं पूर्णपात्रं प्रजापतिदैवत-ममुकगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय ब्रह्मणे दक्षिणां तुभ्यमहं संप्र-ददे ' तब ब्रह्मा उसको ' ॐ स्वस्ति ' ऐसा कहकर ग्रहण करे। फिर ब्रह्मग्रंथिको खोल देना चाहिये । तत्पश्चात् आगे लिखे ' ॐ सुमित्रिया न आप ओषधयः सन्तु ' इस मन्त्रद्वारा पवि-त्रोंसे प्रणीतापात्रका जल लेकर अपने मस्तकपर मार्जन करे । तदुपरान्त आगे लिखे ' ॐ दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु योऽस्मान्द्वेष्टि यश्च वयं द्विष्मः ' इस मन्त्रद्वारा प्रणीतापात्रको ईशान-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तत आस्तरणबर्हिरानीय घृतेनाभिघार्य क्रमेण हस्तेनैव जुहुयात्। ॐ देवा गातुविदो गातुं वित्वा गातुमित मनसस्पत इमं देव यज्ञꣳ स्वाहा वाते धाः स्वाहा। इति बर्हिर्होमः। ततः काश्मीरगमनम्। तत इष्टांशके वेदारम्भं गुरुः कारयेत्। तत्र क्रमः—ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात् ॐ॥ इति प्रणवान्तं पठित्वा पंक्तिनमस्कारं च कारयित्वा ॐ समिधाऽग्निं दुवस्यत घृतैर्बोधयतातिथिम्। आस्मिन्हव्या जुहोतन॥ ॐ सुसमिद्धाय शोचिषे। इति कण्डिकान्तरं वा फक्किकां वा पाठयेत्। ततः सप्रणवं

कोनमें उलट देवे। फिर पूर्व बिछाई हुई कुशाओंको ग्रहणपूर्वक घृतमें बोरकर आगे लिखे 'ॐ देवा गातुविदो गातुं वित्वा गातुमित मनसस्पत इमं देव यज्ञꣳ स्वाहा वाते धाः स्वाहा' इस मन्त्रसे अग्निमें होम कर देवे। इसके पीछे विद्याध्ययनके निमित्त ब्रह्मचारीको काश्मीर (अथवा काशी) भेजदेना चाहिये। फिर लग्नके उपस्थित होनेपर गुरु ब्रह्मचारीको वेदाध्ययन कराना आरंभ करावे। उसका क्रम यह है—"ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नःप्रचोदयात् ॐ" इस प्रकार प्रणवान्त गायत्री पढाकर नमस्कार करावे फिर आगे लिखे हुए 'ॐ समिधाऽग्निं दुवस्यत घृतैर्बोधयतातिथिम्। आस्मिन् हव्या जुहोतन। ॐसुसमिद्धाय शोचिषे' इस मन्त्रको उच्चारण करावे। अनन्तर 'ॐ सुसमिद्धाय शोचिषे' इस कण्डिका अथवा अन्य

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

स्वस्ति वाचयित्वा उत्थाय फलपुष्पसमन्वितब्रह्मचारि-दक्षिणकरस्पृष्टेन घृतपूर्णेन पूर्णाहुतिं दद्यात्—ॐ मूर्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत आजातमग्निम् । कविꣳ सम्राजमतिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयन्त देवाः इति पूर्णाहुतिः । तत उपविश्य स्रुवेण भस्मानीय दक्षिणानामिकाग्रगृहीतभस्मना त्र्यायुषं जमदग्नेरिति ललाटे ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषमिति ग्रीवायाम्।ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषम् इति दक्षिणबाहुमूले । ॐ तन्नो अस्तु त्र्यायुषमिति

किसी कण्डिकाको वा किसी शास्त्रकी फक्किकाको पढावे फिर प्रणव (ॐ) का उच्चारण करा देवे । और पीछे स्वस्तिवाचन करावे । तदनन्तर उठकर स्रुवेमें फल पुष्प तथा घृत भरकर ब्रह्मचारीका हाथ स्पर्श कराय आगे लिखे ' ॐ मूर्द्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत आजातमग्निम् । कविꣳ सम्राजमतिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयन्त देवाः ' इस मन्त्रसे पूर्णाहुति करानी चाहिये । पश्चात् आसनपर बैठकर स्रुवेसे होमकी भस्म ले दक्षिण हाथकी अनामिका अंगुलीद्वारा फिर उस स्रुवेसे भस्म लेकर ' ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः' ऐसा कहकर माथेमें 'ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषं' यह उच्चारण करके गलेमें ' ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषं ' यह कहकर दक्षिणबाहुमूलमें और ' तन्नो अस्तु त्र्यायुषं ' ऐसा कहकर हृदयमें लगानी चाहिये । फिर इसी क्रमसे ब्रह्मचारीके त्र्यायुष करे अर्थात् भस्म लगावे किन्तु

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हृदि । अनेनैव क्रमेण ब्रह्मचारिललाटादावपि । तत्र तत्ते इति विशेषः । इति वेदारंभः ॥ ११ ॥

अथ समावर्तनम् ॥ १२ ॥

तत्र शुभे दिने प्रह्वीभूय आचार्य स्नास्यामीति कुमार आचार्यं भाषते । तत्र स्नाहीत्याचार्यः ॥ ततो ब्रह्मचारिणि आचार्यसन्निहितदक्षिणदिशि उपविष्टे कृतस्नानादिराचार्यः कुशैर्हस्तमात्रां भूमिं परिसमुह्य तानैशान्यां परित्यज्य गोमयोदकेनोपलिप्य स्रुवमूलेनोत्तरोत्तरक्रमेण त्रिरुल्लिख्य उल्लेखनक्रमेण मृदमुद्धृत्य जलेनाभ्युक्ष्य

जब ब्रह्मचारीके लगावे तो ' तन्नो अस्तु ' के स्थानमें ' तत्ते अस्तु ' उच्चारण करे ॥ इति वेदारम्भसंस्कारः ॥ ११ ॥

अब समावर्तन संस्कार लिखा जाता है—किसी शुभ दिनमें नम्र होकर ब्रह्मचारी आचार्यसे प्रार्थना करे कि—' मैं स्नान करूंगा ' तब आचार्य ब्रह्मचारीसे कहे कि ' स्नाहि ' अर्थात् स्नान कर । फिर आचार्यके दाहिनी ओर समीपमें ब्रह्मचारीके बैठ जानेपर जो कि स्नानादि नित्यकर्मसे निश्चिन्त हो चुका है ऐसा आचार्य शुद्धभूमिमें इस प्रमाण वेदी रचकर उसको तीन कुशाओंसे शुद्ध कर उन कुशाओंको ईशानकोनमें डाल देना चाहिये । फिर गोबरसे वेदीको लीपकर स्रुवेके मूलसे क्रमशः उत्तरकी ओरको तीन रेखा खैंचकर रेखा खैंचनेके क्रमानुसार मिट्टी उठाकर जलसे सेचनपूर्वक कांसीके पात्रमें अग्नि

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कांस्येनाग्निमानीय प्रत्यङ्मुखं निदध्यात्। ततः पुष्प-चन्दनताम्बूलवासांस्यादाय ॐ अद्यामुकस्य कर्तव्य-समावर्तनहोमकर्मणि कृताकृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्म कर्तु-ममुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणमेभिः पुष्पचन्दनताम्बूल-वासोभिर्ब्रह्मत्वेन त्वामहं वृणे। वृतोऽस्मीति प्रति-वचनम्। यथाविहितं कर्म कुर्वित्यभिधाय ॐ करवाणीति तेनोक्ते अग्नेर्दक्षिणतः शुद्धमासनं दत्त्वा तदुपरि प्राग-ग्रान् कुशानास्तीर्यास्मिन्कर्मणि त्वं मे ब्रह्मा भवेत्यभि-धाय ॐ भवानीति तेनोक्ते ब्राह्मणमुदङ्मुखं तत्रोपवेश्य ततः प्रणीतापात्रं पुरतः कृत्वा वारिणा परिपूर्य कुशै-

---

लाय उत्तराभिमुख स्थापित करे।पीछे पुष्प, चन्दन,ताम्बूल और वस्त्र लेकर आगे लिखे 'ॐ अद्यामुकस्य कर्तव्यसमावर्तनहोम-कर्मणि कृताकृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्म कर्तुममुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणमेभिः पुष्पचन्दनताम्बूलवासोभिर्ब्रह्मत्वेन त्वामहं वृणे' इस संकल्पद्वारा ब्रह्माका वरण करे। तब ब्रह्मा 'वृतोऽस्मि' ऐसा उच्चारण करके उस सामग्रीको लेवे॥फिर 'यथाविहितं कर्म कुरु' ऐसा आचार्य कहे। अनन्तर 'ॐ करवाणि' ऐसा ब्रह्माके कहने-पर अग्निके दक्षिणकी ओर शुद्ध आसन बिछाय उसके ऊपर पूर्वको जिनका अग्रभाग हो ऐसे कुशा बिछाकर इस समावर्तन संस्कारमें आप मेरे ब्रह्मा हूजिये ऐसा कहकर ब्रह्माके 'ॐ भवानि' कहनेपर उसको उत्तरमुख करके उस आसनपर बैठाल देना चाहिये। फिर प्रणीतापात्रको आगे रखकर जलसे परि-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

राच्छाद्य ब्रह्मणो मुखमवलोक्याऽग्नेरुत्तरतः कुशोपरि निदध्यात्। ततः परिस्तरणम्—बर्हिषश्चतुर्थभागमादायाग्नेयादीशानान्तं ब्रह्मणोऽग्निपर्यंतं नैर्ऋत्याद्वायव्यान्तमग्नितः प्रणीतापर्यंतम्। ततोऽग्नेरुत्तरतः पश्चिमदिशि पवित्रच्छेदनार्थं कुशत्रयं पवित्रकरणार्थं साग्रमनन्तर्गर्भं कुशपत्रद्वयं प्रोक्षणीपात्रं आज्यस्थाली संमार्जनार्थं कुशा उपयमनकुशाः समिधस्तिस्रः स्रुव आज्यं पूर्वपूर्वदिशि क्रमेणासादनीयम्। ततः पवित्रच्छेदनकुशैः पवित्रे छित्त्वा

पूर्ण करे और उसको कुशाओंसे ढककर ब्रह्माके मुखको देख अग्निके उत्तरकी ओर कुशाओंपर रख देवे। फिर परिस्तरण करना चाहिये। मुट्ठीभर अथवा सौ कुशा लेकर उसके चार भाग करे। पहिला भाग अग्निकोनसे ईशानकोनतक, दूसरा भाग ब्रह्मासे अग्नि (वेदी) तक, तीसरा भाग नैर्ऋतकोनसे वायुकोनतक और चौथा भाग अग्निसे प्रणीतापर्यन्त बिछा देना चाहिये। फिर अग्निके उत्तर पश्चिमदिशामें पवित्र छेदनके लिये तीन कुशा रक्खे और पवित्र बनानेके निमित्त अग्रभाग सहित तथा बीचके पत्तेसे रहित अर्थात् जिसके भीतर अन्य कुश पत्र न हो ऐसे दो कुशपत्र रक्खे। फिर प्रोक्षणीपात्र, आज्यस्थाली, पांच संमार्जन कुशा, तीनसे तेरहतक उपयमनकुशा, तीन समिधा, स्रुवा, घृत इन सब वस्तुओंको पूर्वपूर्वकी तरफ रखताजावे। तत्पश्चात् पवित्र छेदनकी कुशाओंसे पवि-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सपवित्रकरेण प्रणीतोदकं त्रिः प्रोक्षणीपात्रे निधाया-
नामिकाङ्गुष्ठाभ्यां पवित्रे गृहीत्वा त्रिरुत्पूय प्रोक्षणी-
पात्रं वामकरेणादायानामिकांगुष्ठगृहीतपवित्राभ्यां तज्जलं
किंचित्रिः प्रक्षिप्य प्रणीतोदकेन प्रोक्षणीमभ्युक्ष्य प्रोक्षणी-
जलेन यथासादितवस्तून्यभिषिच्याग्निप्रणीतयोर्मध्ये
प्रोक्षणीपात्रं निदध्यात् । तत आज्यस्थाल्यामाज्य-
निर्वापः अधिश्रयणम् । ततस्तृणं प्रज्वाल्याज्यस्याग्नेश्चो-
पारि प्रदक्षिणं भ्रामयित्वा वह्नौ तत् प्रक्षिप्य स्रुवं त्रिः
प्रतप्य संमार्जनकुशानामग्रैरन्तरतो मूलैर्बाह्यतः स्रुवं

त्रोंको छेदन करे और पवित्रयुक्त हाथसे प्रणीतापात्रका जल लेकर प्रोक्षणीमें तीन बार रक्खे। फिर अनामिका और अंगुष्ठ इन दो अंगुलियोंसे पवित्रोंको ग्रहण करके प्रोक्षणीके जलको तीन बार उछाले। पश्चात् प्रोक्षणीपात्रको बायें हाथमें उठाकर दाहिने हाथकी अनामिका और अंगुष्ठ इन दो अंगुलियोंसे पवित्रोंको ग्रहणपूर्वक प्रोक्षणीके जलको तीन बार फेंके। प्रणीताके जलसे प्रोक्षणीको सेचन करे। फिर प्रोक्षणीके जल-द्वारा पूर्वस्थापित वस्तुओंको सेचन कर प्रोक्षणीपात्रको अग्नि और प्रणीताके बीचमें रख देवे। इसके पीछे आज्यस्थालीमें घृतको रक्खे और फिर उस आज्यस्थालीको उठाकर वेदीकी अग्निमें स्थापन करे। फिर एक कुशा बाल लेवे और उसको घृत तथा अग्निके चारों तरफ घुमाकर अग्निमेंही डाल देवे। अनन्तर स्रुवेको अग्निसे तीन बार तपाकर संमार्जनकुशाओंके

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

संमृज्य प्रणीतोदकेनाभ्युक्ष्य पुनः प्रतप्य स्वस्य दक्षिणतो निदध्यात्। तत आज्यमग्निं प्रदक्षिणं भ्रामयित्वाऽवतार्य्य त्रिः प्रोक्षणीवदुत्पूयावेक्ष्य सत्यपद्रव्ये तन्निरसनं कृत्वा पुनः पूर्ववत्प्रोक्षण्युत्पवनम्। तत उत्थायोपयमनकुशान्वामहस्ते कृत्वा प्रजापतिं मनसा ध्यात्वा तूष्णीमग्नौ घृताक्ताः समिधस्तिस्रः क्षिपेत्। तत उपविश्य सपवित्रप्रोक्षण्युदकेन प्रदक्षिणक्रमेणाग्निं पर्य्युक्ष्य प्रणीतापात्रे पवित्रे निधाय पातितदक्षिणजानुः समिद्ध-

---

अग्रभागसे भीतर और मूलभागसे बाहर शुद्ध कर प्रणीतापात्रके जलसे सेचन करे फिर दूसरी बार तपाकर वेदीके दाहिनी तरफ रख देवे। घृतको अग्निसे उतार लेवे और उसको अग्निके चारों तरफ घुमाता हुआ आगे रखकर प्रोक्षणीकी नाईं पवित्रोंसे तीन वार उछाले और देखे यदि उसमें मक्खी इत्यादि कोई अशुद्ध वस्तु पडी हो तो उसको निकालकर बाहर फेंक देवे। फिर पूर्ववत् प्रोक्षणीके जलको पवित्रोंसे उछाले और फिर खडा होकर उपयमन कुशाओंको बायें हाथमें ले मनसे प्रजापतिका ध्यान करता हुआ चुपचाप तीनों समिधाओंको घृतमें बोरकर स्वाहाशब्दके साथ अग्निमें डाल देवे। फिर पीछे आसनपर बैठकर पवित्रसहित प्रोक्षणीके जलको दाहिने हाथमें लेकर दक्षिणक्रमसे अग्निके चारों ओर सेचन करे फिर पवित्रोंको प्रणीतापात्रमें रख देवे। पश्चात् दाहिनी जानुको

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तमेऽग्नौ ब्रह्मणाऽन्वारब्धः स्रुवेणाज्याहुतीर्जुहुयात् । तत्र प्रथमाहुतिचतुष्टये प्रत्याहुत्यनन्तरं स्रुवावस्थितहुत-शेषघृतस्य प्रोक्षणीपात्रे प्रक्षेपः । ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये० । इति मनसा । ॐ इंद्राय स्वाहा इद-मिंद्राय० । इत्याघारौ । ॐ अग्नये स्वाहा इदमग्नये० । ॐ सोमाय स्वाहा इदं सोमाय० । इत्याज्यभागौ । ततोऽनन्वारब्धकर्तृकहोमः । ॐ अन्तरिक्षाय स्वाहा इदमन्तरिक्षाय० । ॐ वायवे स्वाहा इदं वायवे० । ॐ ब्रह्मणे स्वाहा इदं ब्रह्मणे० । ॐ छंदोभ्यः स्वाहा इदं छंदोभ्यः । ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये० ।

नवायकर ब्रह्मासे एकत्रित हो प्रज्वलित अग्निमें स्रुवेके द्वारा घृतकी आहुति देवे । पहली चार आहुतियोंमें प्रत्येक आहुतिके अनन्तर स्रुवेमें शेष रहे हुए घृतको प्रोक्षणीपात्रमें डालता जाय(यहांका शेष विवरण पीछे कई वार लिखा जाचुका है वहाँ देख लेना) आहुतिके मन्त्र निम्न लिखित हैं–' ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये न मम । इति मनसा । ॐ इन्द्राय स्वाहा इदमिन्द्राय न मम । इत्याघारौ । ॐ अग्नये स्वाहा इद-मग्नये० । ॐ सोमाय स्वाहा इदं सोमाय० । इत्याज्यभागौ (उनसे आगेकी आहुतियाँभी ब्रह्मासे अयुक्त होकरही दी जाती हैं) ॐ अन्तरिक्षाय स्वाहा इदमन्तरिक्षाय० । ॐ वायवे स्वाहा इदं वायवे० । ॐ ब्रह्मणे स्वाहा इदं ब्रह्मणे० । ॐ छन्दोभ्यः स्वाहा इदं छन्दोभ्यः० । ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये० ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

इति मनसा। ॐ देवेभ्यः स्वाहा इदं देवेभ्यः। ॐ ऋषिभ्यः स्वाहा इदं ऋषिभ्यो०। ॐ श्रद्धायै स्वाहा इदं श्रद्धायै०। ॐ मेधायै स्वाहा इदं मेधायै०। ॐ सदसस्पतये स्वाहा इदं सदसस्पतये०। ॐ अनुमतये स्वाहा इदमनुमतये०। ततो ब्रह्मणाऽन्वारब्धो जुहुयात्। अत्राहुतिदशतये तत्तदाहुत्यनन्तरं स्रुवावस्थिताज्यस्य प्रोक्षणीपात्रे प्रक्षेपः। ॐ भूः स्वाहा इदमग्नये०। ॐ भुवः स्वाहा इदं वायवे०। ॐ स्वः स्वाहा इदं सूर्याय०। एता महाव्याहृतयः। ॐ त्वन्नो अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडो अव यासिसीष्ठाः। यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषाꣳसि प्रमुमुग्ध्यस्मत्स्वाहा इदमग्नीवरु-

---

इति मनसा। ॐ देवेभ्यः स्वाहा इदं देवेभ्यः०। ॐ ऋषिभ्यः स्वाहा इदं ऋषिभ्यः०। ॐ श्रद्धायै स्वाहा इदं श्रद्धायै०। ॐ मेधायै स्वाहा इदं मेधायै०। ॐ सदसस्पतये स्वाहा इदं सदसस्पतये०। ॐ अनुमतये स्वाहा इदमनुमतये०। फिर ब्रह्मासे मिलकरही होम करे। यहां दश आहुतियोंमें प्रत्येक आहुतिके पीछे स्रुवेमें शेष रहे घृतको प्रोक्षणीपात्रमें डालता जाय। ॐ भूः स्वाहा इदमग्नये०। ॐ भुवः स्वाहा इदं वायवे०। ॐ स्वः स्वाहा इदं सूर्याय०। एता महाव्याहृतयः। ॐ त्वन्नो अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडो अव यासिसीष्ठाः। यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

णाभ्यां० । ॐ स त्वन्नो अग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टौ। अव यक्ष्व नो वरुणꣳरराणो वीहि मृडीकꣳ सुहवो न एधि स्वाहा इदमग्नीवरुणाभ्यां० । ॐ अयाश्चाग्नेस्यनभिशस्तिपाश्च सत्वमित्वमया असि । अयानो यज्ञं वहास्ययानो धेहि भेषजꣳ स्वाहा इदमग्नये० । ॐ ये ते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता महान्तः। तेभिर्नो अद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च० । ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यमꣳ श्रथाय। अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा इदं वरुणाय० । इति सर्वप्रायश्चित्तम् ॥ ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये० ।

विश्वा द्वेषाꣳसि प्रमुमुग्ध्यस्मत्स्वाहा इदमग्नीवरुणाभ्याम्० । ॐ स त्वन्नो अग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टौ । अव यक्ष्व नो वरुणꣳरराणो वीहि मृडीकꣳ सुहवो न एधि स्वाहा इदमग्नीवरुणाभ्याम्। ॐ अयाश्चाग्नेस्यनभिशस्तिपाश्च सत्वमित्वमया असि । अयानो यज्ञं वहास्ययानो धेहि भेषजꣳ स्वाहा इदमग्नये । ॐ ये ते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता महान्तः। तेभिर्नो अद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चंतु मरुतः स्वर्काः स्वाहा इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च० । ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यमꣳ श्रथाय । अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा इदं वरुणाय० । इति सर्वप्रायश्चित्तम् ॥ ॐ प्रजापतये

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

इति मनसा। इति प्राजापत्यम् ॥ ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा इदमग्नये स्विष्टकृते०। इति स्विष्टकृत्। ततः संस्रवप्राशनम्। तत आचम्य ॐ अद्य कृतैतत्समावर्तनहोमकर्मणि कृताकृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्मप्रतिष्ठार्थमिदं पूर्णपात्रं प्रजापतिदैवतममुकगोत्रायामुकशर्म्मणे ब्राह्मणाय ब्रह्मणे दक्षिणां तुभ्यमहं संप्रददे। इति दक्षिणां दद्यात्। ॐ स्वस्तीति प्रतिवचनम्। ततो ब्रह्मग्रन्थिविमोकः। ततः पवित्राभ्यां प्रणीताजलेन ॐ सुमित्रिया न आप ओषधयस्सन्तु। इति मंत्रेण शिरः संमृज्य

स्वाहा इदं प्रजापतये०। इति मनसा। इति प्राजापत्यम् ॥ ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा इदमग्नये स्विष्टकृते०। इति स्विष्टकृत् ॥ फिर प्रोक्षणीपात्रके घृतमिश्रित जलका प्राशन करे और इसके पश्चात् शुद्ध जलसे आचमन कर लेना चाहिये। अनन्तर आगे लिखे 'ॐ अद्य कृतैतत्समावर्त्तनहोमकर्मणि कृताकृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्मप्रतिष्ठार्थमिदं पूर्णपात्रं प्रजापतिदैवतममुकगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय ब्रह्मणे दक्षिणां तुभ्यमहं संप्रददे' इस संकल्पको उच्चारणपूर्वक पूर्णपात्रका दान करके ब्रह्माके निमित्त देना चाहिये। तब उसको ब्रह्मा 'ॐ स्वस्ति' ऐसा बोलकर ग्रहण करे। तत्पश्चात् ब्रह्मगांठको खोल देना चाहिये। अनन्तर पवित्रोंद्वारा प्रणीताके जलको ग्रहण करके आगे लिखे 'ॐ सुमित्रिया न आप ओषधयः सन्तु' इस मन्त्रसे अपने शिरमें मार्जन करे। फिर आगे लिखे ॐ दुर्मि-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ॐ दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु योऽस्मान् द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः इति मंत्रेणैशान्यां प्रणीतान्युञ्जीकरणम् । ततः स्तरणक्रमेण बर्हिरानीय घृतेनाभिघार्य हस्तेनैव जुहुयात् । ॐ देवा गातुविदो गातुं वित्वा गातुमित मनसस्पत इमं देव यज्ञꣳ स्वाहा व्वाते धाः स्वाहा । इति बर्हिर्होमः । ततो ब्रह्मणाऽन्वारब्धकर्तृकं कर्म । ततोऽग्निपश्चिमोपविष्टो ब्रह्मचारी परिसमूहनं कुर्यात् । तत्र घृताक्तशुष्कनिषिद्धेतरेन्धनेन पञ्चाहुतीर्हस्तेनैव जुहुयात् । ॐ अग्ने सुश्रवः सुश्रवसं मा कुरु । ॐ यथा त्वमग्ने

त्रियास्तस्मै संतु योऽस्मान् द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः' इस मन्त्रसे प्रणीतापात्रको ईशानकोनमें उलट देवे । तदनन्तर परिस्तरणके क्रमानुसार अर्थात् जिस क्रमसे कुश बिछाये थे उसी क्रमसे उन कुशोंको उठा लेवे और उनको घृतमें बोरकर आगे लिखे 'ॐ देवा गातुविदो गातुं वित्वा गातुमित मनसस्पत इमं देव यज्ञꣳ स्वाहा वाते धाः स्वाहा ।' इस मन्त्रद्वारा हाथसेही अग्निमें होम कर देवे । फिर ब्रह्मासे मिलकर आगेका कर्म करना चाहिये । ब्रह्मचारी अग्निके पश्चिमकी तरफको बैठा हुआ अग्निका परिसमूहन[1] पश्चात् पवित्र और सूखे ईंधनकी पांच समिधा लेवे और उनको घृतमें बोरकर आगे पांच पृथक् पृथक् मन्त्रोंसे आहुति देवे । 'ॐ अग्ने सुश्रवः सुश्र-

---

१ वेदीके इधर उधर जो होमीय द्रव्य अर्थात् होमके समय साकल्यादि छितरकर गिर पडे हैं उन सबको फिर इकट्ठा कर देनेका नामही परिसमूहन है ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सुश्रवः सुश्रवा असि । ॐ एवं मां सुश्रवः सौश्रवसं कुरु । ॐ यथा त्वमग्ने देवानां यज्ञस्य निधिपा असि। ॐ एवमहं मनुष्याणां वेदस्य निधिपो भूयासम् । ततः प्रदक्षिणमग्निं वारिणा पर्युक्ष्य उत्थाय घृताक्तां प्रादेशमितां समिधमादाय जुहुयात् । तत्र मंत्रः—ॐ अग्नये समिधमाहार्षं बृहते जातवेदसे यथा त्वमग्ने समिधा समिध्यसे एवमहमायुषा मेधया वर्चसा प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेन समिन्धे जीवपुत्रो ममाचार्यो मेधाव्यहमसान्यनिराकरिष्णुर्यशस्वी तेजस्वी ब्रह्मवर्चस्व्यन्नादो भूयासं स्वाहा । ततः समिदन्तरद्वयमनेनैव क्रमेण प्रत्येकं हुत्वा उपविश्य तेनैव क्रमेण पंचाहुतीर्घृताक्तशुष्कनिषिद्धेतरे-

---

वसं मा कुरु । ॐ यथा त्वमग्ने सुश्रवः सुश्रवा असि । ॐ एवं मां सुश्रवः सौश्रवसं कुरु । ॐ यथा त्वमग्ने देवानां यज्ञस्य निधिपा असि । ॐ एवमहं मनुष्याणां वेदस्य निधिपो भूयासम् ॥' फिर अग्निके चारों तरफ जलसेचनपूर्वक खडा हो प्रादेश प्रमाण समिधा घृतसे भिजोकर आगे लिखे 'ॐ अग्नये समिधमाहार्षं बृहते जातवेदसे यथा त्वमग्ने समिधा समिध्यसे एवमहमायुषा मेधया वर्चसा प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेन समिन्धे जीवपुत्रो ममाचार्यो मेधाव्यहमसान्यनिराकरिष्णुर्यशस्वी तेजस्वी ब्रह्मवर्चस्व्यन्नादो भूयासं स्वाहा' इस मन्त्रसे आहुति देवे । तिसके पीछे इसी मन्त्रसे दो समिधाओंको अलग अलग आहुति देवे । फिर आसनमें बैठकर पूर्वकथनानुसार सूखे अथच पवित्र ईध-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

न्धनेन जुहुयात् । ॐ अग्ने सुश्रवः सुश्रवसं मा कुरु । ॐ यथा त्वमग्ने सुश्रवः सुश्रवा असि । ॐ एवं मां सुश्रवः सौश्रवसं कुरु । ॐ यथा त्वमग्ने देवानां यज्ञस्य निधिप असि । ॐ एवमहं मनुष्याणां वेदस्य निधिपो भूयासम् । ततः प्रदक्षिणमग्निं वारिणा पर्युक्ष्य तूष्णीं पाणी प्रतप्य मुखं प्रतिमंत्रान्तेऽवमृशति । ॐ तनूपा अग्नेऽसि तन्वं मे पाहि । ॐ आयुर्दा अग्नेऽस्यायुर्मे देहि । ॐ वर्चोदा अग्नेऽसि वर्चो मे देहि । ॐ अग्ने यन्मे तन्वा ऊनं तन्म आपृण । ॐ मेधां मे देवः सविता आदधातु । ॐ मेधां मे देवी सरस्वती आदधातु । ॐ मेधां मे अश्विनौ देवावाधत्तां पुष्करस्रजौ । तत्र सर्वगात्रादिषु दक्षिणपाणिना

नकी पांच समिधाओंको घृतमें भिजोकर आगे लिखे 'ॐअग्ने सुश्रवः सुश्रवसं मा कुरु । ॐ यथा त्वमग्ने सुश्रवः सुश्रवा असि । ॐ एवं मां सुश्रवः सौश्रवसं कुरु । ॐ यथा त्वमग्ने देवानां यज्ञस्य निधिपा असि । ॐ एवमहं मनुष्याणां वेदस्य निधिपो भूयासम्' इन मन्त्रोंसे आहुति देवे । पश्चात् दक्षिण क्रमसे अग्निके चारों ओर जल सेचन करे फिर अग्निमें चुपचाप हाथोंको तपाकर आगे लिखे प्रत्येक मन्त्रसे मुखको स्पर्श करे । 'ॐ तनूपा अग्नेसि तन्वं मे पाहि । ॐ आयुर्दा अग्नेऽस्यायुर्मे देहि । ॐ वर्चोदा अग्नेसि वर्चो मे देहि । ॐ अग्ने यन्मे तन्वा ऊनं तन्म आपृण । ॐ मेधां मे देवः सविता आदधातु । ॐ मेधां मे देवी सरस्वती आदधातु । ॐ मेधां मे अश्विनौ देवावाधत्तां पुष्करस्रजौ ।' अनन्तर आगे लिखा प्रत्येक मन्त्र बोलकर दाहिने हाथसे

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

स्पर्शः। तत्र प्रत्येकं मंत्रः—ॐ अङ्गानि च म आप्याय-न्ताम्। इति सर्वगात्रालम्भने। ॐ वाङ् म आप्यायता-मिति मुखालम्भने। ॐ प्राणश्च म आप्यायतामिति नासि-कयोः। ॐ चक्षुश्च म आप्यायतामिति चक्षुर्द्वयस्पर्शः। ॐ श्रोत्रं च म आप्यायतामिति श्रोत्रद्वयस्पर्शः। ॐ यशो बलं च म आप्यायतामिति मंत्रपाठमात्रम् ततो दक्षिणानामिकाग्रगृहीतभस्मना ललाटे ग्रीवायां दक्षिणबाहुमूले हृदि च त्र्यायुषं कुर्यात्। यथासंख्येन मंत्र-चतुष्टयम्। ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेरिति ललाटे। ॐ कश्यपस्य

शरीरके समस्त अंगोंको स्पर्श करे। 'ॐ अङ्गानि च म आप्या-यन्ताम्' यह मन्त्र उच्चारण करके समस्त शरीरको स्पर्श करे। 'ॐ वाक् च म आप्यायताम्' यह मन्त्र बोलकर मुखको 'ॐ प्राणश्च म अप्यायताम्' यह मन्त्र उच्चारण करके नासि-काके दोनों छिद्रोंको 'ॐ चक्षुश्च म आप्यायताम्' यह मन्त्र पढकर दोनों नेत्रोंको 'श्रोत्रञ्च म आप्यायताम्' यह मन्त्र उच्चारण करके दोनों कानोंको स्पर्श करे। 'ॐ यशो बलञ्च म आप्यायताम्' इस मन्त्रका केवलमात्र पाठही कर लेना चाहिये। फिर दाहिने हाथकी अनामिका अंगुलीसे स्रुवेकी भस्म लेकर माथे गले दक्षिणबाहुमूल और हृदयमें त्र्यायुष करे अर्थात् इन सब स्थानोंमें स्रुवेकी उपरोक्त भस्म लगानी चाहिये। उसके क्रमसे निम्नलिखित चार मन्त्र ये हैं। यथा—'ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः' यह मन्त्र उच्चारण करके माथेमें, 'ॐ कश्यपस्य

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

त्र्यायुषं इति ग्रीवायाम् । ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषं इति दक्षिण-बाहुमूले । ॐ तन्नो अस्तु त्र्यायुषं इति हृदि । ततो व्यस्तपाणिभ्यां पृथिवीं स्पृशन् प्रथमं वैश्वानरं सम्बोध्याभिवादयेत् । तत्रामुकगोत्रोऽहममुकप्रवरोऽहममुकशर्माऽहं भो वैश्वानर त्वामभिवादये इति प्रकारः । ततस्तथैव वरुणं सम्बोध्याभिवादयेत् । तथैवाचार्यं चाभिवादयेत् । ततः आयुष्मान् भव सौम्य इत्याचार्यो ब्रूयात् । ततोऽग्नेरुत्तरतः प्रागग्रान्कुशानास्तीर्य तदुपरि दक्षिणो-

---

त्र्यायुषं ' यह मन्त्र बोलकर कण्ठमें, ' ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषं ' यह मन्त्र बोलकर दक्षिणबाहुमूलमें और ' ॐ तन्नो अस्तु त्र्यायुषं ' यह मन्त्र उच्चारण करके हृदयमें लगानी चाहिये । फिर व्यस्तपाणि अर्थात् बायें हाथके ऊपर दाहिने हाथको पट्ट रखकर भूमिको स्पर्श करताहुआ प्रथम अग्निको सम्बोधन करके प्रणाम करे । उसका क्रम यह है—' अमुकगोत्रोऽहममुकप्रवरोऽहममुकशर्माहं भो वैश्वानर त्वामभिवादये ' यह अभिवादन करनेकी रीति है । फिर इसी प्रकार वरुणको संबोधन करके प्रणाम करना चाहिये । उसका वाक्य यह है । यथा—'अमुकगोत्रोऽहममुकप्रवरोऽहममुकशर्माहं भो वरुण त्वामभिवादये' इसी प्रकार आचार्यको अभिवादन करे । यथा—'अमुकगोत्रोऽहममुकप्रवरोऽहममुकशर्माहं भो आचार्य त्वामभिवादये ' अभिवादन करनेके अनन्तर—' आयुष्मान् भव सौम्य ' इस प्रकार आचार्य आशीर्वाद देवे । तत्पश्चात् अग्निके उत्तरसे पूर्वको अग्रभागवाले कुशाओंको बिछाकर दक्षिण उत्तरको

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

त्तरक्रमेणासादितवारिपूर्णकलशाष्टतये कलशानां पुरतः प्रागग्रेषु कुशेषु स्थित्वा एकस्मादाम्रपल्लवेनोदकं गृहीत्वा ॐ येऽप्स्वंतरग्नयः प्रविष्टा गोह्य उपगोह्यो मयूषो मनोहास्खलो विरुजस्तनूदूषुरिंद्रियहा तान्विजहामि यो रोचनस्तमिह गृह्णामि। इति मंत्रेण। ततः तेन मामभिषिंचामि श्रियै यशसे ब्रह्मणे ब्रह्मवर्चसाय इत्यात्मानमभिषिंचति। ततो द्वितीयघटस्थमुदकं गृह्णाति—ॐ येप्स्वंतरग्नय० इति मंत्रेण गृहीताम्रपल्लवेनाभिषिंचति। ॐ येन श्रियमकृणुतां येनावमृष्यताꣳ सुरां येनाक्ष्यावभ्यषिंचतां यद्वा तदश्विना यशः॥ इति मंत्रेण। ततस्तेनैव क्रमेण पुनः ॐ येप्स्वंतरग्नय०

जलसे भरकर रक्खे हुए आठ कलशोंके आगे पूर्वाग्रकुशोंको बिछावे और उसपर (ब्रह्मचारी) बैठकर उन आठ कलशोंके बीच एक कलशमेंसे आमके पत्तेद्वारा आगे लिखे 'ॐ येप्स्वन्तरग्नयः प्रविष्टा गोह्य उपगोह्यो मयूषो मनोहास्खलो विरुजस्तनूदूषुरिंद्रियहा तान्विजहामि यो रोचनस्तमिह गृह्णामि' इस मंत्रसे जल लेवे और फिर इस आगे लिखे 'तेन मामभिषिंचामि श्रियै यशसे ब्रह्मणे ब्रह्मवर्चसाय।' मन्त्रसे अपने शरीरमें सेचन करे। फिर दूसरे कलशसे आमके पत्ते द्वारा पूर्वोक्त 'ॐ येप्स्वंतरग्नयः' मन्त्रसे जल ग्रहण करे और आगे लिखे 'ॐ येन श्रियमकृणुतां येनावमृष्यताꣳसुरां येनाक्ष्यावभ्यषिंचतां यद्वा तदश्विना यशः।' इस मन्त्रसे अपने शरीरपर सेचन करे। फिर जल ग्रहण करनेके पूर्वोक्त मन्त्रसे

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

इत्यनेन तृतीयकलशस्थजलमादाय ॐ आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन । महे रणाय चक्षसे । इति मंत्रेणाभिषिच्य तेनैव क्रमेण ॐ येप्स्वंतरग्नय० इति मंत्रेण चतुर्थकलशस्थजलमादाय । ॐ यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः । उशतीरिव मातरः ॥ इति मंत्रेणाभिषिच्य पुनः पंचमकलशस्थं जलं ॐ येप्स्वंतरग्नय० इति मंत्रेण तथैवादाय ॐ तस्मा अरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नः ॥ इति मंत्रेणाभिषिच्य ततोऽवशिष्टकलशत्रितयजलं तथैव येप्स्वंतरग्नय० इति मंत्रेण प्रत्येकं गृहीत्वा तूष्णीं प्रत्येक-

---

आमके पत्तेद्वारा तीसरे कलशका जल लेकर आगे लिखे 'ॐ आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन। महे रणाय चक्षसे॥' इस मन्त्रसे शरीरमें सेचन करे । अनन्तर जल ग्रहणके उसी मन्त्रसे आमके पत्तेद्वारा चौथे कलशका जल लेकर आगे लिखे 'ॐ यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः। उशतीरिव मातरः' इस मन्त्रसे अपने शरीरको सेचन करे । फिर जल ग्रहणके पूर्वोक्त मन्त्रसे आमके पत्तेद्वारा पांचवें कलशका जल लेकर आगे लिखे 'ॐ तस्मा अरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नः॥' इस मन्त्रसे अपने शरीरमें सेचन करे। पश्चात् शेष रहेहुए तीन कलशोंके बीच प्रत्येक कलशमेंसे पूर्वोक्त जल ग्रहणके मन्त्र द्वारा आमके पत्तेसे जल लेकर क्रमानुसार अपने शरीरमें चुपचाप सेचन करे फिर मूंजकी मेखलाको

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मभिषिंचति । ततो मेखलामोचनं शिरोभागेन-ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यमꣳ श्रथाय । अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम । इति मंत्रेण । दंडकृष्णाजिने तूष्णीं भूमौ निधाय अन्यद्वस्त्रं परिधायोत्तरीयं च कृत्वाऽऽचम्य बद्धांजलिरादित्यमुपतिष्ठेत ब्रह्मचारी । ॐ उद्यन् भ्राजभृष्णुरिन्द्रो मरुद्भिरस्थात् प्रातर्यावभिरस्थाद्दशसनिरसि दशसनिं मा कुर्वाविदन्मा गमयोद्यन् भ्राजभृष्णुरिन्द्रो मरुद्भिरस्थाद् दिवायावभिरस्थाच्छतसनिरसि शतसनिं मा कुर्वाविदन्मा गमयोद्यन् भ्राजभृष्णुरिंद्रो मरुद्भिरस्थात्सायंयावभिरस्थात् सहस्रसनिरसि सहस्रसनिं मा कुर्वाविदन्मा गमय । इति मंत्रेण ।

शिरकी ओरसे आगे लिखे ' ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यमꣳ श्रथाय । अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम० ' इस मन्त्रको उच्चारण करके निकाल देवे । अनन्तर दण्ड और काली मृगछालाको चुपचाप रख देवे । फिर दूसरा वस्त्र और उत्तरीय वस्त्र धारणपूर्वक आचमन करे पश्चात् ब्रह्मचारी हाथ जोडकर आगे लिखे ' ॐ उद्यन्भ्राजभृष्णुरिन्द्रो मरुद्भिरस्थात् प्रातर्यावभिरस्थाद्दशसनिरसि दशसनिं मा कुर्वाविदन्मा गमयोद्यन् भ्राजभृष्णुरिन्द्रो मरुद्भिरस्थाद् दिवायावभिरस्थाच्छतसनिरसि शतसनिं मा कुर्वाविदन्मा गमयोद्यन् भ्राजभृष्णुरिन्द्रो मरुद्भिरस्थात्सायंयावभिरस्थात्सहस्रसनिरसि सहस्रसनिं मा कुर्वाविदन्मा गमय ' इस मन्त्रको उच्चारण करता हुआ

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ततो दधि तिलान्वा प्राश्याचम्य जटालोमनखादींश्छेद-यित्वा स्नात्वाऽऽचम्य प्रादेशमितोदुंबरकाष्ठेन दंतधावनम्। ॐअन्नाद्याय व्यूहध्वꣳ सोमो राजाऽयमागमत्। स मे मुखं प्रमार्क्ष्यते यशसा च भगेन च ॥ इति मंत्रेण। ततो दंत-काष्ठं परित्यज्याचम्य सुगन्धिद्रव्योद्वर्तनानन्तरं स्नात्वा द्विराचम्य चन्दनकुंकुमादिना नासिकाया मुखस्यालंभने ॐ प्राणापानौ मे तर्प्पय। ॐ चक्षुर्मे तर्प्पय। ॐ श्रोत्रं मे तर्प्पय। इति मंत्रेणानुलिंपति। ततः पाणी प्रक्षाल्य दक्षिणाभिमुखः पातितवामजानुः कृतापसव्यो द्विगुण-

---

सूर्यनारायणके सन्मुख खडा होजाय। फिर दही और तिल इन दोनों वस्तुओंको मिलाकर चख लेवे पीछे आचमन करले तदनन्तर नाईके द्वारा क्षौर (हजामत) कराकर जटा लोम नाखून कटवावे और स्नान करके आचमन करे फिर प्रादेश-प्रमाण गूलरकी दँतौन आगे लिखे ' ॐ अन्नाद्याय व्यूहध्वꣳ सोमो राजाऽयमागमत्। स मे मुखं प्रमार्क्ष्यते यशसा च भगेन च ' इस मन्त्रको उच्चारण करके करनी चाहिये। पश्चात् दतौ-नको फेंक देवे और कुल्ला करके फिर आचमन करे तिस पीछे सुगन्धित पदार्थोंद्वारा शरीरमें उबटन करे और फिर स्नानपूर्वक दो बार आचमन करें। फिर चन्दन केशर इत्यादि सुगन्धित द्रव्य ग्रहणपूर्वक ' प्राणापानौ मे तर्पय ' यह मन्त्र बोलकर नासिका और मुखमें लगावे। ' ॐ चक्षुर्मे तर्पय' यह मन्त्र उच्चारण करके नेत्रोंमें और ' श्रोत्रं मे तर्पय ' यह मन्त्र पढकर कानोंमें लगाना चाहिये। फिर हाथ धोकर दक्षिणकी ओरको मुख किये ब्रह्मचारी वामजानुको नवायकर जनेऊको

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

भुग्नकुशत्रयतिलजलान्यादाय आस्तृतकुशत्रयोपरि पितॄं-स्तर्पयेत्। ॐ पितरः शुंधध्वमिति मंत्रेण। ततः सव्यं कृत्वा आचम्यानुलिप्य जपेत्-ॐसुचक्षा अहमक्षीभ्यां भूयासꣳ सुवर्चा मुखेन सुश्रुत् कर्णाभ्यां भूयासम् इति। ततोऽहत-वासःपरिधानम्। ॐ परिधास्यै यशोधास्यै दीर्घायुत्वाय जरदष्टिरस्मि। शतं च जीवामि शरदः पुरूची रायस्पो-षमभिसंव्ययिष्ये॥ इति मंत्रेण। ततो यज्ञोपवीतपरि-धानम्-ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुर-स्तात्। आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुंच शुभ्रं यज्ञोपवीतं बल-मस्तु तेजः॥ इति मंत्रेण। द्वितीयग्रहणम्-यज्ञोपवीत-

---

अपसव्य (उल्टा) कर दुहरे लपेटे हुए तीन कुश तिल और जल लेकर पृथ्वीमें बिछाये हुए तीन कुशोंके ऊपर आगे लिखे 'ॐ पितरः शुंधध्वम्' इस मन्त्रको उच्चारण करके पितरोंका तर्पण करे। फिर यज्ञोपवीत सव्य (सीधा) करके आचमन करे। पश्चात् कुछ सुगन्धित द्रव्योंको लेपन कर आगे लिखे 'ॐ सुचक्षा अहम-क्षीभ्यां भूयासꣳ सुवर्चा मुखेन सुश्रुत् कर्णाभ्यां भूयासम्' इस मंत्रको पाठ करना चाहिये। फिर आगे लिखे ॐ परिधास्यै यशो-धास्यै दीर्घायुत्वाय जरदष्टिरस्मि। शतं च जीवामि शरदः पुरूची-रायस्पोषमभिसंव्ययिष्ये' इस मन्त्रसे नवीन वस्त्र पहर लेवे अनन्तर दूसरा यज्ञोपवीत धारण करनेके लिये आगे लिखा 'ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत् सहजं पुरस्तात्। आयुष्य-मग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः' यह मन्त्र

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मिति प्रजापतिर्ऋषिर्यजुरुपवीतदेवता यज्ञोपवीतपरिधाने विनियोगः। यज्ञोपवीतमसि यज्ञस्य त्वा यज्ञोपवीतेनोपनह्यामि। आचमनम्। अथोत्तरीयम्—ॐ यशसा मा द्यावापृथिवी यशसेन्द्राबृहस्पती। यशो भगश्च मा विद्-द्यशो मा प्रतिपद्यताम्॥ इति मंत्रेण। ततः पुष्पमाला-ग्रहणे मंत्रः—ॐ या आहरज्जमदग्निः श्रद्धायै कामायेन्द्रियाय ता अहं प्रतिगृह्णामि यशसा च भगेन च। इति मंत्रेण पुष्पमालाग्रहणम्। ततः पुष्पमालापरिधानम्—

उच्चारण करके यज्ञोपवीतको हाथमें लेले। फिर दूसरा यज्ञोपवीत धारण करनेके लिये जल हाथमें ले आगे लिखे हुए 'यज्ञोपवीतमिति प्रजापतिर्ऋषिर्यजुरुपवीतदेवता यज्ञोपवीतपरिधाने विनियोगः' इस वाक्यको उच्चारण करके उसका विनियोग छोडे और फिर आगे लिखे हुए 'ॐ यज्ञोपवीतमसि यज्ञस्य त्वा यज्ञोपवीतेनोपनह्यामि' इस मन्त्रसे (उस) यज्ञोपवीतको धारण कर लेना चाहिये। पश्चात् आचमन करे फिर आगे लिखे हुए 'ॐ यशसा मा द्यावापृथिवी यशसेन्द्राबृहस्पती यशो भगश्च मा विदद्यशो मा प्रतिपद्यताम्' इस मन्त्रसे उत्तरीयवस्त्र[1] धारण करे। तत्पश्चात् आगे लिखे 'ॐ या आहरज्जमदग्निः श्रद्धायै कामायेन्द्रियाय ता अहं प्रतिगृह्णामि यशसा च भगेन च' इस मन्त्रसे पुष्पमालाको हाथमें ग्रहण करना चाहिये।

---

१ डुपट्टा।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ॐ यद्यशोऽप्सरसामिन्द्रश्चकार विपुलं पृथु। तेन संग्रथिताः सुमनस आबध्नामि यशो मयि॥ इति मंत्रेण पुष्पमालापरिधानम्। अथ वसुप्रतिष्ठा। अथोष्णीषेण शिरोवेष्टनम्—ॐ युवा सुवासाः परिवीत आगात्स उ श्रेयान् भवति जायमानः। तं धीरासः कवय उन्नयन्ति स्वाध्यो मनसा देवयंतः॥ इति मंत्रेण। ततः कुण्डले परिदधाति। ॐ अलंकरणमसि भूयोऽलंकरणं भूयात्। ततोऽञ्जनम्—वृत्रस्यासि कनीनकश्चक्षुर्दा असि चक्षुर्मे देहि। तत आदर्शे आत्मदर्शनम्—ॐ रोचिष्णुरसि इति मंत्रेण। ततश्छत्रग्रहणम्—ॐ बृहस्पतेश्छदिरसि पाप्मनो मामन्त-

---

फिर उस पुष्पमालाको आगे लिखे 'ॐ यद्यशोऽप्सरसामिन्द्रश्चकार विपुलं पृथु। तेन संग्रथिताः सुमनस आबध्नामि यशो मयि' इस मन्त्रको उच्चारण करके पहरलेना चाहिये। अथ वसुप्रतिष्ठा। तदनन्तर पगडी या टोपी आगे लिखे 'ॐ युवा सुवासाः परिवीत आगात् स उ श्रेयान् भवति जायमानः। तं धीरासः कवय उन्नयन्ति स्वाध्यो मनसा देवयन्तः' इस मन्त्रसे धारण करे। इसके पश्चात् आगे लिखे 'ॐ अलङ्करणमसि भूयोऽलंकरणं भूयात्' इस मन्त्रसे कुण्डल धारण करे। फिर आगे लिखे 'ॐ वृत्रस्यासि कनीनकश्चक्षुर्दा असि चक्षुर्मे देहि' इस मन्त्रसे अञ्जन धारण करे अर्थात् आंखोंमें काजल लगावे। फिर आगे लिखे 'ॐ रोचिष्णुरसि' इस मन्त्रसे दर्पणमें मुख देखे। पश्चात् आगे लिखे 'ॐ बृहस्पतेश्छदिरसि पाप्मनो मामन्त-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

धेंहि तेजसो यशसो मान्तर्धेहि इति मंत्रेण । ततः पद्भ्यामुपानहौ प्रतिगृह्णाति—ॐ प्रतिष्ठे स्थो विश्वतो मा पातम् इति मंत्रेण । ततो वैणवदण्डधारणम्—ॐ विश्वाभ्यो मानाष्ट्राभ्यस्परि पाहि सर्वतः इति मंत्रेण। ततः स्नातकस्य नियमाः—गानवादित्रनृत्यत्यागः न तत्र गमनं क्षेमे सति न रात्रौ ग्रामान्तरगमनम् न धावेत् न कूपेऽवेक्षणं न वृक्षारोहणं न फलत्रोटनम् अमार्गेण न गच्छेत् नग्नो न स्नायात् न संधिशयनं न विषमभूमिलंघनम् अश्लीलं

धेंहि तेजसो यशसो माऽन्तर्धेहि' इस मन्त्रसे छतरी धारण करे। फिर आगे लिखे 'ॐ प्रतिष्ठे स्थो विश्वतो मा पातम्' इस मन्त्रसे पैरोंमें उपानह (चर्मपादुका) धारण करे। अनन्तर आगे लिखे 'ॐ विश्वाभ्यो मा नाष्ट्राभ्यस्परिपाहि सर्वतः' इस मन्त्रसे लकडी (लाठी) हाथमें लेवे। तत्पश्चात् ब्रह्मचर्य अवस्थापूर्वक विद्याध्ययन करलेनेपर समावर्त्तन संस्कारके द्वारा गृहस्थाश्रममें आयेहुए नियम। यथा—गाने, बजाने और नाचनेका त्याग करे और न ऐसे स्थानमें जावे। विशेष कार्य उपस्थित हुए विना रातके समय एक गांवसे दूसरे गांवमें न जाय, दौडकर नहीं चले । कुएमें मुँह डालकर नहीं झांके। वृक्षपर नहीं चढे। कच्चे फलोंको नहीं तोडे। विना दरवाजेके घरमें न घुसे अर्थात् दरवाजेके होते हुए छोटी मोटी दीवार लांघकर कभी घरमें नहीं घुसे दरवाजेसेही प्रवेश करे। नग्न (बिलकुल नंगा) होकर स्नान नहीं करे। सूर्यके उदय तथा अस्तसमयमें नहीं सोवे । विषमभूमि अर्थात् ऊंची नीची पृथ्वीको लांघकर गमन न करे। अश्लील-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नोपवदेत्, उदितास्तसमये सूर्यं नोपपश्येत् जलमध्ये सूर्यं आकाशस्थं न पश्येत् देवे वर्षति न गच्छेत् उदके आत्मानं न पश्येत् अजातलोम्नीं प्रमत्तां पुरुषाकृतिं षण्ढां न गच्छेदित्यादि। ततः आचार्य्याय वरां दक्षिणां दद्यात्। ततः मूर्द्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत आजातमग्निम्। कविꣳ सम्राजमतिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयंत देवाः स्वाहा। इति मंत्रेण फलपुष्पसमन्वितघृतपूर्णस्रुवेण माणवकदक्षिणकरस्पृष्टेनोत्थाय पूर्णाहुतिमाचार्य्यः कुर्य्यादिति। तत उपविश्य स्रुवेण

वचन (गालीगलौज) नहीं बोले। उदय और अस्त होते हुए सूर्यको नहीं देखे। आकाशस्थ सूर्यकी परछांहीको जलके बीचमें न देखे। वर्षा होते हुए समयमें रास्ता न चले। जलमें अपने शरीरको नहीं देखे। जिसके रोम न निकले हों, बावली पुरुषाकृति (जिस स्त्रीके पुरुषकी नाईं दाढी मूछ निकल आई हैं जैसी गिंदिया हीजडी) इनके पास न जाय और न इनकी हाँसी ही उडावे। तदनन्तर अपने आचार्यको उत्तम दक्षिणा देवे फिर आगे लिखे हुए 'ॐ मूर्द्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत आजातमग्निम्। कविꣳ सम्राजमतिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयन्त देवाः स्वाहा' इस मन्त्रसे फल पुष्प तथा घृतसे परिपूर्ण स्रुवेको उठाय उसमें बालकका हाथ लगवाय आचार्य पूर्णाहुति करे। फिर आसनपर बैठकर स्रुवेमें

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

भस्मानीय दक्षिणानामिकाग्रगृहीतभस्मना ॐ त्र्यायु जमदग्नेरिति ललाटे । ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषमिति ग्रीवायाम् । ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषमिति दक्षिणबाहुमूले । ॐ तन्नो अस्तु त्र्यायुषमिति हृदि । इति त्र्यायुषं कुर्यात् । अनेनैव क्रमेण कुमारललाटादावपि । तत्र 'तन्नो' इत्यस्य स्थाने 'तत्ते' इति विशेषः । ततो मूर्द्धाक्षतादिग्रहणम् ॥

इति श्रीमहामत्तकमहासामंताधिपतिश्रीरामदत्त-
विरचिता वाजसनेयिनामुपनयन-
कर्मपद्धतिः समाप्ता ॥ १२ ॥

भस्म ग्रहणपूर्वक दाहिने हाथकी अनामिका अंगुलीद्वारा उस स्रुवेसे भस्म लेकर त्र्यायुष करे । 'ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः' ऐसा उच्चारण करके माथेमें 'ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषं' ऐसा उच्चारण करके गलेमें 'ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषम्' ऐसा उच्चारण करके दक्षिणबाहुमूलमें और 'ॐ तन्नो अस्तु त्र्यायुषम्' ऐसा उच्चारण करके उस भस्मको हृदयमें लगाना चाहिये । इसी प्रकार यह भस्म कुमारके भी ललाटादि स्थानोंमें लगावे । किन्तु जब कुमारके लगावे तो 'तन्नो अस्तु' के स्थानमें 'तत्ते अस्तु' ऐसा उच्चारण करना चाहिये । फिर कुमारके माथेमें तिलक अक्षत लगाकर अभिषेकादि करे ॥ इतिसमावर्तनम् ॥ १२ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अथ सामग्री।

रोली १२ मोली ७ केशर २५ बतासे ३ आटा चावल पुष्प १२ पुष्पमाला धूप ३ दीप १ ताम्बूल ७ यज्ञोपवीत ९ प्रणीतापात्र ३ प्रोक्षणीपात्र ३ कांस्यपात्र ६ छायापात्र १ सुवर्ण १ कुशा १ स्रुवा १ गोमय एरणेगोहे पलाशसमिधा १ सेर ३ पूर्णपात्र ३ उपर्णे ५ धोतिया २ कुपीनी ५ मृगचर्म १ पलाशदण्ड १ गूलरशाखा १ मेखला मुंजीकी १ सुहालीयासेर १ पुरवा ८ लोटिया ८ नारियल २ खडाऊंजोडा १ पट्टी १ चंगेर १ लाठी ५ गुथली १ कसारु २ घृततिल ३ दधि १ सुपारी ११ आम्रपल्लव वृक्षादिपत्र ७ अंजन १ दर्पण १ वसु ५ मोती उपानहौ वटपश्वेत दूर्वा दोने १० अबीरश्वेत ६ ब्राह्मणभोजन दक्षिणा पंच रंग २५। इति सामग्री॥

इति श्रीमहामत्तकमहासामन्ताधिपतिश्रीरामदत्तविरचिता वाजसनेयिनामुपनयनकर्मपद्धतिर्मुरादाबादनिवासि-कात्यायनगोत्रोत्पन्नपण्डित-कन्हैयालालमिश्रकृतभाषाटीकासहिता समाप्ता॥

पं० प्रेम दत्त शास्त्री
जहांगीराबाद २०२१६४
बुलन्दशहर (उ०प्र०)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अथ विवाहविधिः ॥ १३ ॥

तत्र कन्याहस्तेन षोडशहस्तमितं मण्डपं तद्दक्षिणदिशि पश्चिमां दिशमाश्रित्य मण्डपसंलग्नमुत्तराभिमुखं कौतुकागारं मंडपाद्बहिरीशान्यां दिशि जामातृचतुर्हस्तपरिमितसिकतादिपरिष्कृततुषकेशशर्करादिरहितां रम्यां वेणुनिर्मितां वेदिं च कारयेत्। विवाहदिने कृतनित्यक्रियेण जामातृपित्रा मातृपूजापूर्वकमाभ्युदयिकश्राद्धं कर्तव्यम्। कन्यापिता स्नातः शुचिः शुक्लाम्बरधरः कृतनित्यक्रियो मातृपुजाभ्युदयिके कृत्वा अर्हणवेलायां मण्डपे प्रत्यङ्मुखः प्राङ्मुखं वरमूर्ध्वजानुं तिष्ठन्तं संबोध्य

अब विवाहसंस्कार वर्णन किया जाता है—कन्याके हाथसे सोलह हाथ पृथ्वी नापकर पश्चिम दिशासे पूर्वको मण्डप बनाना चाहिये। उस मण्डपकी दक्षिणकी तरफ पश्चिमदिशासे युक्त और मण्डपसे सटे हुए उत्तरकी ओर मुखवाले कौतुकागारकी रचना करे। मण्डपसे बाहर ईशानकोनमें जामाता (वर) के चार हस्त प्रमाण वालुकाद्वारा सुशोभित, भुस्सी, केश, धूलि इत्यादिसे रहित बाँसोंसे रची हुई मनोहर (दर्शनीय) वेदी बनावे। विवाहके दिन नित्यकृत्य अर्थात् स्नान संध्यादि कर जामाताका पिता षोडश मातृकाओंकी पूजापूर्वक नान्दीमुख श्राद्ध करे। कन्याका पिता स्नानसन्ध्यापूर्वक पवित्र होकर सफेद वस्त्र धारण किये मातृपूजा और नान्दीमुख श्राद्ध करके बरके पूजनका समय आनेपर मण्डपमें पश्चिमाभिमुखसे बैठे

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ततः स्वस्तिवाचनं कलशगणेशादीनां पूजनं च कृत्वा ॐ साधु भवानास्तामिति प्रजापतिर्ऋषिर्ब्रह्मा देवता यजुर्वरार्चने विनियोगः। ॐ साधु भवानास्तामर्चयिष्यामो भवन्तमिति ब्रूयात्। ॐ अर्चयेति वरेणोक्ते वरो उपवेशनार्थं शुद्धमासनं दत्त्वा विष्टरमादाय—ॐ विष्टरो विष्टरो विष्टर इत्यन्येनोक्ते ॐ विष्टरः प्रतिगृह्यतामिति दाता वदेत्। ॐ विष्टरं प्रतिगृह्णामि इत्यभिधाय वरो विष्टरं गृहीत्वा ॐ वर्ष्मोऽस्मीत्याथर्वणऋषिर्विष्टरो देवताऽनुष्टुप्छन्दः उपवेशने विनियोगः। ॐ वर्ष्मोऽस्मि समानानामुद्यता-

---

हुए तथा पूर्वाभिमुख और ऊर्ध्वजानु स्थित वरको सम्बोधन करके स्वस्तिवाचन, कलशस्थापन तथा गणेशादिकोंका पूजन करके हाथमें जल ले आगे लिखे हुए 'ॐ साधु भवानास्तामिति प्रजापतिर्ऋषिर्ब्रह्मा देवता यजुर्वरार्चने विनियोगः' इस वाक्यसे विनियोग छोडे फिर 'ॐ साधु भवानास्तामर्चयिष्यामो भवन्तम्' इस प्रकार कन्याका पिता कहे। पश्चात् 'ॐ अर्चय' ऐसा वरके कहनेपर वरके बैठनेको शुद्ध आसन देकर कुशके बनाये विष्टरको हाथमें ले 'ॐ विष्टरो विष्टरो विष्टरः' ऐसा किसी पाधाके कहनेपर 'ॐ विष्टरः प्रतिगृह्यताम्' इस प्रकार दाता (कन्याका पिता) कहे फिर 'ॐ विष्टरं प्रतिगृह्णामि' ऐसा कहकर वर विष्टरको ले हाथमें जल ग्रहणपूर्वक आगे लिखे हुए 'ॐ वर्ष्मोऽस्मीत्याथर्वणऋषिर्विष्टरो देवता अनुष्टुप् छन्दः उपवेशने विनियोगः' इस वाक्यको उच्चारण करके विनियोग छोडे फिर आगे लिखे हुए 'ॐवर्ष्मोऽस्मि समानाना-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मिव सूर्यः । इमं तमभितिष्ठामि यो मा कश्चाभिदासति ॥ इत्यनेनासने उत्तराग्रविष्टरोपरि वर उपविशति। तत्रोपविश्य यजमानः पाद्यमञ्जलिनाऽऽदाय ॐ पाद्यं पाद्यं पाद्यमित्यन्येनोक्ते ॐ पाद्यं प्रतिगृह्यतामिति दाता वदेत्। ॐ पाद्यं प्रतिगृह्णामि इत्यभिधाय यजमानाञ्जलितोऽञ्जलिना पाद्यमादाय वरः विराजो दोहोऽसीति प्रजापतिर्ऋषिरापो देवता यजुःपादप्रक्षालने जलग्रहणे विनियोगः। ॐ विराजो दोहोऽसि विराजो दोहमशीय मयि पाद्यायै विराजो दोहः इति दक्षिणपादं प्रक्षालयति। अनेनैव क्रमेणा-

---

मुद्यतामिव सूर्यः । इमं तमभितिष्ठामि यो मा कश्चाभिदासति' इस मन्त्रको उच्चारणपूर्णक वर अपने आसनमें विष्टरका उत्तरकी ओर अग्रभाग करके उसके ऊपर बैठ जावे । फिर कन्याका पिता आसनमें बैठकर एक पात्रमें जल भर उसको हाथमें लेवे और 'ॐ पाद्यं पाद्यं पाद्यं' ऐसा किसी अन्य पाधाके कहनेपर 'ॐ पाद्यं प्रतिगृह्यताम्' ऐसा कन्याका पिता कहे 'फिर ॐ पाद्यं प्रतिगृह्णामि' ऐसा कहकर वर यजमानके हाथसे उस जलपात्रको लेकर आगे लिखे हुए 'ॐ विराजो दोहोसीति प्रजापतिर्ऋषिरापो देवता यजुःपादप्रक्षालने जलग्रहणे विनियोगः' इस वाक्यसे विनियोग छोडे । पश्चात् आगे लिखे हुए "ॐ विराजो दोहोसि विराजो दोहमशीय मयि पाद्यायै विराजो दोहः" इस मंत्रसे दाहिने चरणको धोवे फिर इसी मंत्र और इसी रीतिसे बाँये चरणको धोवे अनंतर कन्याका पिता

---

१ विनियोगके निमित्त और जल लेना चाहिये ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नेनैव मंत्रेणान्यपादप्रक्षालनम्। ततः पूर्ववद्विष्टरांतरं गृहीत्वा चरणयोरधस्तात् उत्तराग्रं वरः कुर्यात्। ततो दूर्वाक्षतफलपुष्पचन्दनयुतार्घपात्रं गृहीत्वा यजमानः ॐ अर्घोऽर्घोऽर्घः इत्यन्येनोक्ते ॐअर्घः प्रतिगृह्यतामि दाता वदेत्। ॐ अर्घं प्रतिगृह्णामीत्यभिधाय यजमानहस्तादर्घं गृहीत्वा ॐ आपः स्थ युष्माभिः सर्वान्कामानवाप्नवानीति शिरस्यक्षतादिकं किंचिद्दत्वा ॐ समुद्रं वः प्रहिणोमि स्वां योनिमभिगच्छत। अरिष्टास्माकं वीरा मा परासेचि मत्पयः इत्यर्घपात्रस्थं जलमैशान्यां दिशि त्यजन् पठति। ततः आचमनीयमादाय ॐ आचमनीयमाचमनीयमाच-

---

दूसरा विष्टर लेकर वरको देवे और वर उसे उत्तरको अग्रभाग करके अपने आसनके नीचे रख लेवे। फिर दूब अक्षत फल पुष्प चन्दन युक्त अर्घ्यपात्रको कन्याका पिता हाथमें ले 'ॐ अर्घोऽर्घोऽर्घः' ऐसा किसी दूसरे पाधाके कहनेपर 'ॐ अर्घः प्रतिगृह्यताम्' ऐसा कन्याका पिता कहे। 'ॐ अर्घं प्रतिगृह्णामि वर ऐसा उच्चारण पूर्वक यजमानके हाथसे उस अर्घपात्रको लेकर ईशानकोनमें उसके जलको छोडता हुआ आगे लिखे 'ॐ आपः स्थ युष्माभिः सर्वान् कामानवाप्नवानि' इससे शिरपर अक्षत देकर 'ॐ समुद्रं वः प्रहिणोमि स्वां योनिमभिगच्छत। अरिष्टास्माकं वीरा मा परासेचि मत्पयः' इस मंत्रका पाठ करे। अर्थात् 'ॐ आपः स्थ युष्माभिः सर्वान्कामानवाप्नवानि' यह उच्चारण करके मस्तकमें अक्षत लगावे। फिर आचमनके लिये एक पात्रमें जल भरकर कन्याका पिता

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मनीयमित्यन्येनोक्ते ततो वरः—ॐ आचमनीयं प्रतिगृह्णामीत्यभिधाय यजमानहस्तादाचमनीयमादाय ॐ आमागन्यशसा सꣳसृज वर्चसा तं मा कुरु प्रियं प्रजानामधिपतिं पशूनामरिष्टिं तनूनाम् इत्यनेन सकृदाचामेत्। द्विस्तूष्णीम्। ततो यजमानः कांस्यपात्रस्थदधिमधुघृतानि कांस्यपात्रपिहितान्यादाय ॐ मधुपर्को मधुपर्को मधुपर्कः इत्यन्येनोक्ते ॐ मधुपर्कः प्रतिगृह्यतामिति दाता वदेत्। ॐ मधुपर्कं प्रतिगृह्णामि इति वरो वदेत्। ॐ मित्रस्य त्वा चक्षुषा प्रतीक्षे इति यजमान-

---

हाथमें लेवे और फिर 'ॐ आचमनीयमाचमनीयमाचमनीयम्' ऐसा कन्याके पिताके कहनेपर वर 'ॐ आचमनीयं प्रतिगृह्णामि' ऐसा कहकर यजमानके हाथसे उस आचमनीय जलपात्रको लेकर आगे लिखे हुए 'ॐ आमागन्यशसा सꣳसृज वर्चसा तं मा कुरु प्रियं प्रजानामधिपतिं पशूनामरिष्टिं तनूनां' इस मन्त्रसे एक बार आचमन करे। फिर दो बार चुपचाप आचमन करे। तदनन्तर कन्याका पिता कांसीके पात्रमें दही सहत घृत इन तीन वस्तुओंको मिलाकर दूसरे कांसीके पात्रद्वारा उस पात्रको ढककर हाथमें ले 'ॐ मधुपर्को मधुपर्को मधुपर्कः' ऐसा पाधाके कहनेपर 'ॐ मधुपर्कः प्रतिगृह्यताम्' ऐसा दाता (यजमान) कहे। फिर 'ॐ मधुपर्कं प्रतिगृह्णामि' इस प्रकार वर कहे। तत्पश्चात् 'ॐ मित्रस्य त्वा चक्षुषा प्रतीक्षे' ऐसा कहकर यजमानके हस्तस्थित मधु-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

करस्थमेव निरीक्ष्य ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्यां प्रतिगृह्णामीत्यनेन मधुपर्कं गृहीत्वा वामहस्ते कृत्वा ॐ नमः श्यावास्यायान्नशने यत्त आविद्धं तत्ते निष्कृंतामीत्यनामिकयाऽङ्गुष्ठेन च त्रिः प्रदक्षिणमालोड्य अनामिकाङ्गुष्ठाभ्यां भूमौ किंचिन्निक्षिपेत्। पुनस्तथैव द्विः प्रत्येकं क्षिपेत्। ततो वरः ॐ यन्मधुन इति कुत्स ऋषिर्मधुपर्को देवता जगती छंदो मधुपर्कप्राशने विनियोगः। ॐ यन्मधुनो मधव्यं परमꣳ रूपमन्नाद्यं तेनाहं मधुनो मधव्येन परमेण रूपेणान्नाद्येन परमो मधव्योऽन्नादोऽसानि इत्यनेन वारत्रयं

पर्कको देख आगे लिखे हुए 'ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्यां प्रतिगृह्णामि' इस मन्त्रद्वारा कन्याके पिताके हाथसे मधुपर्कको लेकर बायें हाथमें रक्खे। फिर दाहिने हाथकी अनामिका और अंगुष्ठ इन दो अंगुलियोंसे आगे लिखे 'ॐ नमः श्यावास्यायान्नशने यत्त आविद्धं तत्ते निष्कृन्तामि'। इस मन्त्रद्वारा उन पात्रस्थ घृत, मधु, दधि इनको तीन बार मिलावे फिर उसमेंसे यत्किंचित् पृथ्वीमें गिरा देवे। फिर दो बार थोडा थोडा पृथ्वीपर गिरावे अनन्तर हाथमें जल लेकर आगे लिखे 'ॐयन्मधुन इति कुत्सऋषिर्मधुपर्को देवता जगती छन्दो मधुपर्कप्राशने विनियोगः' इस वाक्यसे विनियोग छोडे। इसके पश्चात् आगे लिखे हुए 'ॐ यन्मधुनो मधव्यं परमꣳ रूपमन्नाद्यं तेनाहं मधुनो मधव्येन परमेण रूपेणान्नाद्येन परमो मधव्योन्नादोऽसानि' इस मन्त्रसे तीन बार

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मधुपर्कप्राशनम् । प्रतिप्राशने चैतन्मंत्रपाठः । ततो मधुपर्कशेषमसंचरदेशे धारयेत् । ततो द्विराचम्य ॐ वाङ् म आस्येऽस्तु ॐ नसोर्मे प्राणोऽस्तु ॐ अक्ष्णोर्मे चक्षुरस्तु ॐ कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु ॐ बाह्वोर्मे बलमस्तु ॐ ऊर्वोर्मे ओजोऽस्तु ॐ अरिष्टानि मेऽङ्गानि तनूस्तन्वा मे सहसन्तु इत्यास्यादि प्रत्येकं सर्वगात्राणि स्पृष्ट्वा ॐ गौर्गौर्गौरित्यन्येनाभिहिते यजमानेन प्रत्युक्तं ततो वरः ॐ माता रुद्राणां दुहिता वसूनाꣳ स्वसादित्यानाममृतस्य

उस मधुपर्कका प्राशन करे, किन्तु मन्त्रको प्रत्येक प्राशनके समय उच्चारण करना चाहिये । फिर शेष रहे मधुपर्कको किसी एकान्त स्थानमें रखदेवे । पश्चात् दो बार आचमन करे । तदनन्तर 'ॐ वाङ् म आस्येऽस्तु' यह मन्त्र उच्चारण करके दाहिने हाथसे मुखको स्पर्श करे । 'ॐ नसोर्मे प्राणोऽस्तु' यह मन्त्र उच्चारण करके नासिकाके दोनों छिद्रोंको स्पर्श करे । ॐ अक्ष्णोर्मे चक्षुरस्तु' यह मन्त्र उच्चारण करके दोनों आँखोंको स्पर्श करे । 'ॐकर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु' यह मन्त्र उच्चारण करके दोनों कानोंको स्पर्श करे । 'ॐ बाह्वोर्मे बलमस्तु' यह मन्त्र उच्चारण करके हाथोंको स्पर्श करे । 'ॐ ऊर्वोर्मे ओजोऽस्तु' यह मन्त्र उच्चारण करके जंघाओंको स्पर्श करे । 'ॐ अरिष्टानि मेऽङ्गानि तनूस्तन्वा मे सहसन्तु' यह मन्त्र उच्चारणपूर्वक मुखसे आरंभ करके समस्त शरीरका स्पर्श करे । फिर 'ॐगौर्गौर्गौः' यजमानके ऐसा कहनेपर वर आगे लिखे 'ॐ माता रुद्राणां दुहिता वसूनाꣳ स्वसादित्यानाममृतस्य

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नाभिः। प्रनुवोचं चिकितुषे जनाय मागामनागामदितिं वधिष्ट। मम चामुष्य पाप्मा हतः ॐ उत्सृजत तृणान्यत्त्विति तृणं छिंद्यात्ततो वेदिकायां तुषकेशशर्करादिरहितायां हस्तमात्रपरिमितायां चतुरस्रां भूमिं कुशैः परिसमुह्य तान् कुशानैशान्यां परित्यज्य गोमयोदकेनोपलिप्य स्फ्येन स्रुवेण वा प्रागग्रप्रादेशमात्रमुत्तरोत्तरक्रमेण त्रिरुल्लिख्य उल्लेखनक्रमेणानामिकाङ्गुष्ठाभ्यां पांसुमुद्धृत्य जलेनाभ्युक्ष्य तत्र तूष्णीं कांस्यपात्रस्थं वह्निमग्निकोणादानीय प्रत्यङ्मुखमुपसमाधाय तद्रक्षार्थं

नाभिः। प्रनुवोचं चिकितुषे जनाय मागामनागामदितिं वधिष्ट। मम चामुष्य पाप्मा हतः ॐ उत्सृजत तृणान्यत्तु' इस मन्त्रको उच्चारण करके तिनकेको तोडकर डाल देवे। फिर भुस्सी, केश, धूरि, कंकर इत्यादि रहित एक हाथकी बराबर बनाई हुई चौकोन वेदीको तीन कुशाओंसे शोधन करे और फिर उन कुशाओंको ईशानकोनमें डाल देवे। तदनन्तर गोबरसे वेदीको लीप कर स्फ्य नामक यज्ञपात्र अथवा स्रुवेसे पूर्वको अग्र भागवाली दक्षिणसे उत्तर उत्तरकी तरफको तीन रेखा खैंचे। रेखा खैंचनेके क्रमानुसार दाहिने हाथकी अनामिका तथा अंगुष्ठ इन दो अंगुलियोंद्वारा (उन रेखाओंसे) मिट्टी उठाकर ईशान कोनमें फेंकदेवे फिर जल लेकर रेखाओंपर छिडकना चाहिये पीछे चुपचाप कांसीके पात्रमें अग्नि लेकर अग्निकोनके मार्गसे वेदीके समीप आकर अग्निको पश्चिमाभिमुख वेदीमें स्थापन

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कंचिन्नियुज्य कौतुकागाराद्वरः कन्यामानीय मंडपे उपविश्य ॐ जरां गच्छ परिधत्स्व वासो भवाकृष्टीनामभिशस्तिपावा । शतं च जीव शरदः सुवर्चा रयिं च पुत्राननुसंव्ययस्वायुष्मतीदं परिधत्स्व वासः इति पठित्वा परिधानवस्त्रं तस्यै ददाति वरः । ततः ॐ या अकृंतन्नवयन् या अतन्वत याश्च देवीस्तन्तूनभितो ततन्थ । तास्त्वा देवीर्जरसे संव्ययस्वायुष्मतीदं परिधत्स्व वासः इति पठित्वोत्तरीयं ददाति । ततो वरः ॐ परिधास्यै यशोधास्यै दीर्घायुत्वाय जरदष्टिरस्मि । शतं च जीवामि शरदः पुरुची रायस्पोषमभिसंव्ययिष्ये इति पठित्वा अधोवस्त्रं

करे । फिर उस अग्निकी रक्षाके लिये किसीको नियुक्त कर कौतुकागारसे वर उस कन्याको लाकर मण्डपमें बैठे । अनन्तर आगे लिखे हुए 'ॐ जरां गच्छ परिधत्स्व वासो भवाकृष्टीनामभिशस्तिपावा । शतं च जीव शरदः सुवर्चा रयिं च पुत्राननुसंव्ययस्वायुष्मतीदं परिधत्स्व वास' इस मन्त्रको उच्चारण करके उस कन्याको पहरनेके वस्त्र प्रदान करे । तत्पश्चात् आगे लिखे 'ॐ या अकृंतन्नवयन् या अतन्वत याश्च देवीस्तन्तूनभितो ततंथ । तास्त्वा देवीर्जरसे संव्ययस्वायुष्मतीदं परिधत्स्व वासः' इस मन्त्रको उच्चारण करके कन्याको उत्तरीय वस्त्र प्रदान करना चाहिये । फिर वर आगे लिखे 'ॐपरिधास्यै यशोधास्यै दीर्घायुत्वाय जरदष्टिरस्मि । शतञ्च जीवामि शरदः पुरूची रायस्पोषमभिसंव्ययिष्ये' इस मन्त्रको उच्चारण करके अपने आपभी अधोवस्त्र (धोती

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वरः परिधत्ते । ॐ यशसा मा द्यावापृथिवी यशसेन्द्रा-बृहस्पती। यशो भगश्च माविदद्यशो मा प्रतिपद्यताम् । इति पठित्वोत्तरीयं परिदधाति वरः । ततो वरस्य कन्यायाश्च द्विराचमनम् । ततः कन्याप्रदेन परस्परं समञ्जेथाम् इति प्रेषणं कन्यावरयोः परस्परमभिमुखीकरणम्। ॐ समञ्जन्तु विश्वेदेवाः समापो हृदयानि नौ । संमातरिश्वा संधाता समुदेष्ट्री दधातु नौ ॥ इति वरः पठति । ततः कन्याप्रद-कर्तृकं ग्रन्थिबन्धनम् । बंधनं कन्यावरयोः । अथ हस्त-लेपनं शाखोच्चारणम्।अथ कन्यादानम् । दाता शङ्खस्थ-दूर्वाक्षतफलपुष्पचन्दनजलान्यादाय जामातृदक्षिणकरो-

---

इत्यादि) धारण करे। तत्पश्चात् आगे लिखे 'ॐ यशसा मा द्यावा-पृथिवी यशसेन्द्राबृहस्पती।यशो भगश्च माविदद्यशो मा प्रतिपद्य-ताम् ' इस मन्त्रको बोलकर वर उत्तरीयवस्त्र धारण करे । फिर वर और कन्या दो दो आचमन करै फिर कन्याका पिता वर और कन्याको परस्पर सम्मुख (आमने सामने) बैठाकर उन दोनोंको परस्पर एक दूसरेसे देखनेकी आज्ञा देवे । उस काल वर आगे लिखे 'ॐ समञ्जन्तु विश्वेदेवाः समापो हृदयानि नौ । संमा-तरिश्वा संधाता समुद्देष्ट्री दधातु नौ ' इस मन्त्रका पाठ करे । फिर कोई कन्यापक्षीय पाधा अथवा पुरोहित कन्या और वरका ग्रन्थिबन्धन (गण्ठजोडा) करे । अनन्तर कन्या और वरके हाथोंमें हलदी लेपन पूर्वक दोनों पक्षके पुरोहित या पाधा शाखोच्चार करें । फिर यजमान कन्यादान करे । कन्याका पिता शंखमें दूर्वाक्षत फल पुष्प चन्दन तथा जल रखकर जामा-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

परि कन्यादक्षिणकरं निधाय ॐ दाताहं वरुणो राजा द्रव्यमादित्यदैवतम्। वरोऽसौ विष्णुरूपेण प्रतिगृह्णात्वयं विधिः॥ इति पठित्वा गोत्रोच्चारणं कुर्यात्। ॐ अद्यामुकमासीयामुकपक्षीयामुकतिथौ अमुकवासरे अमुकगोत्रस्यामुकप्रवरस्यामुकशर्मणः प्रपौत्राय, अमुकगोत्रस्यामुकप्रवरस्यामुकशर्मणः पौत्राय, अमुकगोत्रस्यामुकप्रवरस्यामुकशर्मणः पुत्राय। अमुकगोत्रस्यामुकप्रवरस्यामुकशर्मणः प्रपौत्रीम्। अमुकगोत्रस्यामुकप्रवरस्या-

---

ताके दाहिने हाथपर कन्याका दाहिना हाथ रख 'ॐ दाताहं वरुणो राजा द्रव्यमादित्यदैवतम्। वरोऽसौ विष्णुरूपेण प्रतिगृह्णात्वयं विधिः॥' यह मन्त्र पाठपूर्वक गोत्रोच्चारण करे। कन्यादानका संकल्प। यथा—ॐ अद्यामुकमासीयामुकपक्षीयामुकतिथौ अमुकवासरे अमुकगोत्रस्यामुकप्रवरस्यामुकशर्मणः प्रपौत्राय। अमुकगोत्रस्यामुकप्रवरस्यामुकशर्मणः पौत्राय। अमुकगोत्रस्यामुकप्रवरस्यामुकशर्मणः पुत्राय[1] अमुकगोत्रस्यामुकप्रवरस्यामुकशर्मणः प्रपौत्रीम्। अमुकगोत्रस्यामुकप्रवरस्यामुकशर्मणः पौत्रीम्। अमुकगोत्रस्यामुकप्रवरस्यामुकशर्मणः पुत्रीम्।

---

१ इस स्थानमें प्रत्येक श्लाकके अन्तमें 'पुत्राय' तक तीनों पीढीके नामोंके अमुकपदकी जगह गोत्रप्रवर वेद शाखा सूत्रोंके नामोंका उच्चारण करना चाहिये। गोत्रशाखोच्चारण यहां 'त्रिरावर्त्य पठनीयं' पदका तात्पर्य यह है कि 'अमुकगोत्रस्य' से लेकर 'अमुक शर्मणः पुत्रीम्' यहाँतकका पाठ तीन वार पढकर फिर आगेके संकल्पका उच्चारण करना चाहिये॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मुकशर्मणः पौत्रीम् । अमुकगोत्रस्यामुकप्रवरस्यामुक-शर्मणः पुत्रीम् इत्यनेन क्रमेण त्रिरावर्त्य पठनीयम् । अमुकगोत्राय अमुकप्रवराय अमुकशर्मणे वराय अमुक-गोत्रां अमुकप्रवरां अमुकनाम्नीं इमां कन्यां सालङ्कारां प्रजापतिदैवत्यां स्वर्गकामः पत्नीत्वेन तुभ्यमहं संप्रददे । ॐ स्वस्तीति प्रतिवचनम् । ॐ द्यौस्त्वा ददातु पृथिवी त्वा प्रतिगृह्णातु इति वरः पठेत् । ततः कन्याप्रदः ॐ अद्य कृतैतत्कन्यादानप्रतिष्ठार्थं इदं सुवर्णमग्निदैवतं अमुक-

---

इत्यनेन क्रमेण त्रिरावर्त्य पठनीयम् । अमुकगोत्राय अमुक-प्रवराय अमुकशर्मणे वराय अमुकगोत्रां अमुकप्रवरां अमुक-नाम्नीमिमां कन्यां सालंकारां प्रजापतिदैवत्यां स्वर्गकामः पत्नीत्वेन तुभ्यमहं सम्प्रददे ' तब वर ' ॐ स्वस्ति ' कहकर उस कन्यादानको ग्रहण करे । फिर वर आगे लिखे 'ॐद्यौस्त्वा ददातु पृथिवी त्वा प्रतिगृह्णातु ' इस मन्त्रको उच्चारण करे । तत्पश्चात् कन्याका पिता आगे लिखा ' अद्य कृतैतत्कन्या-दानप्रतिष्ठार्थमिदं सुवर्णमग्निदैवतं अमुकगोत्राय अमुकप्रवराय अमुकशर्मणे वराय दक्षिणां तुभ्यमहं सम्प्रददे ' यह संकल्प उच्चा-रण करके सुवर्ण या गोमिथुन (एक गाय एक बैल) वरको दक्षिणास्वरूप देवे । तब उसको भी वर ' ॐ स्वस्ति ' ऐसा कहकर ले लेवे । जिसके अन्तर्गत है ऐसे संकल्पके पीछे वर ' ॐ स्वस्ति ' उच्चारण करके ' ॐ द्यौस्त्वा ' मन्त्रका पाठ करे । फिर कन्यादान करनेवाला पिता संकल्पपूर्वक अपने

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

गोत्राय अमुकप्रवराय अमुकशर्मणे वराय दक्षिणां तुभ्यमहं संप्रददे इति दक्षिणां दद्यात् । ॐ स्वस्तीतिप्रतिवचनम् । गोमिथुनं वा दद्यात्। ॐकोदात्कस्मा अदात्कामोऽदात्कामायादात् । कामो दाता कामः प्रतिग्रहीता कामैतत्ते इति वरः पठेत् । ततस्तां पाणौ गृहीत्वा ॐ यदैषि मनसा दूरं दिशोनुपवमानो वा हिरण्यपर्णो वैकर्णः स त्वा मन्मनसां करोतु । श्रीअमुकदेवी इति पठन्निष्क्रामति । ततो वेदिदक्षिणस्यां दिशि वारिपूर्णदृढकलशं ऊर्द्ध तिष्ठतो मौनिनः पुरुषस्य स्कंधे अभिषेकपर्यन्तं धारयेत् । ततः परस्परं समीक्षेथां इति कन्याप्रदप्रैषानंतरं ॐ अघोरचक्षु-

---

सामर्थ्यके अनुसार सुवर्ण अथवा एक गौ और एक बैल वरके निमित्त कन्यादानकी दक्षिणामें प्रदान करे और वर 'ॐ कोदात्' इत्यादिमन्त्र उच्चारण करके उसको ग्रहण कर लेवे । और आगे लिखे 'ॐ कोऽदात्कस्मा अदात् कामोऽदात् कामायादात् कामो दाता कामः प्रतिग्रहीता कामैतत्ते' इस मन्त्रको पढे । और फिर कन्याके हाथको पकडकर आगे लिखे 'यदैषि मनसा दूरं दिशोनुपवमानो वा हिरण्यपर्णो वैकर्णः स त्वा मन्मनसां करोतु श्रीअमुक देवी' इस मन्त्रको उच्चारण करता करता फिर वेदीके समीप आवे । फिर वेदीके दक्षिण दिशामें जलसे भराहुआ दृढकलश कन्धेपर रखकर चुपचाप एक मनुष्य अभिषेकपर्यन्त खडा रहे । पीछे कन्याका पिता तथा वरको आपसमें एक दूसरेके देखनेकी आज्ञा देवे । तब वर आगे लिखे 'ॐअघोरचक्षुरपतिघ्न्येधि शिवा पशुभ्यः सुमनाः सुवर्चाः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

रपतिघ्न्येधि शिवा पशुभ्यः सुमनाः सुवर्चाः । वीरसूर्देव-कामा स्योना शं नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे । सोमः प्रथमो विविदे गन्धर्वो विविद उत्तरः । तृतीयोऽग्निष्टे पतिस्तुरीयस्ते मनुष्यजाः । सोमोऽददद्गन्धर्वाय गन्धर्वोऽददग्नये । रयिं च पुत्रांश्चादादग्निर्मह्यमथो इमाम् । सा नः पूषा शिवतमा मैरय सा न ऊरू उशती विहर । यस्यामुशंतः प्रहराम शेफं यस्यामु कामा बहवो निविष्टचै । इति वर-पठितमंत्रांते परस्परं निरीक्षणम् । ततोऽग्निं प्रदक्षिणीकृत्य पश्चादग्नेरहतवस्त्रवेष्टिततृणपुलके कटे वा तदुपरि दक्षिणं चरणं दत्त्वा वधूं दक्षिणतः कृत्वा तामुपवेश्य स्वयमुप-विश्य वरः पुष्पचन्दनतांबूलवस्त्राण्यादायॐअद्य कर्तव्य-

---

वीरसूर्देवकामा स्योना शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे । सोमः प्रथमो विविदे गन्धर्वो विविद उत्तरः। तृतीयोऽग्निष्टे पतिस्तुरीयस्ते मनुष्यजाः । सोमोऽददद् गन्धर्वाय गन्धर्वोऽददग्नये । रयिं च पुत्रांश्चादादग्निर्मह्यमथो इमाम् । सा नः पूषा शिवतमा मैरय सा न ऊरू उशती विहर । यस्यामुशंतः प्रहराम शेफं यस्यामु कामा बहवो निविष्टचै इस मन्त्रको उच्चारण करे और तब दोनों जन परस्पर एक दूसरेको देखें । फिर वधू वर अग्निकी प्रदक्षिणा करे अग्निके पश्चिमकी और नवीन वस्त्रसे लपेटे हुए घासके पूले या चटाईके ऊपर दाहिने चरणको रख और वधूको वर अपने दाहिनी ओर बैठाकर आप भी बैठे फिर पुष्प, चन्दन, ताम्बूल, वस्त्र इन वस्तुओंको हाथमें लेकर 'अद्य कर्तव्यविवाहहोमकर्मणि कृता-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

विवाहहोमकर्मणि कृताकृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्म कर्तुममुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणमेभिः पुष्पचन्दनताम्बूलवासोभिर्ब्रह्मत्वेन होतृत्वेन च त्वामहं वृणे इति ब्राह्मणं वृणुयात् । ॐ वृतोऽस्मीति प्रतिवचनम् । यथाविहितं कर्म कुरु इति वरणोक्ते ॐ करवाणीति ब्राह्मणो वदेत् । ततोऽग्नेर्दक्षिणतः शुद्धमासनं दत्त्वा तदुपरि प्रागग्रान् कुशानास्तीर्य ब्राह्मणमग्निं प्रदक्षिणक्रमेणानीयात्र त्वं मे ब्रह्मा भवेत्यभिधाय कल्पितासने उपवेशयेत् । ॐ अद्य कर्तव्यविवाहकर्मणि कृताकृतावेक्षणरूपाचार्यकर्म कर्तुममुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणमेभिः पुष्पचन्दनताम्बूलवासोभिः आचार्यत्वेन त्वामहं वृणे । ॐ वृतोऽस्मीति

कृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्म कर्तुममुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणमेभिः पुष्पचन्दनताम्बूलवासोभिर्ब्रह्मत्वेन होतृत्वेन च त्वामहं वृणे' ऐसा कहकर ब्राह्मणका वरण करे । तब 'ॐ वृतोऽस्मि' ऐसा ब्राह्मण कहे । फिर 'यथाविहितं कर्म कुरु' ऐसा वरके कहनेपर 'ॐ करवाणि' ऐसा ब्राह्मण कहे । तत्पश्चात् अग्निके दक्षिणकी ओर शुद्ध आसन बिछाकर उसपर पूर्वको अग्रभागवाले कुशा बिछाय ब्रह्माको अग्निकी प्रदक्षिणाके क्रमानुसार समीप बुलाय 'त्वं मे ब्रह्मा भव' ऐसा कह उसको उस आसनपर बैठाल देवे फिर 'ॐ अद्य कर्तव्यविवाहकर्मणि कृताकृतावेक्षणरूपाचार्यकर्म कर्तुममुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणमेभिः पुष्पचंदनताम्बूलवासोभिः आचार्यत्वेन त्वामहं वृणे' इस प्रकार कहकर आचार्यका वरण करे, तब आचार्य 'ॐ वृतोऽस्मि' ऐसा कहे । फिर

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्रतिवचनम् । ततः प्रणीतापात्रं पुरतः कृत्वा वारिणा-ऽऽपूर्य कुशैराच्छाद्य ब्रह्मणो मुखमवलोक्य अग्नेरुत्तरतः कुशोपरि निदध्यात् । ततः परिस्तरणम्—बर्हिषश्चतुर्थ-भागमादाय आग्नेयादीशानान्तं ब्रह्मणोऽग्निपर्यंतं नैर्ऋत्या-द्वायव्यान्तम् अग्नितः प्रणीतापर्यंतं ततोऽग्नेरुत्तरतः पश्चिमदिशि पवित्रच्छेदनार्थं कुशत्रयं पवित्रकरणार्थं साग्र-मनन्तर्गर्भकुशपत्रद्वयं प्रोक्षणीपात्रं आज्यस्थाली सम्मा-र्जनार्थं कुशत्रयम् उपयमनार्थं वेणीरूपकुशत्रयं समिध-

---

प्रणीतापात्रको आगे रखकर जलसे भर देवे और उसको कुशा-ओंसे ढककर ब्रह्माके मुखको देख अग्निके उत्तरकी ओर कुशा-ओंपर धर देवे । फिर परिस्तरण करे अर्थात् मुट्ठीभर या सौ कुश हाथमें लेकर उसके चार भाग करे उनमें पहला भाग अग्नि-कोनसे ईशानकोनतक, दूसरा भाग ब्रह्माके आसनसे अग्नि वेदी तक, तीसरा भाग नैर्ऋतकोनसे वायुकोनतक और चैथा भाग अग्निसे प्रणीतापर्यन्त बिछा देना चाहिये । अनंतर अग्निसे उत्तरकी तरफ पश्चिमदिशामें पवित्र छेदनके लिये तीन कुशा रक्खे और पवित्र बनानेके लिये अग्रभाग सहित और बीचके पत्तेसे रहित अर्थात् जिसके भीतर अन्य कुशपत्र न हों दो कुश पत्र रक्खे। फिर प्रोक्षणीपात्र आज्यस्थाली संमार्जन कुशाओंके लिये तीन कुशा[1] उपयमनके लिये कुशा वेणीरूप[2] करके रक्खे

---

१ प्रचलित पांच कुशा । २ कलावेसे लपेट चोटीकी समान आकार बनाकर रक्खे ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

स्तिस्रः स्रुव आज्यं षट्पञ्चाशदुत्तरमुष्टिशतद्वयाव-च्छिन्नतण्डुलपूर्णपात्रं पवित्रच्छेदनकुशानां पूर्वपूर्वदिशि क्रमेणासादनीयम्। अथ तस्यामेव दिशि असाधारण-वस्तून्युपकल्पनीयानि। तत्र शमीपलाशमिश्रा लाजाः दृषदुपलं कुमारीभ्राता शूर्पः दृढपुरुषः अन्यदपि तदु-पयुक्तमालेपनादिद्रव्यम्। ततः पवित्रच्छेदनकुशैः पवित्रे छित्त्वा ततः सपवित्रकरेण प्रणीतोदकं त्रिः प्रोक्षणीपात्रे निधाय अनामिकांगुष्ठाभ्यां उत्तराग्रे

तीन समिधा स्रुवा आज्य और दो सौ छप्पन मुट्ठी चावलोंसे भरा हुआ पूर्ण पात्र इन सब वस्तुओंको पवित्रछेदनकी कुशा-ओंसे आगे पूर्व पूर्वकी तरफको क्रमसे रखता जाय। इसके उपरांत उसी दिशामें इन असाधारण वस्तुओंको भी इकट्ठी करे। वे यह हैं—शमी (जंडवृक्ष) की पत्तोंसे युक्त खीलें, पत्थर, लडकीका भाई, सूप (छाज), कोई एक दृढ पुरुष तथा औरभी उस विवाहकार्यके योग्य आलेपनादि द्रव्य रक्खे। फिर पवित्र छेदनकी कुशाओंसे पवित्रको छेदन कर पवित्रसहित प्रणीताके जलको हाथमें लेकर तीन वार प्रोक्षणीपात्रमें डाले। फिर दाहिने हाथकी अनामिका और अंगुष्ठ इन दो अंगुलियोंसे पवित्रोंके अग्रभागको आगे करके ग्रहण करे। पश्चात् प्रोक्षणीपात्रका जल तीन वार ऊप-रको उछाले और प्रोक्षणीपात्रको बाँये हाथमें रखकर दाहिने हाथकी अनामिका और अंगुष्ठ इन दो अंगुलियोंसे पवित्रोंको

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पवित्रे गृहीत्वा त्रिरुत्पवनं ततः प्रोक्षणीपात्रस्य सव्य-हस्ते करणं अनामिकांगुष्ठाभ्यां पवित्रे गृहीत्वा त्रिरुद्दिंगनं प्रणीतोदकेन प्रोक्षणीजलेन यथासादितवस्तु-सेचनं ततोऽग्निप्रणीतयोर्मध्ये प्रोक्षणीपात्रनिधानम् । आज्यस्थाल्यामाज्यनिर्वापः ततोऽधिश्रयणं ततो ज्वल-त्तृणादिना हविर्वेष्टयित्वा प्रदक्षिणक्रमेण वह्नौ तत्प्रक्षेपः पर्यग्निकरणं ततः स्रुवप्रतपनं कृत्वा सम्मार्जनकुशाना-मग्रैरंतरतो मूलैर्बाह्यतः स्रुवं संमृज्य प्रणीतोदकेन अभ्युक्ष्य पुनः प्रतप्य स्रुवं दक्षिणतो निदध्यात् । तत आज्यस्याग्नेरवतारणं तत आज्ये प्रोक्षणीवदुत्पवनं

ग्रहण कर तीन वार जलको ऊपर (आकाशकी ओर) सेचन करे । प्रणीता और प्रोक्षणीके जलसे पूर्वस्थापित सब वस्तु-ओंको सेचन करे तत्पश्चात् उस प्रोक्षणीपात्रको अग्नि और प्रणीताके बीचमें रख देना चाहिये । फिर आज्यस्थालीमें घृत डालकर अग्निपर चढा देवे और पीछे एक कुश बालकर प्रदक्षिण क्रमसे घृतके चारों ओर उसको घुमाता हुआ अग्निमें डालदेवे । इसके पीछे पर्यग्निकरण करे । अनन्तर स्रुवेको अग्निमें तपाकर संमार्जन कुशाओंके अग्रभागसे स्रुवेके भीतर और मूलभागसे बाहर स्रुवेको शुद्ध कर प्रणीताके जलसे सेचनपूर्वक फिर दूसरी बार तपावे और तब उसको अग्निके दक्षिणकी ओर रख देवे । फिर उस घृतको अग्निसे उतार लेवे तत्पश्चात् आज्यको प्रोक्षणीपात्रकी नाईं पवित्रोंसे उछाले और देखे यदि उसमें

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation,Delhi and eGangotri.

अवेक्ष्य सत्यपद्रव्ये तन्निरसनं पुनः प्रोक्षण्युत्पवनं ततः उपयमनकुशानादाय उत्तिष्ठन्प्रजापतिं मनसा ध्यात्वा तूष्णीमग्नौ घृताक्तास्तिस्रः समिधः क्षिपेत् । तत उपविश्य सपवित्रप्रोक्षण्युदकेन प्रदक्षिणक्रमेणाग्निपर्युक्षणं कृत्वा प्रणीतापात्रे पवित्रे निधाय पातितदक्षिणजानुः कुशेन ब्रह्मणान्वारब्धः समिद्धतमेऽग्नौ स्रुवेणाज्याहुतीर्जुहोति । तत्राघारादारभ्य द्वादशाहुतिषु तत्तदाहुत्यनन्तरं स्रुवावस्थितहुतशेषघृतस्य प्रोक्षणीपात्रे प्रक्षेपः । ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये० इति मनसा । ॐ इन्द्राय स्वाहा

कोई मक्खी इत्यादि अपवित्र वस्तु पडी हो तो उसको निकालकर फेंक देना चाहिये । फिर प्रोक्षणीपात्रके जलको पवित्रोंसे उछाले तदनन्तर उपयमनकुशाओंको बायें हाथमें लेकर खडा हो जाय और पूर्वस्थापित तीन समिधाओंको घृतमें भिजोकर 'स्वाहा' शब्दके साथ मनमें प्रजापतिका ध्यान करके चुपचाप अग्निमें डाल देवे । फिर आसनपर बैठकर पवित्रोंसहित प्रोक्षणीपात्रका जल हाथमें लेकर अग्निके चारों तरफ सेचन करे और फिर पवित्रोंको प्रणीतापात्रमें रख देवे । अनन्तर दाहिनी जानुको नवायकरके कुशके द्वारा ब्रह्मासे मिलित हो जलती हुई अग्निमें स्रुवेके द्वारा घृतकी आहुति देवे । इन आहुतियोंमें आघार आहुतियोंसे लेकर बारह आहुतियोंतक स्रुवेमें रहे शेष घृतको प्रोक्षणीपात्रमें डालता जाय । ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये० । इति मनसा । ॐ

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

इदमिन्द्राय०। इत्याघारौ॥ ॐ अग्नये स्वाहा इदमग्नये०। ॐ सोमाय स्वाहा इदं सोमाय०। इत्याज्यभागौ। ॐ भूःस्वाहा इदमग्नये०। ॐ भुवः स्वाहा इदं वायवे०। ॐ स्वः स्वाहा इदं सूर्याय०। एता महाव्याहृतयः। त्वन्नो अग्ने इति वामदेव ऋषिः अग्नीवरुणौ देवते त्रिष्टुप्छन्दो होमे विनियोगः। ॐ त्वन्नो अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडो अव यासिसीष्ठाः। यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषाꣳसि प्रमुमुग्ध्यस्मत्स्वाहा इदमग्नीवरुणाभ्यां०। ॐ स त्वन्नो अग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टौ। अव यक्ष्व नो वरुणꣳ रराणो व्वीहि मृडीकꣳ सुहवो न एधि स्वाहा इदमग्नीवरुणाभ्यां०। अया-

---

इन्द्राय स्वाहा इदमिन्द्राय०। इत्याघारौ। ॐ अग्नये स्वाहा इदमग्नये०। ॐ सोमाय स्वाहा इदं सोमाय०। इत्याज्यभागौ॥ ॐ भूः स्वाहा इदमग्नये०। ॐ भुवः स्वाहा इदं वायवे०। ॐ स्वः स्वाहा इदं सूर्याय०। एता महाव्याहृतयः॥ त्वन्नो अग्ने इति वामदेवऋषिः अग्नीवरुणौ देवते त्रिष्टुप्छन्दो होमे विनियोगः। ॐ त्वन्नो अग्ने वरुणस्य विद्वान्देवस्य हेडो अव यासिसीष्ठाः। यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषाꣳसि प्रमुमुग्ध्यस्मत् स्वाहा इदमग्नीवरुणाभ्याम्। ॐ स त्वन्नो अग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टौ। अव यक्ष्व नो वरुणꣳ रराणो व्वीहि मृडीकꣳ सुहवो न एधि स्वाहा इदमग्नीवरुणाभ्याम्०। अयाश्चाग्ने इति वामदेव ऋषिः अग्निर्देवता त्रिष्टुप् छन्दः सर्व-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

श्चाग्ने इति वामदेवऋषिः अग्निर्देवता त्रिष्टुप्छंदः सर्वप्राय-श्चित्तहोमे विनियोगः । ॐ अयाश्चाग्नेस्यनभिशस्तिपाश्च सत्वमित्वमया असि । अयानो यज्ञं वहास्ययानो धेहि भेषजꣳ स्वाहा इदमग्नये० । ॐ ये ते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता महान्तः । तेभिर्नो अद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुंचंतु मरुतः स्वर्काः स्वाहा इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च० । ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यमꣳश्रथाय । अथा व्वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा इदं वरुणाय० । एताः प्रायश्चित्त-

---

प्रायश्चित्तहोमे विनियोगः । ॐ अयाश्चाग्नेस्यनभिशस्तिपाश्च सत्वमित्वमया असि । अयानो यज्ञं वहास्ययानो धेहि भेषजꣳ स्वाहा इदमग्नये० । ॐ ये ते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता महान्तः । तेभिर्नो अद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुंचंतु मरुतः स्वर्काः स्वाहा इदं वरुणाय सवित्रे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च० । ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं विमध्यमꣳ श्रथाय । अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा इदं वरुणाय० । एताः प्रायश्चित्तसंज्ञकाः ॥

---

१ समस्त आहुतियोंके अन्तमें त्याग वाक्य स्वयं वरकोही उच्चारण करना चाहिये । कारण कि इस होममें यजमान वरही है । चौदह आहुतियोंके पीछे ब्रह्माके अन्वारब्ध किये विनाही आहुतियें प्रदान करनी उचित हैं । यहां जिस जिस स्थानमें उदकोपस्पर्शन लिखा है वहां वहाँ दाहिने हाथसे प्रणीताके जलका स्पर्श करना चाहिये ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

संज्ञकाः । ततोऽन्वारब्धं विना ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये० ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा इदमग्नये स्विष्टकृते० । उदकोपस्पर्शनम् । अथ राष्ट्रभृतः । ॐ ऋताषाड्ढतधामाग्निर्गंधर्वः स न इदं ब्रह्मक्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाट् इदमृतासाहे ऋतधाम्नेऽग्नये गंधर्वाय० १ । ॐ ऋताषाड्ढतधामाग्निर्गंधर्वस्तस्यौषधयोऽप्सरसो मुदो नाम ताभ्यः स्वाहा इदमोषधीभ्योऽप्सरोभ्यो मुद्भ्यो० २ । ॐ सꣳहितो विश्वसामा सूर्यो गंधर्वः स न इदं ब्रह्मक्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाट् इदं सꣳहिताय विश्वसाम्ने सूर्याय गंधर्वाय० ३ । ॐ सꣳहितो विश्वसामा सूर्यो गंधर्वस्तस्य मरीचयोऽप्सरस आयुवो नाम ताभ्यः स्वाहा इदं मरीचिभ्योऽप्सरोभ्य आयुभ्यो० ४ । ॐ सुषुम्णः सूर्यरश्मिश्चन्द्रमा गंधर्वः स

ततोऽन्वारब्धं विना ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये० । ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वा. इदमग्नये स्विष्टकृते. उदकोपस्पर्शनम् । अथ राष्ट्रभृतः । ॐ ऋताषाड्ढतधामाग्निर्गन्धर्वः स न इदं ब्रह्मक्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाट् इदमृतासाहे ऋतधाम्नेऽग्नये गन्धर्वाय० १ । ॐ ऋताषाड्ढतधामाग्निर्गन्धर्वस्तस्यौषधयोऽप्सरसो मुदो नाम ताभ्यः स्वाहा इदमोषधीभ्योऽप्सरोभ्यो मुद्भ्यो० २ । ॐ सꣳहितो विश्वसामा सूर्यो गन्धर्वः स न इदं ब्रह्मक्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाट् इदं सꣳहिताय विश्वसाम्ने सूर्याय गन्धर्वाय० ३ । ॐ सꣳहितो विश्वसामा सूर्यो गन्धर्वस्तस्य मरीचयोऽप्सरस आयुवो नाम ताभ्यः स्वाहा इदं मरीचिभ्योऽप्सरोभ्य आयुभ्यो० ४ । ॐ सुषुम्णः सूर्य-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

न इदं ब्रह्मक्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाट् इदं सुषुम्णाय सूर्यरश्मये चंद्रमसे गंधर्वाय० ५। ॐ सुषुम्णः सूर्यरश्मिश्चन्द्रमा गंधर्वस्तस्य नक्षत्राण्यप्सरसो भेकुरयो नाम ताभ्यः स्वाहा इदं नक्षत्रेभ्योऽप्सरोभ्यो भेकुरिभ्यो० ६। ॐ इषिरो विश्वव्यचा वातो गंधर्वः स न इदं ब्रह्मक्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाट् इदमिषिराय विश्वव्यचसे वाताय गंधर्वाय० ७। ॐ इषिरो विश्वव्यचा वातो गंधर्वस्तस्यापोऽप्सरस ऊर्जो नाम ताभ्यः स्वाहा इदमद्भ्योऽप्सरोभ्य ऊर्ग्भ्यो० ८। ॐ भुज्युः सुपर्णो यज्ञो गंधर्वः स न इदं ब्रह्मक्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाट् इदं भुज्यवे सुपर्णाय यज्ञाय गंधर्वाय० ९। ॐ भुज्युः सुपर्णो यज्ञो गंधर्व-

---

रश्मिश्चन्द्रमा गन्धर्वः स न इदं ब्रह्मक्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाट् इदं सुषुण्माय सूर्यरश्मये चन्द्रमसे गन्धर्वाय० ५ । ॐ सुषुम्णः सूर्यरश्मिश्चन्द्रमा गन्धर्वस्तस्य नक्षत्राण्यप्सरसो भेकुरयो नाम ताभ्यः स्वाहा इदं नक्षत्रेभ्योऽप्सरोभ्यो भेकुरीभ्यो ६ । ॐ इषिरो विश्वव्यचा वातो गन्धर्वः स न इदं ब्रह्मक्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाट् इदमिषिराय विश्वव्यचसे वाताय गन्धर्वाय० ७ ।ॐ इषिरो विश्वव्यचा वातो गन्धर्वस्तस्यापोऽप्सरस ऊर्जो नाम ताभ्यः स्वाहा इदमद्भ्योऽप्सरोभ्य ऊर्ग्भ्यो० ८ । ॐ भुज्यः सुपर्णो यज्ञो गन्धर्वः स न इदं ब्रह्मक्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाट् इदं भुज्यवे सुपर्णाय यज्ञाय गन्धर्वाय० ९ ॐ भुज्यः सुपर्णो यज्ञो गन्धर्व

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

स्तस्य दक्षिणा अप्सरसस्तावा नाम ताभ्यः स्वाहा इदं दक्षिणाभ्योऽप्सरोभ्यः स्तावाभ्यो० १० ॐ प्रजापतिर्विश्वकर्मा मनो गंधर्वः स न इदं ब्रह्मक्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाट् इदं प्रजापतये विश्वकर्मणे मनसे गंधर्वाय० ११। ॐ प्रजापतिर्विश्वकर्मा मनो गंधर्वस्तस्य ऋक्सामान्यप्सरस एष्टयो नाम ताभ्यः स्वाहा इदमृक्सामभ्योऽप्सरोभ्य एष्टिभ्यो० १२। इति राष्ट्रभृतः॥ अथ जयाहोमः। ॐ चित्तं च स्वाहा इदं चित्ताय०। ॐ चित्तिश्च स्वाहा इदं चित्त्यै०। ॐ आकूतं च स्वाहा इदमाकूताय०। ॐ आकूतिश्च स्वाहा इदमाकूत्यै०।

स्तस्य दक्षिणा अप्सरसस्तावा नाम ताभ्यः स्वाहा इदं दक्षिणाभ्योऽप्सरोभ्यः स्तावाभ्यो० १०। ॐ प्रजापतिर्विश्वकर्मा-मनोगन्धर्वः स न इदं ब्रह्मक्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाट् इदं प्रजापतये विश्वकर्मणे मनसे गन्धर्वाय ११। ॐ प्रजापतिविश्वकर्मा मनो गन्धर्वस्तस्य ऋक्सामान्यप्सरस एष्टयो नाम ताभ्यःस्वाहा इदमृक्सामभ्योऽप्सरोभ्यो एष्टिभ्यो ०१२। इति राष्ट्रभृतः।अथ जयाहोमः। ॐ चित्तं च स्वाहा इदं चित्ताय०। ॐ चित्तिश्च स्वाहा इदं चित्त्यै०। ॐ आकूतं च स्वाहा इदमाकूताय। ॐ आकूतिश्च स्वाहा इदमाकूत्यै०। ॐ विज्ञातं च स्वाहा इदं

---

१ राष्ट्रभृत नामक होमका बारह आहुति, जया होमकी तेरह, अभ्यातान होमकी अठारह, पांच और यह सब मिलाकर बासठ आहुतियां विवाहसंबन्धी होम कहलाता है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ॐ विज्ञातं च स्वाहा इदं विज्ञाताय० । ॐ विज्ञातिश्च स्वाहा इदं विज्ञात्यै० । ॐ मनश्च स्वाहा इदं मनसे० । ॐ शक्करीश्च स्वाहा इदं शक्करीभ्यो० । ॐ दर्शश्च स्वाहा इदं दर्शाय० । ॐ पौर्णमासं च स्वाहा इदं पौर्णमासाय० । ॐ बृहच्च स्वाहा इदं बृहते० । ॐ रथंतरं च स्वाहा इदं रथन्तराय० ।ॐ प्रजापतिर्जयानिंद्राय वृष्णो प्रायच्छदुग्रः पृतनाज्येषु तस्मै विशः समनमन्तु सर्वाः स उग्रः स इहव्यो बभूव स्वाहा इदं प्रजापतये जयानिंद्राय० । इति जयाहोमः । उदकोपस्पर्शनम् । अथाभ्यातानहोमः । ॐ अग्निर्भूतानामधिपतिः स मावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्याᳬ स्वाहा इदमग्नये भूतानामधि-

---

विज्ञाताय० । ॐ विज्ञातिश्च स्वाहा इदं विज्ञात्यै० । ॐ मनश्च स्वाहा इदं मनसे० । ॐ शक्करीश्च स्वाहा इदं शक्करीभ्यो० । ॐ दर्शश्च स्वाहा इदं दर्शाय० । ॐ पौर्णमासं च स्वाहा इदं पौर्णमासाय० । ॐ बृहच्च स्वाहा इदं बृहते० । ॐ रथन्तरञ्च स्वाहा इदं रथन्तराय० ।ॐ प्रजापतिर्जयानिन्द्राय वृष्णो प्रायच्छदुग्रः पृतनाज्येषु तस्मै विशः समनमन्तु सर्वाः स उग्रः स इहव्यो बभूव स्वाहा । इदं प्रजापतये जयानिंद्राय० । इति जयाहोमः । उदकोपस्पर्शनम् । अथाभ्यातानहोमः ॐ अग्निर्भूतानामधिपतिः स मावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन्क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्याᳬस्वाहा इदमग्नये भूतानामधिपतये० ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पतये०।ॐ इंद्रो ज्येष्ठानामधिपतिः स मावत्वस्मिन्ब्रह्मण्यस्मिन्क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन्कर्मण्यस्यां देवहूत्याꣳ स्वाहा इदमिन्द्राय ज्येष्ठानामधिपतये० । ॐ यमः पृथिव्या अधिपतिः स मावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्याꣳ स्वाहा इदं यमाय पृथिव्या अधिपतये० । अत्र प्रणीतोदकस्पर्शः । ॐ वायुरन्तरिक्षस्याधिपतिः स मावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्याꣳ स्वाहा इदं वायवेऽन्तरिक्षस्याधिपतये० । ॐ सूर्यो दिवोऽधिपतिः स मावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन्कर्मण्यस्यांदेवहूत्याꣳस्वाहा इदं सूर्याय

ॐ इन्द्रो ज्येष्ठानामधिपतिः स मावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन्क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन्कर्मण्यस्यां देवहूत्याꣳ स्वाहा इदमिन्द्राय ज्येष्ठानामधिपतये० । ॐ यमः पृथिव्या अधिपतिः स मावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन्क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन्कर्मण्यस्यां देवहूत्याꣳ स्वाहा इदं यमाय पृथिव्या अधिपतये० । अत्र प्रणीतोदकस्पर्शः । ॐ वायुरन्तरिक्षस्याधिपतिः स मावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन्क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्याꣳ स्वाहा इदं वायवेऽन्तरिक्षस्याधिपतये० । ॐ सूर्यो दिवोधिपतिः स मावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन्क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन्कर्मण्यस्यां देवहूत्याꣳस्वाहा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

दिवोधिपतये० । ॐ चन्द्रमा नक्षत्राणामधिपतिः स मावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्म्मण्यस्यां देवहूत्याꣳ स्वाहा इदं चन्द्रमसे नक्षत्राणामधिपतये० । ॐ बृहस्पतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिः स मावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्म्मण्यस्यां देवहूत्याꣳ स्वाहा इदं बृहस्पतये ब्रह्मणोऽधिपतये० । ॐ मित्रः सत्यानामधिपतिः स मावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्म्मण्यस्यां देवहूत्याꣳ स्वाहा इदं मित्राय सत्यानामधिपतये० । वरुणोऽपामधिपतिः स मावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेस्यामाशिष्यस्याम्पुरोधायामस्मिन् कर्म्मण्यस्यां देवहूत्याꣳ स्वाहा इदं वरुणाया-

---

इदं सूर्याय दिवोधिपतये० । ॐ चन्द्रमा नक्षत्राणामधिपतिः स मावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्याꣳस्वाहा इदं चन्द्रमसे नक्षत्राणामधिपतये०।ॐबृहस्पतिर्ब्रह्मणोधिपतिःस मावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन्क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यांपुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्याꣳस्वाहा इदं बृहस्पतये ब्रह्मणोऽधिपतये० । ॐ मित्रः सत्यानामधिपतिः स मावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन्क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन्कर्मण्यस्यां देवहूत्याꣳस्वाहा इदं मित्राय सत्यानामधिपतये० । ॐ वरुणोऽपामधिपतिः स मावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्याꣳ

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पामधिपतये० । ॐ समुद्रः स्रोत्यानामधिपतिः स मावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्म्मण्यस्यां देवहूत्या ँस्वाहा इदं समुद्राय स्रोत्यानामधिपतये० । ॐ अन्न ँ साम्राज्यानामधिपतिः स मावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या ँ स्वाहा इदमन्नाय साम्राज्यानामधिपतये० । ॐ सोम ओषधीनामधिपतिः स मावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्म्मण्यस्यां देवहूत्या ँ स्वाहा इदं सोमायौषधीनामधिपतये० । ॐ सविता प्रसवानामधिपतिः स मावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्म्मण्यस्यां देवहूत्या ँस्वाहा

स्वाहा इदं वरुणायापामधिपतये० । ॐसमुद्रः स्रोत्यानामधिपतिः स मावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या ँस्वाहा इदं समुद्राय स्रोत्यानामधिपतये० । ॐअन्न ँ साम्राज्यानामधिपतिः स मावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन्कर्मण्यस्यां देवहूत्या ँस्वाहा इदमन्नाय साम्राज्यानामधिपतये० । ॐसोम ओषधीनामधिपतिः स मावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन्कर्मण्यस्यां देवहूत्या ँस्वाहा इदं सोमायौषधीनामधिपतये० । ॐ सविता प्रसवानामधिपतिः स मावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन्क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन्कर्मण्यस्यां

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

इदं सवित्रे प्रसवानामधिपतये० । ॐ रुद्रः पशूनामधिपतिः स मावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्म्मण्यस्यां देवहूत्याꣳ स्वाहा इदं रुद्राय पशूनामधिपतये० । अत्र प्रणीतोदकस्पर्शः । ॐ त्वष्टा रूपाणामधिपतिः स मावत्वस्मिन्ब्रह्मण्यस्मिन्क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्याꣳ स्वाहा इदं त्वष्ट्रे रूपाणामधिपतये० । ॐ विष्णुः पर्वतानामधिपतिः स मावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्म्मण्यस्यां देवहूत्याꣳ स्वाहा इदं विष्णवे पर्वतानामधिपतये० । ॐ मरुतो गणानामधिपतयस्ते मावन्त्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन्

देवहूत्याꣳस्वाहा इदं सवित्रे प्रसवानामधिपतये० । ॐरुद्रः पशूनामधिपतिः स मावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन्कर्मण्यस्यां देवहूत्याꣳस्वाहा इदं रुद्राय पशूनामधिपतये० । अत्र प्रणीतोदकस्पर्शः । ॐ त्वष्टा रूपाणामधिपतिः स मावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन्क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन्कर्मण्यस्यां देवहूत्याꣳस्वाहा इदं त्वष्ट्रे रूपाणामधिपतये० । ॐ विष्णुः पर्वतानामधिपतिः स मावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन्क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन्कर्मण्यस्यां देवहूत्याꣳस्वाहा इदं विष्णवे पर्वतानामधिपतये० । ॐ मरुतो गणानामधिपतयस्ते मावन्त्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन्क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायाम-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्याꣳ स्वाहा इदं मरुद्भ्यो गणानामधिपतिभ्यो० । ॐ पितरः पितामहाः परेऽवरे ततास्ततामहा इह माऽवन्त्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन्कर्मण्यस्यां देवहूत्याꣳ स्वाहा इदं पितृभ्यः पितामहेभ्यः परेभ्योऽवरेभ्यस्ततेभ्यस्ततामहेभ्यो० ॥ अत्र प्रणीतोदकोपस्पर्शनम् । इत्यभ्याताननामकम् ॥ ॐ अग्निरैतु प्रथमो देवतानाꣳ सोऽस्यै प्रजां मुंचतु मृत्युपाशात् । तदयꣳ राजा वरुणोऽनुमन्यतां यथेयꣳ स्त्री पौत्रमघन्न रोदात्स्वाहा इदमग्नये० । ॐ इमामग्निस्त्रायतां गार्हपत्यः प्रजामस्यै नयतु दीर्घमायुः । अशून्योपस्था जीवतामस्तु माता पौत्रमानंदमभिविबुध्यता-

---

स्मिन्कर्मण्यस्यां देवहूत्याꣳ स्वाहा इदं मरुद्भ्यो गणानामधिपतिभ्यो० । ॐ पितरः पितामहाः परेऽवरे ततास्ततामहा इह माऽवन्त्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन्क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन्कर्मण्यस्यां देवहूत्याꣳ स्वाहा इदं पितृभ्यः पितामहेभ्यः परेभ्योऽवरेभ्यस्ततेभ्यस्ततामहेभ्यो० ।अत्र प्रणीतोदकोपस्पर्शनम् । इत्यभ्याताननामकम्॥ ॐ अग्निरैतु प्रथमो देवतानाꣳ सोऽस्यै प्रजां मुंचतु मृत्युपाशात् । तदयꣳ राजा वरुणोऽनुमन्यतां यथेयꣳ स्त्री पौत्रमघन्न रोदात् स्वाहा इदमग्नये० । ॐ इमामग्निस्त्रायतां गार्हपत्यः प्रजामस्यै नयतु दीर्घमायुः । अशून्योपस्था जीवतामस्तु माता पौत्रमानंदमभिविबुध्यतामियꣳ स्वाहा इदमग्नये० । ॐ स्वस्ति नो

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मियꣳ स्वाहा इदमग्नये ०। ॐ स्वस्ति नो अग्ने दिव आ पृथिव्या विश्वानि धेह्ययथा यजत्र। यदस्यां महि दिवि जातं प्रशस्तं तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रꣳ स्वाहा इदमग्नये०। ॐ सुगं नु पन्थां प्रदिशन्न एहि ज्योतिष्मद्धेह्यजरन्न आयुः। अपैतु मृत्युरमृतं म अगाद्वैवस्वतो नो अभयं कृणोतु स्वाहा इदं वैवस्वताय०। अत्र प्रणीतोदकस्पर्शनम्। तत अन्तःपटं ॐ परं मृत्यो अनुपरेहि पन्थां यस्ते अन्य इतरो देवयानात्। चक्षुष्मते शृण्वते ते ब्रवीमि मा नः प्रजाꣳ रीरिषो मोत वीरान् स्वाहा इदं मृत्यवे०। अत्र प्रणीतोदकोपस्पर्शनम्। ततो वधूमग्रतः कृत्वा वरो वधूश्च द्वावपि प्राङ्मुखौ स्थितौ भवतः। ततो वराञ्जलिपुटोपरि संलग्नवध्व-

---

अग्ने दिव आ पृथिव्या विश्वानि धेह्ययथा यजत्र। यदस्यां महि दिवि जातं प्रशस्तं तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रꣳ स्वाहा इदमग्नये०। ॐ सुगं नु पंथां प्रदिशन्न एहि ज्योतिष्मद्धेह्यजरन्न आयुः। अपैतु मृत्युरमृतं म आगाद्वैवस्वतो नो अभयं कृणोतु स्वाहा इदं वैवस्वताय०। अत्र प्रणीतोदकस्पर्शनम्। अब यहां वधूको परदेमें करके आगे लिखे 'ॐ परं मृत्यो अनुपरेहि पंथां यस्ते अन्य इतरो देवयानात्। चक्षुष्मते शृण्वते ते ब्रवीमि मा नः प्रजाꣳ रीरिषो मोत व्वीरान्स्वाहा इदं मृत्यवे न मम। इस मन्त्रसे आहुति देवे। फिर प्रणीतापात्रके जलको छू लेवे। अनन्तर वधूको आगे करके वर वधू दोनों जने पूर्वाभिमुख खडे हो जांय फिर वरकी अंजलीके ऊपर संलग्न वधूकी अंजलीमें घीसे अभि-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अलिस्थघृताभिघारितवधूभ्रातृदत्तशमीपलाशमिश्रैर्लाजैर्वधूकर्तृको मंत्रपाठपूर्वको होमः । तत्र मन्त्राः—अर्यमणमित्याथर्वण ऋषिरग्निर्देवताऽनुष्टुप्छन्दो लाजाहोमे विनियोगः । ॐ अर्यमणं देवं कन्या अग्निमयक्षत । स नो अर्यमा देवः प्रेतो मुञ्चतु मा पते स्वाहा इदमर्यम्णे देवाय० । ॐ इयं नार्युपब्रूते लाजानावपन्तिका । आयुष्मानस्तु मे पतिरेधन्तां ज्ञातयो मम स्वाहा इदमग्नये० । ॐ इमाँल्लाजानावपाम्यग्नौ समृद्धिकरणं तव । मम तुभ्यं च संवननं तदग्निरनुमन्यतामियꣳ स्वाहा इदमग्नये० ।

घारित शमीके पत्तोंसे मिश्रित लाजा(खीलें)वधूका भाई (छाजके कोनों द्वारा) भरे, तब वधू आगे लिखे ' अर्यमणमित्याथर्वण ऋषिरग्निर्देवताऽनुष्टुप् छन्दो लाजाहोमे विनियोगः'इस वाक्यको बोलकर विनियोग छोडे । फिर वधू अपने हाथमें पहले रक्खी हुई घृत सेचनपूर्वक शमीपलाशमिश्रित खीलोंकी आहुति आगे लिखे 'ॐ अर्यमणं देवं कन्या अग्निमयक्षत । स नो अर्यमा देवः प्रेतो मुंचतु मा पते स्वाहा इदमर्यम्णे देवाय न मम । ॐ इयं नार्युपब्रूते लाजानावपन्तिका । आयुष्मानस्तु मे पतिरेधंतां ज्ञातयो मम स्वाहा । इदमग्नये न मम । ॐ इमाँल्लाजानावपाम्यग्नौ समृद्धिकरणं तव । मम तुभ्यं च संवननं तदग्निरनुमन्यतामियꣳ स्वाहा इदमग्नये न मम ' इन तीनों मन्त्रोंसे देवे । प्रत्येक मन्त्रके अन्तमें खडी हुई वधूके हाथसे तृतीयांश खीलोंकी आहुति खडा हुआ वर डाले त्याग वाक्यभी स्वयं वधूकोही बोलना चाहिये । तत्पश्चात् अंगुष्ठसहित वधूके दाहिने हाथको

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ततो वरो वधूदक्षिणहस्तं सांगुष्ठं गृह्णाति—ॐ गृभ्णामि ते सौभगत्वाय हस्तं मया पत्या जरदष्टिर्यथाऽसः। भगो अर्यमा सविता पुरंधिर्म्मह्यं त्वाऽदुर्गार्हपत्याय देवाः। अमोहमस्मि सा त्वꣳ सा त्वमस्यमो अहं सामाहमस्मि ऋक्त्वं द्यौरहं पृथिवी त्वं तावेहि विवहावहै सह रेतो दधावहै प्रजां प्रजनयावहै पुत्रान् विन्द्यावहै बहूंस्ते सन्तु जरदष्टयः संप्रियौ रोचिष्णू सुमनस्यमानौ पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतꣳ शृणुयाम शरदः शतमिति मंत्रेण। अथ वधूमग्नेरुत्तरतः प्राङ्मुखः पूर्वोपकल्पितं दृषदुपलं दक्षिणपादेनारोहयति वरः—ॐ आरोहेममश्मानमश्मेव त्वꣳ स्थिरा भव। अभितिष्ठ पृतन्यतो-

---

पकडकर वर आगे लिखे 'ॐ गृभ्णामि ते सौभगत्वाय हस्तं मया पत्या जरदष्टिर्यथाऽसः। भगो अर्यमा सविता पुरंधिर्मह्यं त्वादुर्गार्हपत्याय देवाः। अमोहमस्मि सा त्वꣳ सा त्वमस्यमो हं सामाहमस्मि ऋक्त्वं द्यौरहं पृथिवी त्वं तावेहि विवहावहै सह रेतो दधावहै प्रजां प्रजनयावहै पुत्रान्विन्द्यावहै बहूंस्ते सन्तु जरदष्टयः संप्रियौ रोचिष्णू सुमनस्यमानौ पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतꣳ शृणुयाम शरदः शतम्।' इन चार मन्त्रोंको पाठ करे। तदनन्तर अग्निसे उत्तरमें पूर्वाभिमुख खडा हुआ वर पहलेसे रक्खी हुई पत्थरकी शिलापर अपने बांये हाथसे वधू दाहिना पैर रखवाता हुआ 'ॐ आरोहेममश्मानमश्मेव त्वꣳ स्थिरा भव। अभितिष्ठ पृतन्यतोऽवबाधस्व पृतनायतः यह

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ऽवबाधस्व पृतनायतः ॥ इति मंत्रेण । आरूढायामेव तस्यां वरो गाथां गायति—ॐ सरस्वति प्रेदमव सुभगे वाजिनीवति। यां त्वा विश्वस्य भूतस्य प्रजायामस्याग्रतः॥ यस्यां भूतꣳ समभवद्यस्यां विश्वमिदं जगत् । तामद्य गाथां गास्यामि या स्त्रीणामुत्तमं यशः। ततोऽग्रे वधूः पश्चाद्वरः प्रणीताब्रह्मसहितमग्निप्रदक्षिणं कुरुतः। तत्र वरपठनीयो मंत्रः—ॐ तुभ्यमग्रे पर्य्यवहन् सूर्यां वहतुना सह। पुनः पतिभ्यो जायां दा अग्ने प्रजया सह॥ततः पश्चादग्नेःस्थित्वा लाजाहोमसाङ्गुष्ठहस्तग्रहणाश्मारोहणगाथागानाग्निप्रदक्षिणाः पुनरपि। तथैव एता नव लाजाहुतयः साङ्गुष्ठहस्तग्रहणत्रयम् गाथागानत्रयं प्रदक्षिणत्रयं संप-

---

मन्त्र पढे। फिर वधूके शिलापर पैर रक्खे। रखतेही वर आगे लिखे 'ॐ सरस्वति प्रेदमव सुभगे वाजिनीवति। यां त्वा विश्वस्य भूतस्य प्रजायामस्याग्रतः॥ यस्यां भूतꣳ समभवद्यस्यां विश्वमिदं जगत् । तामद्य गाथां गास्यामि या स्त्रीणामुत्तमं यशः' इस गाथाको गावे। गाथा गानके पश्चात् वधू आगे और वर पीछे चलते हुए प्रणीतापात्र तथा ब्रह्माके सहित अग्निकी प्रदक्षिणा करे चलता हुआ वर आगे लिखे 'ॐ तुभ्यमग्रे पर्यवहन् सूर्यां वहतुना सह। पुनः पतिभ्यो जायां दा अग्ने प्रजया सह' इस मन्त्रको पढता जावे। तिसके पीछे अग्निके पश्चिमकी ओर खडे होकर लाजाहोम, अंगुष्ठसहित हस्तग्रहण, शिलापर आरोहण, गाथागान और अग्निकी प्रदक्षिणा इन सब

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

द्यते । ततोऽवशिष्टलाजैः कन्याभ्रातृदत्तैरंजलिस्थशूर्पकोणेन वधूर्जुहोति—ॐ भगाय स्वाहा इदं भगाय०। चतुर्थं भ्रमणं तूष्णीं अग्रे वरः पश्चात् वधूः । ततस्तूष्णीं परिक्रमणम् । ततो वरः उपविश्य ब्रह्मणाऽन्वारब्धः आज्येन प्राजापत्यं जुहुयात् । ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये० । इति मनसा। अत्र प्रोक्षणीपात्रे हुतशेषाज्यप्रक्षेपः। तत आलेपनेनोत्तरोत्तरकृतसप्तमंडलेषु सप्तपदाक्रमणं

कामोंको उन उन उक्त मन्त्रोंसे तीसरी चौथीवार भी वैसा वैसाही करे । ऐसा करनेपर लाजाकी नौ आहुति हो जाती हैं तथा सांगुष्ठ हस्तग्रहण, गाथागान और प्रदक्षिणा तीन तीन हो जाती हैं । फिर तीसरी परिक्रमाके अनन्तर कन्याका भाई छाजके कोनेसे शेष रहे सब खीलोंको बहनकी अंजलीमें डाल देवे और वधू 'ॐ भगाय स्वाहा इदं भगाय० ' मन्त्र पढकर एकही वारमें आहुति प्रदानपूर्वक आगे वर पीछे वधू चलते-हुए विना मन्त्र पढे चुपचाप चौथी परिक्रमा करे । फिर वर बैठ जाय और ब्रह्मासे मिलकर आगे लिखे "ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये न मम" इति मनसा । इस मन्त्रसे प्राजापत्यं आहुति देवे इस आहुतिके देनेपर स्रुवेमें शेष रहे हुए घृतको प्रोक्षणीपात्रमें डाल देवे । फिर वेदीके उत्तरकी ओर

---

१ देशाचार तथा कुलाचारादिके अनुसार सात परिक्रमाभी वेदविरुद्ध नहीं है । क्योंकि वेदोक्त चारकी बाधक सात नहीं किंतु सातके अन्तर्गत चारको समझना चाहिये ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वरः कारयेत् वक्ष्यमाणमंत्रैः । तत्र प्रथमे-एकमिषे विष्णुस्त्वां नयतु । द्वितीये-द्वे ऊर्जे विष्णुस्त्वां नयतु । तृतीये-त्रीणि रायस्पोषाय विष्णुस्त्वां नयतु । चतुर्थे चत्वारि मायोभवाय विष्णुस्त्वां नयतु । पंचमे-पंच पशुभ्यो विष्णुस्त्वां नयतु । षष्ठे-षडृतुभ्यो विष्णुस्त्वां नयतु । सप्तमे-सखे सप्तपदा भव सा मामनुव्रता भव विष्णुस्त्वां नयतु ॥ ततोऽग्नेः पश्चादुपविश्य पुरुषस्य स्कंधे स्थितकुंभादाम्रपल्लवेन जलमानीय तेन च वरो वधूमेनां मूर्द्धन्यभिषिंचति-ॐ आपः शिवाः शिवतमाः शान्ताः शांततमास्तास्ते कृण्वंतु

लीपकर उत्तर उत्तरको सात मण्डल बनावे और उन सातोंमें एक एक बार वर वधूका चरण स्पर्श करता हुआ आगे लिखे हुए मन्त्रोंको उच्चारण करे (प्रथम मंडलमें चरण स्पर्श करनेका मन्त्र) ' एकमिषे विष्णुस्त्वां नयतु ' (दूसरे मंडलका) ' द्वे ऊर्जे विष्णुस्त्वां नयतु ' (तीसरे मंडलका मन्त्र) त्रीणि रायस्पोषाय विष्णुस्त्वां नयतु' (चौथे मंडलका मन्त्र) ' चत्वारि मायोभवाय विष्णुस्त्वां नयतु ' (पांचवें मंडलका मन्त्र) ' पञ्च पशुभ्यो विष्णुस्त्वां नयतु' (छठे मंडलका मंत्र) षडृतुभ्यो विष्णुस्त्वां नयतु' (सातवें मंडलका मंत्र)सखे सप्तपदा भव सा मामनुव्रता भव विष्णुस्त्वां नयतु' फिर अग्निके पश्चिमकी तरफ बैठकर पूर्व स्थापित पुरुषके कंधेपर रक्खे हुए कलशमेंसे आमके पत्ते द्वारा जल लेकर वर वधूके शिरमें आगे लिखे ' ॐ आपः

पं० [illegible]

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

भेषजमिति । पुनस्तथैवानीतजलेनात्मानमभिषिंचति-आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन । महे रणाय चक्षसे । यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः । उशतीरिव मातरः ॥ तस्मा अरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ । आपो जनयथा च नः ॥ इति तिसृभिः । अथैनां सूर्यमुदीक्षस्वेति ॐ तच्चक्षुरित्यनेन मंत्रेण वधूः सूर्यं पश्यति । अस्तमिते सूर्ये ध्रुवमुदीक्षस्वेति पतिप्रैषानंतरं ध्रुवं पश्यति । तत्र पठनीयो मंत्रः—ॐ ध्रुवमसि ध्रुवं त्वा पश्यामि ध्रुवैधि पोष्या मयि मह्यं त्वाऽदाद्बृहस्पतिः।

शिवाः शिवतमाः शान्ताः शान्ततमास्तास्ते कृण्वन्तु भेषजम् ' इस मन्त्रसे सेचन करे। तत्पश्चात् उसी प्रकार और उसी कलशसे आमके पत्ते द्वारा जल लेकर आगे लिखे 'ॐ आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन । महे रणाय चक्षसे ॥ यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः । उशतीरिव मातरः ॥ तस्मा अरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ । आपो जनयथा च नः ' इस मन्त्रसे अपने मस्तकमें सेचन करे । तदनन्तर वरके ' सूर्यमुदीक्षस्व ' ऐसा कहनेपर ' ॐ तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत् । पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतꣳ शृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतम्भूयश्च शरदः शतात्' इस मन्त्रको पढती हुई वधू सूर्यनारायणका दर्शन करे । यदि रात्रिकालमें विवाह हो तो वरके ' ध्रुवमुदीक्षस्व ' ऐसा कहनेपर 'ॐ ध्रुवमसि ध्रुवं त्वा पश्यामि ध्रुवैधि पोष्या मयि मह्यं त्वाऽदा-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मया पत्या प्रजावती संजीव शरदः शतमिति पृष्टा सा यदि न पश्यति तथापि पश्यामीति ब्रूयात्। ततो वरो वधूदक्षिणांसोपरि हस्तं नीत्वा तस्या हृदयमालभेत्। मम व्रते ते हृदयं दधामि मम चित्तमनुचित्तं ते अस्तु। मम वाचमेकमना जुषस्व प्रजापतिष्ट्वा नियुनक्तु मह्यमिति मंत्रेण। अथैनामभिमंत्रयति वरः—सुमङ्गलीरियं वधूरिमाꣳ समेत पश्यत। सौभाग्यमस्यै दत्त्वायाथास्तं विपरेतन॥ इति मंत्रेण। अथ वधूं बलवान् कश्चिद्ब्राह्मण उत्थाय प्रागुदग् वाऽनुगुप्तागारे लोहितानडुहचर्मणि प्रतिलोमा-

---

बृहस्पतिः। मया पत्या प्रजावती संजीव शरदः शतम्' इतना मन्त्र पढती हुई वधू ध्रुवतारेका दर्शन करे। यदि ध्रुव न दिखाई देवे तोभी वरके पूछने पर 'देखतीहूँ' ऐसा ही वधू कहे। तदनन्तर वर वधूके दाहिने कांधे परसे हाथ लेजाकर आगे लिखे 'ॐ मम व्रते ते हृदयं दधामि मम चित्तमनु चित्तं ते अस्तु। मम वाचमेकमना जुषस्व प्रजापतिष्ट्वा नियुनक्तु मह्यम्' इस मन्त्रको पढकर वधूके हृदयको स्पर्श करे। फिर वधूकी ओर देखता हुआ वर 'ॐ सुमङ्गलीरियं वधूरिमाꣳ समेत पश्यत। सौभाग्यमस्यै दत्त्वायाथास्तं विपरेतन' इस मन्त्रसे इसको अभिमन्त्रण करे। तत्पश्चात् कोई एक बलवान् ब्राह्मण अथवा वर वधूको उठाकर पूर्व तथा उत्तरकी ओरसे आच्छादित गुप्त घरमें लाल रँगके बैलका 'चर्म'[1] उल्टा बिछाकर उस पर वधूके

---

१ लाल रँगके वृषभचर्मके स्थानमें प्रायः लाल दूल बिछा दी जाती है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

स्तीर्णे उपवेशयेत् वरो वा—ॐ इह गावो निषीदंत्विहाश्वा इह पूरुषाः इहो सहस्रदक्षिणो यज्ञ इह पूषा निषीदतु ॥ इति मंत्रेण । अथ स्विष्टकृद्धोमः । ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा इदमग्नये स्विष्टकृते० । स्रुवावशिष्टाज्यस्य प्रोक्षणीपात्रे प्रक्षेपः । अयं च होमो ब्रह्मणाऽन्वारब्धकर्तृकः । तत आचम्य संस्रवप्राशनम् । अथाचम्य ॐ अद्य कृतैतद्विवाहहोमकर्मप्रतिष्ठार्थमिदं पूर्णपात्रं प्रजापतिदैवतममुकगोत्रायामुकशर्म्मणे ब्राह्मणाय दक्षिणां तुभ्यमहं संप्रददे इति ब्रह्मणे दक्षिणां दद्यात् । स्वस्तीति प्रतिवचनम् ।

आगे लिखा 'ॐ इह गावो निषीदंत्विहाश्वा इह पूरुषाः । इहो सहस्रदक्षिणो यज्ञ इह पूषा निषीदतु' यह मन्त्र पढकर बैठालदेवे इसके उपरान्त स्विष्टकृत् होम करना चाहिये । होम करनेका मंत्र यथा—'ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा इदमग्नये स्विष्टकृते न मम' यहां स्रुवेमें बचेहुए घृतको प्रोक्षणीपात्रमें गिरावे । यह आहुतिभी ब्रह्मासे मिलकरही दीजातीहै । फिर आचमन करके संस्रवप्राशन अर्थात् प्रोक्षणीपात्रके जलका प्राशन करना चाहिये । अनन्तर दूसरी बार फिर आचमन करे और फिर आगे लिखे 'ॐ अद्य कृतैतद्विवाहहोमकर्मप्रतिष्ठार्थमिदं पूर्णपात्रं प्रजापतिदैवतममुकगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय दक्षिणां तुभ्यमहं संप्रददे' इस संकल्पको उच्चारणपूर्वक पूर्णपात्रका दान करके ब्रह्माको दक्षिणा देवे तब ब्रह्मा 'ॐ स्वस्ति' कहकर उसको ले लेवे । पश्चात् आगे लिखे 'ॐ अद्य कृतैतद्विवाहहोमकर्मणि

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ॐ अद्य कृतैतद्विवाहहोमकर्मणि आचार्यकर्मप्रतिष्ठार्थमिदं हिरण्यमग्निदैवतद्रव्यं यथानामगोत्रायाऽमुकशर्मणे ब्राह्मणाय दक्षिणां तुभ्यमहं संप्रददे। ततो ब्रह्मग्रन्थिविमोकः। ॐ सुमित्रिया न आप ओषधयः संतु इति पवित्रं गृहीत्वा प्रणीताजलेन शिरः संमृज्य ॐ दुर्मित्रियास्तस्मै संतु योऽस्मान् द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः इत्यैशान्यां प्रणीतां न्युब्जीकुर्यात्। तत आस्तरणक्रमेण बर्हिरुत्थाप्याज्येनाभिघार्य हस्तेनैव बर्हिर्होमः। तत्र मंत्रः—ॐ देवा गातुविदो गातुं वित्वा गातुमित मनसस्पत इमं देव यज्ञꣳ स्वाहा व्वाते धाः स्वाहा। तत उत्थाय वधूदक्षिणहस्तेन

आचार्यकर्मप्रतिष्ठार्थमिदं हिरण्यमग्निदैवतं द्रव्यं यथानामगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय दक्षिणां तुभ्यमहं संप्रददे' इस संकल्पके द्वारा आचार्यको भी सुवर्णमयी दक्षिणा देवे और फिर ब्रह्मगांठको खोल देना चाहिये। तदुपरान्त आगे लिखे 'ॐ सुमित्रिया न आप ओषधयः सन्तु' इस मन्त्र द्वारा पवित्रोंसे प्रणीतापात्रका जल लेकर अपने शिरमें मार्जन करे और फिर आगे लिखे 'ॐ दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु योस्मान्द्वेष्टि यञ्च वयं द्विष्मः' इस मंत्रसे प्रणीतापात्रको ईशानकोनमें उलट देवे। अनन्तर आस्तरणके क्रमानुसार अर्थात् जिस क्रमसे बिछायेथे, उसी क्रमसे कुशाओंको उठाकर और घीमें बोरकर आगे लिखे 'ॐ देवा गातुविदो गातुं वित्वा गातुमित मनसस्पत इमं देव यज्ञꣳ स्वाहा वाते धाः स्वाहा' इस मन्त्रसे अग्निमें होम कर देवे।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

स्रुवस्पृष्टघृतपुष्पफलैः पूर्णाहुतिः । तत्र मंत्रः-ॐ मूर्द्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत आजातमग्निम् । कविꣳ सम्राजमतिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयन्त देवाः स्वाहा । ततः स्रुवेण भस्मानीय दक्षिणानामिकाग्रगृहीतभस्मना ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेरिति ललाटे । ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषं इति ग्रीवायाम् । ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषं इति दक्षिणांसे । ॐ तन्नो अस्तु त्र्यायुषमिति हृदि । एवं वध्वा अपि कुर्यात् । तन्नो इत्यस्य स्थाने तत्ते इति विशेषः ।

इसके पीछे वर उठे और वधूका दाहिना हाथ स्रुवेमें स्पर्श करावे और फिर स्रुवेको पुष्प फल घृतसे परिपूर्ण कर आगे लिखे 'ॐ मूर्द्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत आजातमग्निम् । कविꣳ सम्राजमतिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयन्त देवाः स्वाहा' इस मन्त्रसे पूर्णाहूति करे । फिर स्रुवेसे होमकी भस्म लेकर अनामिका अंगुलीके अग्रभाग द्वारा त्र्यायुष करे । उसका क्रम यथा 'ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः' इस मन्त्रको उच्चारण करके ललाटमें, 'ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषम्' इस मन्त्रको बोलकर गलेमें, 'ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषं' पढकर दक्षिण बाहुमूलमें और 'ॐ तन्नो अस्तु त्र्यायुषम्' इस मन्त्रका पाठ करके उस भस्मको हृदयमें लगाना चाहिये । फिर इसी प्रकार वधूकेभी त्र्यायुष करे किन्तु वधूके त्र्यायुष करते समय 'तन्नोअस्तु' के स्थानमें 'तत्ते अस्तु' उच्चारण करना चाहिहे, यह विशेष है ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तत आचारात् शणशङ्खशमीसुवर्णप्रेरितसिंदूरकरणं वरकर्तृकम् । ततोऽन्यैरपि प्रतिष्ठितस्त्रीपुरुषैः सिंदूरकरणं ग्राम्यवचनं वरः कुर्यात् ग्राम्याः स्त्रियः । अथ वेदीतो मंडपमागत्य दूर्वाक्षतादिग्रहणं ततस्त्रिरात्रमक्षारालवणाशिनौ अधःशायिनौ निवृत्तमैथुनौ भवतः । प्राङ्मुखौ वधूवरौ स्थितौ भवतः ॥ इति विवाहकर्मपद्धतिः समाप्ता १३

अथ चतुर्थीकर्म ॥ १४ ॥

ततश्चतुर्थ्यामपररात्रे चतुर्थीकर्म । तच्च गृहाभ्यन्तर एव कार्यम् । तत उद्वर्तनादि कृत्वा युगकाष्ठमुपविश्य

अनन्तर देशाचारानुसार सन, शंख, शमी, सुवर्णप्रेरित सिंदूरका लगाना वर करे । फिर अन्यान्य प्रतिष्ठित स्त्री पुरुषभी सिन्दूरको लगावें पश्चात् वर ग्राम्यवचन उच्चारण करे और ग्राम्यकी स्त्रियांभी ऐसाही करें । फिर वेदीके निकटसे मण्डपमें आनकर दूर्वाक्षतादि (रूप आशीर्वाद) ग्रहण करे तत्पश्चात् तीन राततक वर वधू खारी लवण इत्यादिको नहीं खाय पृथ्वीपर शयन करें, परस्पर मैथुन (संभोग) न करें और वर वधू दोनोंजनेही पूर्वको मुख करके अवस्थित रहें ॥

इति श्रीकान्यकुब्जवंशावतंस पं० कन्हैयालालमिश्रकृता विवाहकर्मपद्धतिभाषाटीका समाप्ता ॥ १३ ॥

अब चतुर्थी (चौथी) कर्मका विषय लिखा जाता है— विवाहकी चौथी रातके पिछले प्रहरमें घरके भीतर ही चतुर्थीकर्म करना चाहिये । उस दिन रातके पिछले समयमें उठकर दो पटले बिछावे और उनपर बैठकर वर वधू उबटनके सहित

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

स्नात्वा शुद्धवस्त्रं परिधाय गृहं प्रविश्य वधूवरौ प्राङ्मुखौ भवतः । गणपत्यादिदेवतापूजनं ततः कुशकंडिकारंभः । तत्र क्रमः—जामातृहस्तपरिमितां वेदिं कुशैः परिसमुह्य तान् कुशानैशान्यां परित्यज्य गोमयोदकेनोपलिप्य स्फ्येन स्रुवेण वा प्रागग्रप्रादेशमात्रत्रिरुत्तरोत्तरक्रमेणोल्लिख्य उल्लेखनक्रमेणानामिकांगुष्ठाभ्यां मृदमुद्धृत्य जलेनाभ्युक्ष्य तत्र तूष्णीं कांस्यपात्रेणाग्निमानीय स्वाभिमुखं निदध्यात् । ततः पुष्पचंदनतांबूलवस्त्राण्यादाय ॐ अस्यां रात्रौ कर्त्तव्यचतुर्थीहोमकर्मणि कृताकृतावे-

---

स्नान करें फिर शुद्ध वस्त्र धारणपूर्वक घरमें प्रविष्ट हो पूर्वकी ओरको मुख करके बैठे । तदुपरान्त गणेशादि देवताओंकी पूजा करके कुशकण्डिकाका आरंभ करना चाहिये । उसका क्रम यथा—वरके एक हाथ प्रमाण वेदी बनाकर उसको तीन कुशाओंसे शुद्ध कर उन कुशाओंको ईशानकोनमें फेंक देवे । फिर गोबरसे वेदीको लीपकर स्फ्यनामक यज्ञपात्र वा स्रुवेके द्वारा पूर्वको अग्रभागवाली प्रादेशमात्र दक्षिणसे उत्तर वृद्धि अर्थात् उत्तर उत्तरको तीन रेखा खैंचे । पश्चात् रेखा खैंचनेके क्रमानुसार दाहिने हाथकी अनामिका और अंगुष्ठ इन दो अंगुलियोंसे मिट्टी उठाकर ईशानकोनमें फेंक देवे । फिर उन रेखाओंको जलसे सेचनपूर्वक काँसीके पात्रमें अग्निको लाकर चुपचाप अपने सामने वेदीमें स्थापन करे । अनन्तर पुष्प चन्दन ताम्बूल वस्त्र ग्रहणपूर्वक आगे लिखे 'ॐ अस्यां रात्रौ कर्तव्यचतुर्थी-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

क्षणरूपब्रह्मकर्म कर्तुं होतृकर्म्म कर्तुममुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणमेभिः पुष्पचंदनादिभिर्ब्रह्मत्वेन होतृत्वेन च त्वामहं वृणे इति ब्रह्माणं वृणुयात् । वृतोऽस्मि इति प्रतिवचनम् । यथाविहितं कर्म्म कुर्विति वरेणोक्ते ॐ करवाणीति ब्राह्मणो वदेत् । ततोऽग्नेर्दक्षिणतः शुद्धमासनं दत्त्वा तदुपरि प्रागग्रान् कुशानास्तीर्य ब्राह्मणमग्निप्रदक्षिणक्रमेणानीय ॐ अत्र त्वं मे ब्रह्मा भवेत्यभिधाय ॐ भवानीति ब्राह्मणेनोक्ते कल्पितासने उदङ्मुखं ब्राह्मणमुपवेशयेत् । ततः पृथूदकपात्रमग्नेरुत्तरतः प्रतिष्ठाप्य प्रणीतापात्रं पुरतः कृत्वा वारिणा परिपूय

होमकर्मणि कृताकृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्म कर्तुं होतृकर्म कर्तुममुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणमेभिः पुष्पचन्दनादिभिर्ब्रह्मत्वेन होतृत्वेन च त्वामहं वृणे ' इस वाक्यसे ब्रह्माका वरण करना चाहिये तब ब्रह्मा ' ॐ वृतोऽस्मि ' ऐसा कहे । अनन्तर ' यथाविहितं कर्म कुरु ' ऐसा वरके कहनेपर ब्राह्मण ' ॐ करवाणि ' कहे । फिर अग्निके दक्षिणकी ओर शुद्ध आसन प्रदानपूर्वक उसके ऊपर पूर्वको अग्रभाग करके कुशाओंको बिछावे और ब्रह्माको अग्निकी प्रदक्षिणाके क्रमसे निकट बुलाय ' अत्र त्वं मे ब्रह्मा भव ' ऐसा कहे, तब ' ॐ भवानि ' ऐसा ब्रह्माके कहनेपर उस बिछाये हुए आसनपर उत्तरको मुख करके ब्रह्माको बैठाल देवे तत्पश्चात् एक बडे पात्रमें जल भरकर अग्निके उत्तरकी ओर रख देवे । फिर प्रणीतापात्रको आगे रखकर उसको जलसे परिपूर्ण कर

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कुशैराच्छाद्य ब्रह्मणो मुखमवलोक्याग्नेरुत्तरतः कुशोपरि निदध्यात् । ततः परिस्तरणम्—बर्हिषश्चतुर्थभागमादाय आग्नेयादीशानान्तं ब्रह्मणोऽग्निपर्यंतं नैर्ऋत्याद्वायव्यान्तं अग्नितः प्रणीतापर्यंतं ततोऽग्नेरुत्तरतः पश्चिमदिशि पवित्रच्छेदनार्थं कुशत्रयं पवित्रकरणार्थं साग्रमनंतर्गर्भं कुशपत्रद्वयं प्रोक्षणीपात्रं आज्यस्थाली संमार्जनार्थं कुशत्रयं उपयमनार्थं वेणीरूपकुशत्रयं समिधस्तिस्रः स्रुवः आज्यं षट्पंचाशदुत्तरवरमुष्टिशतद्वयावच्छिन्नामतंडुलपूर्णपात्रं एतानि पवित्रच्छेदनकुशानां पूर्वपूर्वदिशि क्रमेणासादनीयानि । ततः पवित्रच्छेदनकुशैः पवित्रे छित्वा प्रादेश-

---

तथा कुशाओंसे ब्रह्माका मुख देख अग्निके उत्तरकी ओर कुशाओंपर रख देवे । इसके पीछे परिस्तरण करना चाहिये । अर्थात् एक मुट्ठी कुश लेकर उसके चार भाग करे । पहला भाग अग्निकोनसे ईशानकोनतक, दूसरा भाग ब्रह्माके आसनसे अग्नितक, तीसरा भाग नैर्ऋतकोनसे वायुकोनतक और चौथा भाग अग्नि (वेदी) से प्रणीतापात्रतक बिछा देना चाहिये । फिर अग्निसे उत्तरकी तरफ पश्चिम दिशामें पवित्र छेदनके लिये तीन कुशा रक्खे तथा पवित्र बनानेके लिये अग्रभागसहित और जिसके भीतर अन्य कुशपत्र न हों ऐसे दो कुशपत्र रक्खे । फिर प्रोक्षणीपात्र, आज्यस्थाली, तीन संमार्जनकुशा, वेणीरूप तीन उपयमन कुशा, तीन समिधा, स्रुवा, घृत दो सौ छप्पन मुट्ठी चावलोंसे भरा हुआ पूर्णपात्र इन सब चीजोंको पवित्र छेदनकी कुशासे आगे पूर्वपूर्वकी ओर रखता जावे । फिर

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मितपवित्रकरणं ततः सपवित्रकरेण प्रणीतोदकं त्रिः प्रोक्षणीपात्रे निधाय अनामिकाङ्गुष्ठाभ्यामुत्तराग्रे पवित्रे धृत्वा त्रिरुत्पवनं ततः प्रोक्षणीपात्रस्य सव्यहस्तेकरणं पवित्रे गृहीत्वा त्रिरुद्दिंगनं प्रणीतोदकेन प्रोक्षणीप्रोक्षणं ततः प्रोक्षणीजलेन यथासादितवस्तुसेचनम्। ततोऽग्नि-प्रणीतयोर्मध्ये प्रणीतापात्रं निधाय आज्यस्थाल्यामाज्य-निर्वापः। ततोऽधिश्रयणं ततो ज्वलत्तृणादिना हविर्वेष्ट-यित्वा प्रदक्षिणक्रमेण पर्यग्निकरणं ततः स्रुवं प्रतप्य

पवित्र छेदनकी कुशाओंसे पवित्रोंको छेदन कर प्रादेश प्रमाण (बिलस्त भरकी) पवित्र बनावे। तत्पश्चात् पवित्रोंके सहित प्रणीताका जल हाथमें लेकर तीन बार प्रोक्षणीपात्रमें डाले फिर अनामिका और अंगुष्ठ इन दो अंगुलियोंसे पवित्रोंको ग्रहण कर प्रोक्षणीके जलको तीन वार उछाले। अनन्तर प्रोक्षणी-पात्रको बायें हाथमें रख दाहिने हाथसे पवित्रोंको ग्रहण कर प्रोक्षणीका जल तीन वार ऊपरको सेचन करे। फिर प्रणीताके जलसे प्रोक्षणीको सेचन करना चाहिये। पश्चात् प्रोक्षणीके जलसे पूर्वस्थापन करी हुई वस्तुओंको सेचन करे। पीछे प्रोक्षणीपात्रको अग्नि और प्रणीताके बीचमें रख देना चाहिये। फिर आज्यस्थालीमें घृत डालकर उसको वेदीकी अग्निपर रख देवे पश्चात् एक कुश बालकर उसे घृतके चारों ओर घुमाता हुआ अग्निमें डाल देवे। इसके उपरान्त स्रुवेको अग्निमें तपावे

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

संमार्जनकुशानामग्रैरन्तरतो मूलैर्बाह्यतः स्रुवसंमार्जनं प्रणीतोदकेनाभ्युक्ष्य पुनः प्रतप्य स्रुवं दक्षिणतो निदध्यात् । ततः आज्यस्याग्नेरवतारणम् । तत आज्ये प्रोक्षणीवदुत्पवनम् अवेक्ष्य सत्यपद्रव्ये तन्निरसनं पुनः पूर्ववत् प्रोक्षण्युत्पवनम् उपयमनकुशान् वामहस्तेनादाय उत्तिष्ठन् प्रजापतिं मनसा ध्यात्वा तूष्णीमग्नौ घृताक्ताः समिधस्तिस्रः क्षिपेत् । ततः उपविश्य प्रोक्षणीजलेनाग्निं प्रदक्षिणं पर्युक्ष्य पवित्रं प्रोक्षणीपात्रे धृत्वा ब्रह्मणाऽन्वारब्धः पातितदक्षिणजानुर्जुहुयात् । तत्राघारादारभ्या-

---

और संमार्जन कुशाओंके अग्रभागसे भीतर और मूलभागसे बाहर शुद्ध करे । फिर उसके प्रणीताके जलसे सेचनपूर्वक दूसरी वार तपाकर दक्षिणकी ओरमें रख देवे । फिर घृतको अग्निपरसे उतार लेवे और प्रोक्षणीपात्रकी नाईं पवित्रोंसे उस घृतको उछालकर देखे यदि उसमें मक्खी इत्यादि कोई अपवित्र वस्तु पडी हो तो उसको निकालकर फेंक देवे फिर पहलेकी तरह प्रोक्षणीके जलको उछाले पश्चात् उपयमन कुशाओंको बाँये हाथमें ग्रहणपूर्वक खडा होकर पूर्व स्थापित तीन समिधाओंको घृतसे भिजोवे और मनमें प्रजापतिका ध्यान करता हुआ स्वाहा शब्दके साथ चुपचाप अग्निमें होम कर देवे । फिर आसनपर बैठकर पवित्रोंसहित प्रोक्षणीका जल हाथमें ले अग्निके चारों तरफ सेचन करे पीछे उन पवित्रोंको प्रणीतामें रख देवे तदुपरान्त जानुको नवाय ब्रह्मासे मिलकर होम करना चाहिये ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हुतिचतुष्टये तत्तदाहुत्यनन्तरं स्रुवावस्थिताज्यं प्रोक्षण्यां क्षिपेत्। ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये०। इति मनसा। ॐ इन्द्राय स्वाहा इदमिन्द्राय०। इत्याघारौ। ॐ अग्नये स्वाहा इदमग्नये०। ॐ सोमाय स्वाहा इदं सोमाय०। इत्याज्यभागौ। तत आज्याहुतिपंचतये स्थालीपाकाहुतौ च प्रत्याहुत्यनन्तरं स्रुवावस्थितहुत-शेषघृतस्य प्रोक्षणीपात्रे प्रक्षेपः। ततो ब्रह्मणाऽन्वारम्भं विना ॐ अग्ने प्रायश्चित्ते त्वं देवानां प्रायश्चित्तिरसि ब्राह्मणस्त्वा नाथकाम उपधावामि याऽस्यै पतिघ्नी तनू-

---

पहली चार आहुतियोंके अनन्तर स्रुवेमें शेष रहे घृतको प्रोक्षणी पात्रमें डालता जाय। ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये०। इति मनसा। ॐ इन्द्राय स्वाहा इदमिन्द्राय०। इत्याघारौ। ॐ अग्नये स्वाहा इदमग्नये०। ॐ सोमाय स्वाहा इदं सोमाय०। इत्याज्यभागौ। फिर घृतकी पाँच आहुति आगे लिखे मन्त्रोंसे देवे और इन आहुतियोंके अनन्तर स्रुवेमें शेष रहा हुआ घृत प्रोक्षणीपात्रमें डालता जावे। पाँच आहुतियोंके पीछे जो स्थालीपाककी आहुतियाँ दी जायगी उनमें भी शेष रहे घृतको प्रोक्षणीपात्रमें डालना चाहिये। यह हवन ब्रह्मासे विनाही मिले किया जाता है। मन्त्र यथा-ॐ अग्ने प्रायश्चित्ते त्वं देवानां प्रायश्चित्तिरसि ब्राह्मणस्त्वा नाथकाम उपधावामि याऽस्यै

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

स्तामस्यै नाशय स्वाहा इदमग्नये० । ॐ वायो प्राय-
श्चित्ते त्वं देवानां प्रायश्चित्तिरसि ब्राह्मणस्त्वा नाथकाम
उपधावामि याऽस्यै प्रजाघ्नी तनूस्तामस्यै नाशय स्वाहा
इदं वायवे० । ॐ सूर्य प्रायश्चित्ते त्वं देवानां प्रायश्चित्ति-
रसि ब्राह्मणस्त्वा नाथकाम उपधावामि याऽस्यै पशुघ्नी
तनूस्तामस्यै नाशय स्वाहा इदं सूर्याय न० । ॐ चन्द्र
प्रायश्चित्ते त्वं देवानां प्रायश्चित्तिरसि ब्राह्मणस्त्वा नाथ-
काम उपधावामि याऽस्यै गृहघ्नी तनूस्तामस्यै नाशय
स्वाहा इदं चन्द्राय० । ॐ गंधर्व प्रायश्चित्ते त्वं देवानां
प्रायश्चित्तिरसि ब्राह्मणस्त्वा नाथकाम उपधावामि याऽस्यै
यशोघ्नी तनूस्तामस्यै नाशय स्वाहा इदं गन्धर्वाय० ।
चरुमभिघार्य ततः स्थालीपाकेन जुहुयात् । ॐ प्रजा-

पतिघ्नी तनूस्तामस्यै नाशय स्वाहा । इदमग्नये न मम ।
ॐ वायो प्रायश्चित्ते त्वं देवानां प्रायश्चित्तिरसि ब्राह्मणस्त्वा नाथ-
काम उपधावामि याऽस्यै प्रजाघ्नी तनूस्तामस्यै नाशय स्वाहा
इदं वायवे न मम । ॐ सूर्य प्रायश्चित्ते त्वं देवानां प्रायश्चित्तिरसि
ब्राह्मणस्त्वा नाथकाम उपधावामि यास्यै पशुघ्नी तनूस्तामस्यै
नाशय स्वाहा इदं सूर्याय न मम । ॐ चन्द्र प्रायश्चित्ते त्वं देवानां
प्रायश्चित्तिरसि ब्राह्मणस्त्वा नाथकाम उपधावामि याऽस्यै गृहघ्नी
तनूस्तामस्यै नाशय स्वाहा इदं चन्द्राय न मम । ॐ गन्धर्व
प्रायश्चित्ते त्वं देवानां प्रायश्चित्तिरसि ब्राह्मणस्त्वा नाथकाम
उपधावामि याऽस्यै यशोघ्नी तनूस्तामस्यै नाशय स्वाहा इदं
गन्धर्वाय न मम । फिर चरु (हलुए) में घृत डालकर उस

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पतये स्वाहा इदं प्रजापतये० । इति मनसा । अग्र्या-
हुतिनवके हुतशेषघृतस्य प्रोक्षणीपात्रे प्रक्षेपः । अयं च
होमो ब्रह्मणाऽन्वारब्धकर्तृकः ॥ ततः आज्यस्थालीपा-
काभ्यां स्विष्टकृद्धोमः । ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा
इदमग्नये स्विष्टकृते० । ततः आज्येन ॐ भूः स्वाहा इद-
मग्नये० । ॐ भुवः स्वाहा इदं वायवे० । ॐ स्वः स्वाहा इदं
सूर्याय० । एता महाव्याहृतयः । ॐ त्वन्नो अग्ने वरुणस्य
विद्वान् देवस्य हेडो अव यासिसीष्ठाः । यजिष्ठो
वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषाꣳसि प्रमुमुग्ध्यस्म-
त्स्वाहा इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम । ॐ स त्वन्नो अग्ने-
ऽवमो भवोती नेदिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टौ । अव यक्ष्व

स्थालीपाकसे होम करना चाहिये यह होम ब्रह्मासे मिलकर
किया जाता है । 'ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये० । ' इति
मनसा । फिर घृत और हलुएको मिलाकर स्विष्टकृत् होम
करना चाहिये । ' ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा इदमग्नये स्विष्ट-
कृते न मम । ' तत्पश्चात् घृतकी आहुति देवे और स्रुवेके शेष
रहे घृतको प्रोक्षणीपात्रमें गिरावे । ॐ भूः स्वाहा इदमग्नये
न मम । ॐ भुवः स्वाहा इदं वायवे न मम । ॐ स्वः स्वाहा
इदं सूर्याय न मम । एता महाव्याहृतयः । ॐ त्वन्नो अग्ने
वरुणस्य विद्वान्देवस्य हेडो अव यासिसीष्ठाः । यजिष्ठो वह्नि-
तमः शोशुचानो विश्वाद्वेषाꣳसि प्रमुमुग्ध्यस्मत् स्वाहा इदमग्नी-
वरुणाभ्यां न मम । ॐ स त्वन्नो अग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठो
अस्या उषसो व्युष्टौ । अव यक्ष्व नो वरुणꣳ रराणो व्वीहि

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नो वरुणꣳ रराणो व्वीहि मृडीकꣳ सुहवो न एधि स्वाहा इदमग्नीवरुणाभ्यां० । ॐ अयाश्चाग्नेस्यनभिशस्तिपाश्च सत्वमित्वमया असि । अयानो यज्ञं वहास्ययानो धेहि भेषजꣳ स्वाहा इदमग्नये० । ॐ ये ते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता महांतः । तेभिर्नो अद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च० । ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यमꣳ श्रथाय । अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा इदं वरुणाय० । एताः प्रायश्चित्तसंज्ञकाः । ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये० । इति मनसा । इदं प्राजापत्यम् । ततः संस्रवप्राशनम् । ततः

मृडीकꣳ सुहवो न एधि स्वाहा इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम । ॐ अयाश्चाग्नेस्यनभिशस्तिपाश्च सत्वमित्वमया असि । अयानो यज्ञं वहास्ययानो धेहि भेषजꣳ स्वाहा इदमग्नये न मम । ॐ ये ते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता महान्तः । तेभिर्नो अद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुंचन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च न मम । ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यमꣳ श्रथाय । अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा इदं वरुणाय न मम । एताः प्रायश्चित्तसंज्ञकाः । ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये न मम इति मनसा । इदं प्राजापत्यम् । इसके

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

आचम्य ॐ अस्यां रात्रौ कृतैतच्चतुर्थीहोमकर्मणि कृताकृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्मप्रतिष्ठार्थमिदं पूर्णपात्रं प्रजापतिदैवतममुकगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय दक्षिणां तुभ्यमहं संप्रददे इति दक्षिणां दद्यात्। स्वस्तीति प्रतिवचनम्। ततो ब्रह्मग्रन्थिविमोकः। ततः सुमित्रिया न आप ओषधयः सन्तु इति पवित्राभ्यां शिरः संमृज्य ॐ दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु योऽस्मान् द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः। इत्यैशान्यां दिशि प्रणीतां न्युञ्जीकुर्यात्। ततः स्तरणक्रमेण बर्हिरुत्थाप्य घृताक्तं हस्तेनैव जुहुयात्—ॐ देवा

अनन्तर प्रोक्षणीपात्रके जलका प्राशन करनेपर आचमन करे। फिर आगे लिखे "ॐ अस्यां रात्रौ कृतैतच्चतुर्थीहोमकर्मणि कृताकृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्मप्रतिष्ठार्थमिदं पूर्णपात्रं प्रजापतिदैवतममुकगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय दक्षिणां तुभ्यमहं सम्प्रददे" इस संकल्प द्वारा पूर्णपात्रका दान करके ब्रह्माको देवे और उसको ब्रह्मा 'ॐ स्वस्ति' कहकर ग्रहण कर लेवे। फिर ब्रह्मगाँठको खोल देवे। तत्पश्चात् आगे लिखे 'ॐ सुमित्रिया न आप ओषधयः सन्तु' इस मन्त्रसे पवित्रोंके द्वारा प्रणीतापात्रका जल लेकर अपने शिरमें मार्जन करे और फिर आगे लिखे 'ॐ दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु योऽस्मान्द्वेष्टि यञ्च वयं द्विष्मः' इस मन्त्रको उच्चारण करके प्रणीतापात्रको ईशानकोनमें उलट देना चाहिये। फिर जिस क्रमसे बिछाये थे उसी क्रमसे कुशाओंको उठाकर और उनको घीमें भिगोकर हाथसेही

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

गातुविदो गातुं वित्वा गातुमित मनसस्पत इमं देव यज्ञꣳ स्वाहा व्वाते धाः स्वाहा । तत आम्रपल्लवेन जलमानीय मूर्ध्नि वरो वधूमभिषिंचति—ॐ या ते पतिघ्नी प्रजाघ्नी पशुघ्नी गृहघ्नी यशोघ्नी निंदिता तनूर्जारघ्नी तत एनां करोमि सा जीर्य त्वं मया सह श्रीअमुकदेवी इति मंत्रेण। ततो वधूं स्थालीपाकं प्राशयति वरः—ॐ प्राणैस्ते प्राणान् संदधामि । अस्थिभिस्तेऽस्थीनि संदधामि । मांसैस्ते मांसानि संदधामि। ॐ त्वचा ते त्वचं संदधामि। इति मंत्रचतुष्टयेन प्रतिमंत्रांतेऽन्नं प्राशयेत् । ततो वधू-

---

आगे लिखे ' ॐ देवा गातुविदो गातुं वित्वा गातुमित मनसस्पत इमं देव यज्ञꣳ स्वाहा वाते धाः स्वाहा ' इस मन्त्रको उच्चारण करके अग्निमें होम कर देवे । अनन्तर आमके पत्ते द्वारा जल लेकर वर आगे लिखे "ॐ या ते पतिघ्नी प्रजाघ्नी पशुघ्नी गृहघ्नी यशोघ्नी निन्दिता तनूर्जारघ्नी तत एनां करोमि सा जीर्य त्वं मया सह श्रीअमुकदेवी[1] " इस मन्त्रसे वधूके शिरमें अभिषेक करे । फिर वर वधूको आगे लिखे ' ॐ प्राणैस्ते प्राणान् संदधामि । ॐ अस्थिभिस्तेऽस्थीनि संदधामि । ॐ मांसैस्ते मांसानि संदधामि । ॐ त्वचा ते त्वचꣳ संदधामि । ' इन मन्त्रोंसे स्थालीपाक (हलुए) का प्राशन करावे । अनन्तर वर वधूके हृदयको स्पर्श कर आगे लिखे

---

१ श्रीअमुकदेवीके स्थानमें स्त्रीका नाम उच्चारण करना चाहिये ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हृदयं स्पृष्ट्वा वरः पठेत्—ॐ यत्ते सुसीमे हृदयं दिवि चन्द्रमसि श्रितम्। वेदाहं तन्मां तद्विद्यात् पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतꣳ शृणुयाम शरदः शतमिति। अथ कङ्कणमोक्षणादीनि युतग्रन्थिविमोकादीनि आचारप्राप्तानि। कङ्कणं मोचयाम्यद्य रक्षांसि न कदाचन। मयि रक्षां स्थिरां दत्त्वा स्वस्थानं गच्छ कङ्कण॥ तत उत्थाय वधूदक्षिणहस्तस्पृष्टस्रुवेण घृतफलपुष्पपूर्णेन पूर्णाहुतिं कुर्यात्। ॐ मूर्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत आजातमग्निम्—कविꣳ सम्राजमतिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयन्त देवाः स्वाहा इति मन्त्रेण पूर्णाहुतिः। ततः

'ॐ यत्ते सुसीमे हृदयं दिवि चन्द्रमसि श्रितम्। वेदाहं तन्मां तद्विद्यात् पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतꣳ शृणुयाम शरदः शतम्' इस मन्त्रको उच्चारण करे इसके उपरान्त आगे लिखे 'कङ्कणं मोचयाम्यद्य रक्षांसि न कदाचन। मयि रक्षां स्थिरां दत्त्वा स्वस्थानं गच्छ कङ्कण॥' इस मन्त्रसे कंकणमोचन (कंगना खोलना) और ग्रंथिमोचन (पटकेकी गाँठ खोलना) पश्चात् वर खडा होकर स्रुवेको घृत फल पुष्पसे परिपूर्ण कर और उस स्रुवेमें वधूका हाथ लगवाय आगे लिखे 'ॐ मूर्द्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत आजातमग्निम्। कविꣳ सम्राजमतिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयन्त देवाः स्वाहा' इस मन्त्रसे वर पूर्णाहुति देवे। फिर

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

स्रुवेण भस्मानीय दक्षिणानामिकाग्रगृहीतभस्मना ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेरिति ललाटे । ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषमिति ग्रीवायाम् । ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषम् इति दक्षिणबाहुमूले । ॐ तन्नो अस्तु त्र्यायुषम् इति हृदये । एवं वध्वा अपि त्र्यायुषं कुर्यात् । तत्र तन्नो इत्यस्य स्थाने तत्ते इति विशेषः । तत आचार्याय दक्षिणां दद्यात्, होत्रे च दक्षिणां दद्यात्, भूयसीं दद्यात् ॥ इति चतुर्थीकर्म समाप्तम् ॥ १४ ॥

इति श्रीमहामत्तकमहासामंताधिपतिश्रीरामदत्त-
विरचिता दशकर्मपद्धतिः समाप्ता ॥

० प्रेम दत्त शास्त्री
गोराबाद २०२३६४
ाद्दशहर (उ०प्र०)

स्रुवेसे होमकी भस्म लेकर अनामिका अंगुली द्वारा त्र्यायुष करे—'ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः' यह कहकर माथेमें, 'ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषं' यह मन्त्र उच्चारण करके गलेमें 'ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषम्' कहकर दक्षिण बाहुमूलमें और 'तन्नो अस्तु त्र्यायुषं' इस मन्त्रको उच्चारण करके वह भस्म हृदयमें लगानी चाहिये । फिर इस प्रकार वधूकेभी त्र्यायुष करे किन्तु वधूके त्र्यायुष करते समय 'तन्नो अस्तु' के स्थानमें 'तत्ते अस्तु' उच्चारण करे । इसके उपरान्त आचार्यको दक्षिणा देवे । होताको दक्षिणा देवे और भूयसी दक्षिणा (भूरि दक्षिणा) देनी चाहिये ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

[illegible] शास्त्री
जहांगीराबाद २०२३९४
बुलन्दशहर (उ०प्र०)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection